नित नवल

शिव कुमार प्रसाद

साहित्यिक समीक्षा-संग्रह

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

नित नवल

शिव कुमार प्रसाद

साहित्यिक समीक्षा-संग्रह

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | २०२७

प्रकाशन-विवरण

नित नवल शिव कुमार प्रसाद

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

प्रकाशकीय परिचय : www.videha.co.in

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२७

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक पुनर्मुद्रण वा व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

अनुक्रम

समीक्षा-निबन्धक क्रम

मनक हाट : आत्मानुभूति, लोकचेतना आ समकालीन मैथिली कविता ... 4

सोंहाँत-अनसोंहाँत : जीवनक काव्य-संसार 23

राग-विराग : लोकस्मृति, भाषिक अस्मिता आ सामाजिक नैतिकता ... 41

पघलैत हिमखंड : हिन्दी-मैथिली काव्यानुवाद आ स्त्री-चेतना ... 57

क्षितिज : जनकाव्य, द्विभाषिक उपन्यास आ समष्टिक आदर्श ... 81

अध्याय 1

मनक हाट : आत्मानुभूति, लोकचेतना आ समकालीन मैथिली कविता ... 4

डॉ. शिव कुमार प्रसादक कविता-संग्रहक विस्तृत साहित्यिक आ आलोचनात्मक अध्ययन

सारांश

डॉ. शिव कुमार प्रसादक 'मनक हाट' समकालीन मैथिली काव्यक एहन संसार रचैत अछि जतए व्यक्तिगत संवेदना आ लोकजीवन एक-दोसरामे प्रवेश करैत रहैत अछि। 'मन'क सन्नाटा, प्रेमक आत्मीयता, परिवारक टूटन, गाम-डीहक स्मृति, श्रमजीवी जीवनक असुरक्षा, राजनीतिक विडम्बना आ महामारीक भय अलग-अलग विषय होइतो एकहि मानवीय चेतनाक विविध अभिव्यक्ति बनैत अछि। शीर्षक-कविताक अन्हार–इजोत, 'मनुख'क लेखकीय आत्मस्वीकृति, 'अनुत्तरित प्रश्न'क नैतिक जिज्ञासा, 'तोड़ि ले सिनेह'क पारिवारिक द्वन्द्व, 'मरतै गरीबहे'क वर्गीय करुणा आ 'नाक'क व्यंग्यक समीप-पाठसँ स्पष्ट होइत अछि जे कविक सबसँ महत्त्वपूर्ण उपलब्धि लोकव्यवहारक भाषामे जीवनक सार्वजनिक प्रश्न उठाएब अछि। कविताक सम्बोधन, प्रश्नोक्ति, आवर्तन, लघु पंक्ति, चित्रात्मकता आ प्रत्यक्ष कथनक तुलनात्मक परीक्षणसँ एकर कलात्मक असमानता सेहो सामने अबैत अछि। अनेक रचनामे अर्थक खुलल सम्भावना, जीवित बिम्ब आ लय पाठककेँ सक्रिय बनबैत अछि; दोसर कतिपय रचनामे प्रचलित उपमान आ शीघ्र नैतिक निष्कर्ष काव्य-घनत्व कम करैत अछि। एहि प्रकार 'मनक हाट'क मूल्यांकन केवल समाजधर्मी भाव-सामग्रीक आधारपर नहि, भाषा आ रूपकक सर्जनात्मक क्षमताक आधारपर सेहो आवश्यक अछि। ... 4

बीजशब्द : समकालीन मैथिली कविता; मनक हाट; मनोभूमि; लोकजीवन; सामाजिक विषमता; कविता-भाषा; कोरोना काल; काव्यशिल्प; पाठालोचना। ... 4

१. भूमिका : मनक निजत्व आ लोकक साझा संसार

'मनक हाट' शीर्षक स्वयं एकटा आलोचनात्मक संकेत प्रस्तुत करैत अछि। 'मन' व्यक्तिक भीतरक वेदना, आशा, स्मृति, बिम्ब आ आकांक्षाक स्रोत अछि; 'हाट' भिन्न-भिन्न लोक, वस्तु, आवाज, मोल-भाव आ सामाजिक आदान-प्रदानक स्थल। एहि दू अर्थ-क्षेत्रक संयोगसँ कविता-संग्रहक वैचारिक दिशा बनैत अछि : निजत्व लोकसँ कटि नहि रहैत, आ लोकजीवन मनक भीतर निरन्तर घुसि अबैत अछि। एकरा केवल 'भावुक कविताक पोथी' कहब तकर सार्वजनिक संवेदनशीलताकेँ घटाएब थिक। 'हाट'क बिम्ब एक बेर शीर्षकमे आबि समाप्त नहि होइत; संग्रहक अनेक कविता सुख-दुःख, प्रेम-विरह, परिवार, श्रम, महामारी आ समाजक अलग-अलग स्वरक सहअस्तित्व बनबैत अछि। ... 4

शीर्षकमे 'मन' आ 'हाट'क संयोग विशेष अर्थवान अछि। 'मन' एकान्त अनुभव, स्मृति, अभिलाषा आ संशयक नाम अछि, जखन 'हाट' सार्वजनिक मिलन, आवाजाही, विनिमय आ बहुस्वरक स्थल अछि। कवि ई दुनूकेँ एकत्र कऽ आत्मानुभूतिक सीमाकेँ पसारैत छथि। हाटमे वस्तु मात्र नहि, लोकक कष्ट, आशा, सम्बन्ध आ व्यवहार सेहो आदान-प्रदान होइत अछि; ठीक तहिना संग्रहक मन व्यक्तिगत दुःखसँ बढ़ि सामूहिक जीवनक अनुभूति ग्रहण करैत अछि। शीर्षक-कवितामे अन्हार आ इजोतक पुनरागमन एहि द्वन्द्वकेँ रूप प्रदान करैत अछि। अन्हारक उपस्थिति इजोतक महत्त्व कम नहि करैत; उलटे एकर आवश्यकता आ नैतिक अर्थकेँ प्रश्नक विषय बनबैत अछि।

एहि काव्य-संसारकेँ बुझबाक लेल केवल कथ्यक परिगणना पर्याप्त नहि। देखबाक विषय ई अछि जे कवि सामाजिक अनुभवकेँ कोन बिम्बमे बाँधैत छथि, कथन कतए

प्रश्नमे बदलैत अछि, सम्बोधनसँ कोन सम्बन्ध बनैत अछि आ दोहराव कतए लय रचैत अछि अथवा प्रभाव क्षीण करैत अछि। प्रेम आ प्रतिरोध एहि संग्रहमे अलग-अलग कक्ष नहि बनबैत; सिनेह टूटैत अछि तँ सामाजिक व्यवस्था उपस्थित होइत अछि, भूख उठैत अछि तँ पारिवारिक जीवनक असुरक्षा देखाइत अछि, आ प्रकृति-चित्र निजी मनोदशाकेँ बदलैत अछि।

२. कविताक रचनात्मक पृष्ठभूमि आ आलोचनात्मक दृष्टि

कविक 'पोथीक मादे'मे रचनाक मूल्यांकनक अधिकार पाठक आ समीक्षकक हाथमे देबाक भाव भेटैत अछि। ई विनम्र स्वीकृति साहित्यकेँ बन्द निष्कर्ष नहि, खुलल संवाद मानबाक दृष्टिक परिचायक अछि। कविता-संग्रहक भीतर अलग-अलग समयक अनुभव एकत्रित अछि; तें एहि पोथीक रचनात्मक एकताकेँ कालक्रमक एकरसता नहि, विषय आ संवेदनाक अन्तर्सम्बन्धसँ परखल जाएबाक चाही। प्रेमक लगाव, मानवीय भरोसा, जीवनक व्यथा आ सामाजिक असन्तोष एकहि काव्य-वाणीमे भेटैत अछि। संग्रहक प्रथम प्रकाशनक प्रसंग ओहि रचनात्मक बहुलताकेँ समेटैत अछि, मुदा ओकर कलात्मक महत्त्व पाठकक सामने उपस्थित कविता सभसँ तय होइत अछि।

'पोथीक मादे'क स्वर कवि आ पाठकक बीच एकटा सहृदय सम्बन्ध प्रस्तावित करैत अछि। रचनाकार स्वयं ई नहि मानैत छथि जे कविताक विषय वा भाव-सत्य ओकर सौन्दर्यक अन्तिम प्रमाण अछि। प्रारम्भिक कविता 'मनुख'मे 'लिखैत रहला'क निरन्तरता एहि सर्जनात्मक भावनाक विस्तार थिक। एतए लिखब जीवनसँ विमुख होएब नहि, वरन् दुःख, आनन्द आ साधारण दृश्यसभक पुनःअनुभव करब अछि। काव्य-वक्ता अपन अनुभवक साक्षी बनैत अछि, मुदा अपन अनुभवकेँ पाठकक साझा अनुभवमे रूपान्तरित करबाक आकांक्षा सेहो रखैत अछि।

संग्रहक अर्थ-रचना पर विचार करैत काल शब्द आ अनुभवक सम्बन्ध, बिम्बक बहुअर्थकता, सम्बोधनक नाटकीयता, आवर्तनक लयात्मक काम तथा सामाजिक सरोकारक काव्यात्मक रूपान्तरणकेँ एक साथ देखब उपयोगी अछि। समकालीन

मैथिली काव्यक भाषिक इतिहास एहि पठनकेँ व्यापक पृष्ठभूमि दैत अछि; तथापि मूल काव्य-स्थिति प्राथमिक रहैत अछि। सामाजिक न्यायपर व्यक्त कथन स्वतः सफल कविता नहि बनि जाइत, आ सरल प्रेम-कविता केवल सरल होएबाक कारण कमजोर नहि होइत। दुनूक मूल्यांकन शब्द, विराम, बिम्ब आ भाव-गतिक स्तरपर आवश्यक अछि।

संग्रहमे 'शीर्षक' नामसँ अनेक कविता भेटैत अछि; 'कोरोना काल' सेहो एकसँ अधिक रचनाक नाम अछि। पहिल स्थिति पाठकक सामने एकटा रोचक सम्पादकीय कठिनाइ आनैत अछि : अलग-अलग संवेदना एकहि सामान्य नामक भीतर आबि जाइत अछि। दोसर स्थिति एकहि ऐतिहासिक संकटकेँ अनेक अनुभव-केन्द्रसँ देखबाक अवसर दैत अछि। रचनाक नाम जँ विशिष्ट नहि हो तँ स्मृति आ सन्दर्भ-निर्धारणमे बाधा आबि सकैत अछि; मुदा एकहि विषयक पुनरावृत्ति जँ नब अनुभव रचैत हो, तँ ओ काव्यात्मक आवर्तनक रूप सेहो ले सकैत अछि। एहि भेदकेँ कविता स्वयं परखबाक चाही।

३. 'मनुख' आ काव्यक नैतिक स्वीकृति

पुस्तकक आरम्भिक कविता 'मनुख'मे काव्य-वक्ता अपन लिखैत रहबाक क्रियाक आत्मवृत्त प्रस्तुत करैत अछि। व्यक्तिगत व्यथाक वर्णनक संग फूल, सुगन्ध, गामक रेत-पानि-पाथर, स्वप्न, आशा आ टूटल मनक छवि उपस्थित अछि। एहि स्थानपर 'मनुख' जैविक व्यक्ति मात्र नहि, महसूस करैत, टूटैत, पुनः लिखैत आ सम्भावना खोजैत मनुष्य अछि। कविताक आरम्भमे लेखन आत्मानुभूतिक क्रिया थिक; अन्तमे अनुभव साझा जीवनक प्रश्न बनि जाइत अछि।

कवि शोककेँ मात्र सजावटी करुणामे नहि बदलैत; दुःखक भीतर आशाक सम्भावना देखैत अछि। एकरे सँग 'मनुख'क वाक्यविन्यास अनेक ठाम घोषणात्मक अछि—कवि स्वयं बतबैत अछि जे ओ लिखैत, देखैत, खोजैत रहल। एहि प्रत्यक्ष आत्मकथनमे पाठकीय अपनत्व अछि, मुदा कविता कतिपय क्षणमे अनुभवकेँ बिम्ब

बनबाक पहिनहि अर्थमे अनुवाद कऽ दैत अछि। अर्थात् वाक्यक भाव-सत्य स्पष्ट रहैत अछि, पर सौन्दर्यात्मक द्व्यर्थकता सीमित भऽ सकैत अछि। ई सीमा आगूक अनेक रचनामे सेहो देखल जा सकैत अछि।

मानवीय गरिमा एहि काव्य-दृष्टिक नैतिक केन्द्र अछि। 'जिनगीक साँस'मे अभिमान, प्रेम, शक्ति, भरोसा, आस्था आदि भावक सूची मनुष्यक जीवनक श्वास बनैत अछि। गीतिक लघु पंक्ति सभ अनुभवकेँ सिद्धान्तक भारी पदावलीसँ मुक्त करैत अछि। मुदा पर्यायवाची भाव-शब्दक सीधा अनुक्रम चित्रात्मकता कम करैत अछि। एहि प्रकारक कवितामे पाठक तत्काल अर्थ पकड़ैत अछि, किन्तु पुनर्पाठपर नवीन परत ओतेक तीव्रतासँ नहि खुलैत।

४. शीर्षक-कविता : अन्हार, इजोत आ मनक हाट 4

शीर्षक-कविता 'मनक हाट' एकटा आवर्तक प्रश्नपर टिकल अछि। राति आ अन्हारक स्थिति, भीतर समायल सबेरक सौरभ, कल्पना आ जिनगीक संग कवि बारम्बार उजासक पक्षधरता पुछैत अछि। प्रश्नक पुनरावृत्ति रचनाक गतिशील केन्द्र अछि। अन्हार मात्र बाह्य प्राकृतिक दशा नहि रहि अस्तित्वक निराशा, सामाजिक भय वा संवेदनाक अवरोधक सम्भावित संकेत बनैत अछि; आ इजोत नैतिक क्रिया, जुझारूपन तथा जीवनेच्छाक प्रतीक भऽ उठैत अछि। प्रतीकक बहुअर्थकता कविता अपन प्रश्नात्मक विन्याससँ स्वयं निर्माण करैत अछि। ... 4

एहि कविताक एक विशेषता 'अहाँ' सम्बोधन अछि। ई लयात्मक प्रश्न मात्र स्वगत उद्गार नहि : एकटा कल्पित प्रतिपक्ष उपस्थित कऽ संवाद रचैत अछि। 'अहाँ' आशंका करैत व्यक्ति सेहो भऽ सकैत अछि, लोकसमाज सेहो; कवि ओकर उत्तरमे सम्भावना आ उजासक आग्रह रखैत अछि। एहि संवादधर्मितासँ 'हाट'क अवधारणा आओर स्पष्ट होइत अछि—मन एकान्त कक्ष नहि, असहमतिकेँ सेहो ठाम दैत सार्वजनिक मंच अछि। प्रश्न-लय सामाजिक अवरोधक विरुद्ध छोट मुदा प्रभावी तर्क-रचना बनैत अछि।

‘शीर्षक’ नामसँ संग्रहीत दू अन्य लघुकवितामे संवेदना, प्रेम, धीरज, जीवन-सार्थकता आ आकाशक आकांक्षा प्रकट होइत अछि। शीर्षक-कविता एहि विचार-परिवारक भीतर विशेष काव्यात्मक घनत्व अर्जित करैत अछि, कारण ओ सूत्रवाक्यसँ आगाँ बढ़ि परिस्थिति, प्रश्न आ प्रतीकक टकराव रचैत अछि। संग्रहक श्रेष्ठ क्षण ओहि ठाम अछि जतए कवि पाठककेँ निर्देश नहि दैत छथि, वरन् अन्हारक भीतर इजोतक औचित्यपर स्वयं विचार करबैत छथि।

५. प्रेम, देह, सिनेह आ सम्बन्धक बहुस्तरीय संसार

‘ऋतुराज’मे फूल, सुगन्ध, ऋतु, प्रेम आ रंगक परस्पर संगति अछि। ‘काजर’मे आँखि आ सौन्दर्यक सूक्ष्म वस्तुकेँ प्रेमक प्रवेशद्वार बनाओल गेल अछि, जखन ‘सुखसंबल’ नाम, रूप, लालिमा आ जीवनक सहज छविसँ अपन काव्य-तनाव रचैत अछि। एही शृंखलामे प्रेम व्यक्तिपरक भाव रहैत अछि, तथापि भाषिक आ चित्रात्मक सम्पत्ति स्थानीय लोकानुभवसँ लेल गेल अछि। प्रेम एतए आत्मीय अनुभूतिक उत्सव अछि, विराट अमूर्तन नहि।

‘सम्बन्ध’क काव्य-संरचना अपेक्षाकृत जटिल अछि। एक दिस भीतरक स्नेह आ अपनापन, दोसर दिस परिस्थिति आ मनोदशाक संघर्ष—दुनूकेँ काव्य-वक्ता एक संग पढ़ैत अछि। पारिवारिकता यान्त्रिक नियम नहि रहैत; साझा समय, स्वीकार आ उपेक्षाक परिणाम बनैत अछि। ‘तोड़ि ले सिनेह’ एहि आन्तरिक तनावकेँ सामाजिक रूप दैत अछि। बालपन, आँगन, विवाह, घरक अन्तराल आ सम्बन्ध-विच्छेदक संकेत देखबैत अछि जे सिनेह केवल मनक भाव नहि, घर-परिवारक व्यवस्थामे गढ़ल आ कखनो-कखनो तोड़ल जाएबला अनुभव अछि।

सम्पूर्ण काव्य-संग्रहमे प्रेमक उन्मेष आ पीड़ाक आवर्त संग-संग चलैत अछि। ‘दुलार’मे लगावक भाषिक संसक्ति देखल जा सकैत अछि, ‘नहि किछु लागै नीक’मे निजी विषाद सुखक साधारण स्रोतकेँ निष्प्रभावी बना दैत अछि। ई भाव-संक्रमण कविक सफलता थिक। मुदा कतेको प्रेम-कवितामे फूल, चान, आँखि, रूप, रंग,

सुगन्धक परिचित उपमान पुनः लौटैत अछि; एहि कारण अलग-अलग कविताक बिम्ब-वैशिष्ट्य कखनो धूमिल भऽ जाइत अछि। भावक प्रामाणिकता आ बिम्बक मौलिकता समान वस्तु नहि; एहि अन्तरकेँ मानब आवश्यक अछि।

६. मनोवैज्ञानिक द्वन्द्व : ठमकल मन, भिनसर आ अपन डीह

'बितैत भिनसर' समयक अग्रगमन आ व्यक्तिगत विह्वलताकेँ प्रातःकालक बिम्बमे धरैत अछि। भिनसर सामान्यतः नवीन आरम्भक प्रतीक थिक; मुदा शीर्षकमे ओकर 'बितैत' क्रिया आशाक संग क्षणभंगुरता जोड़ि दैत अछि। 'मन' आत्मस्थितिक अनिश्चितता स्पष्ट करैत अछि : मन ठमकल अछि, बात जकड़ल अछि, आ भीतरक सन्देह मानसिक अस्थिरता बनैत अछि। एतए कवि अपन परिचित आशावादी स्वरसँ अलग रुकावट, भय, कँपनि आ उद्विग्नताक बोध करबैत अछि।

'चनरमा नहि बनिहें'मे 'चनरमा'क सौन्दर्य-प्रतीक सामाजिक अपेक्षा आ आत्मरक्षा बीचक टकरावक माध्यम बनैत अछि। कविताक वक्तव्यकेँ एकरेखीय नारीवादी उद्घोष अथवा मात्र प्रेमक परिहास मानि लेब सूक्ष्म पाठ-सम्बन्धकेँ सीमित करत। पाठकेँ एतबा कहबाक अधिकार अछि जे आदर्श बनबाक आग्रहक सामने व्यक्तित्वक स्वतन्त्र स्थिति उठैत अछि। तथापि पात्रक सामाजिक स्थान आ लिंग-सन्दर्भकेँ निश्चित तथ्य बनि घोषित करबाक पर्याप्त आधार कविता अकेले नहि दैत अछि।

'अपन डीह'मे जड़, घर आ प्रादेशिक सम्बन्धक संवेदना स्थानिक पहिचान बना दैत अछि। जे लोक जीवनक बाध्यतासँ बाहर जाए, ओकर भीतर जन्म-स्थानक आकृति बनल रहैत अछि—एहि कविताक भावप्रवाह एहन पाठक सम्भावना खोलैत अछि। 'डीह' मात्र सम्पत्ति नहि; घरक स्मृति, परिवारक ठौर आ अपन अस्तित्वक चिह्नक रूपमे उपस्थित अछि। एहि बिम्बक प्रभाव ओकर स्थानीय भाषिक सटीकतामे अछि : अमूर्त 'विस्थापन'क अपेक्षा 'डीह' अधिक स्पर्शनीय काव्य-सूचक बनि उठैत अछि।

७. लोकजीवन, श्रम आ वर्गीय विषमताक काव्यात्मक साक्ष्य

'अनुत्तरित प्रश्न'क रचना-प्रणाली प्रश्नपर टिकल अछि। पीढ़ीक सामाजिक व्यवहार, बाप-बेटाक सम्बन्ध, श्रम आ जीवनक असमान अवसर एक-दोसरासँ टकराइत अछि। कविता स्पष्ट उत्तर देबाक बदला तकर अभाव देखबैत अछि; एकरे कारण प्रश्नवाचकता नैतिक असुविधाक स्रोत बनैत अछि। कवि अपन पाठकक सोझाँ मुद्दा रखैत अछि जे घरक भीतर सामान्य मानल जाएबला कार्य-विभाजन आ अधिकार-व्यवस्था स्वयं पुनर्परीक्षण माँगैत अछि।

'मरतै गरीबहे' सामाजिक असमानताक अधिक प्रत्यक्ष कवितात्मक प्रतिवेदन अछि। गामक विपन्नता, आवश्यकता, खान-पान, श्रमसँ जुड़ल असुरक्षा आ शहरक आकर्षण-पीड़ा, सब एक वृहत्तर सामाजिक परिदृश्यक भाग बनैत अछि। शीर्षकक व्याकरण स्वयं महत्त्वपूर्ण अछि : 'गरीबहे'पर पड़ल जोर व्यक्तिक मनोदशा नहि, सामाजिक मृत्यु अथवा निरन्तर विनाशक असमान वितरणपर ध्यान केन्द्रित करैत अछि। कविता 'गरीबी दुःख अछि' जकाँ सामान्य नैतिक कथन पर नहि रुकैत, वरन् स्थिति आ अनुभवक क्रम जोड़ि संवेदना तीव्र करैत अछि।

गरीबीक चित्रणक संग 'कतेक सुख छै'क शीर्षकीय व्यंग्यात्मक सम्भावना राखल जा सकैत अछि। साधारण दैनिक सम्बन्ध आ अभावक बीच सुखक परिभाषा एकल नहि रहि जाइत अछि। कविता छोट सुख, गृहस्थी आ आशाक मूल्यांकन करैत अछि; एही परिप्रेक्ष्यमे गरीबक पीड़ा करुण-रसक निष्क्रिय दृश्य नहि, एकटा नैतिक प्रश्न बनैत अछि। एहि संग्रहमे वर्गीय विषमता पर लिखल रचना सभ तखन सशक्त होइत अछि जखन सामाजिक वास्तविकताक विशिष्ट दृश्य, परिवारक कथा अथवा स्थानिक शब्द संरचनात्मक भूमिका निभबैत अछि; केवल सर्वसाधारण नैतिक निष्कर्ष पर निर्भर कवितामे प्रभाव घटैत अछि।

आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहासमे छोट प्रकाशन, वैकल्पिक पाठकीय समुदाय आ मुद्रण-संस्कृतिक महत्त्वक प्रश्न उठैत रहल अछि। प्रणव प्रकाशक अध्ययन ओहि ऐतिहासिक उदाहरणकेँ सामने आनैत अछि जाहिमे वञ्चित समुदायसँ आबि

रहल रचनाकारक सस्ता मुद्रित साहित्यकेँ साहित्येतिहासमे अपेक्षित स्थान नहि भेटल। एहि शोधकेँ 'मनक हाट'क प्रत्यक्ष प्रभावक प्रमाण मानब गलत हएत; मुदा कविता-जगतक मूल्यांकनमे लोककथा, लघु प्रकाशक, श्रमजीवी अनुभव आ गैर-महानगरीय पाठकीयताक उपस्थिति ध्यानमे रखबाक पद्धतिगत आधार एहि सन्दर्भसँ भेटैत अछि। ... 4

८. राज्य, सत्ता आ नैतिक आलोचना

राजपाट आ सत्ता-प्राप्तिक प्रसंग उठबैत 'शीर्षक' नामक कवितामे नागरिक जीवनक सम्बन्ध पर व्यंग्यात्मक दृष्टि अछि। 'राज पाट केर खेल'क संकेत राज्यसत्ताकेँ सार्वजनिक उत्तरदायित्वक बदला खेल अथवा अवसरवादक रूपमे देखबैत अछि। छोट आ सीधा वाक्य राजनीतिक विडम्बनाकेँ तुरन्त पठनीय बनबैत अछि। 'राजनीतिक साँप' आ 'साँप' जकाँ रचनानाम सेहो संग्रहक राजनीतिक रूपक-प्रवृत्तिक निदर्शन अछि। मुदा सर्प-रूपक सदिखन जटिल सत्तासम्बन्धक विश्लेषण नहि करैत; कखनो 'खराब राजनीति'क परिचित रूपक बनि रहि जाइत अछि।

'नाक' संग्रहक अन्तिम कवितामे देहक छोट अंगकेँ मान-सम्मान, अभिमान आ सामाजिक व्यवहारक संकेतक रूपमे बरतैत अछि। मैथिली लोकवाक्यमे 'नाक' इज्जत, आत्माभिमान आ प्रतिष्ठाक अनेक अर्थ वहन करैत अछि। कवि ओहि परिचित मुहावरेकेँ विस्तार दऽ सामाजिक प्रदर्शनपर प्रश्न उठबैत अछि। पुस्तक मनक भीतरक संसारसँ चलि मनुष्यक बाह्य प्रतिष्ठा-प्रदर्शनक प्रश्नपर आबि पहुँचैत अछि; एहि आरम्भ-अन्तक सम्बन्धसँ एकटा सम्भावित अर्थ-वृत्त बनैत अछि।

कविक सामाजिक आलोचनामे लाक्षणिकता आ प्रत्यक्ष टिप्पणी दू प्रवृत्ति अछि। राजनीतिक साँप, हाट, नाक, जेल, दीप, अन्हार जकाँ रूपक समाजक जटिलताकेँ दृश्य बनबैत अछि; पर 'फलाँ वस्तु खराब' जकाँ सीधा मूल्यनिर्णय अर्थकेँ जल्दी बन्द कऽ दैत अछि। संग्रहकेँ एकटा सुसंगत राजनीतिक घोषणापत्र समझब साहित्यिक

आधार सँ अधिक दावा हएत; तकर बदला एतए अलग-अलग सामाजिक असहमतिक काव्यात्मक क्षण पढ़ल अधिक समीचीन अछि।

९. कोरोना-काल : घर, भय, श्रम आ असुरक्षा

'कोरोना काल' शीर्षकक अनेक कविता महामारीक अनुभवकेँ प्रत्यक्ष काव्य-विषय बनबैत अछि। घरमे रहबाक बाध्यता, चौक-बाजारक परिवर्तित जीवन, बाल-बच्चा आ वृद्धक असुरक्षा, रोजी-रोटी, विखण्डित मेलजोल, पसारल भय आ सामान्य दिनचर्याक टूटन एहि रचनासभमे दृश्य बनैत अछि। कविता केवल रोगक अमूर्त भय नहि, बल्कि दैनिक जीवनक अवरोध आ असहायताकेँ शब्द दैत अछि। एहि अर्थमे महामारी केवल ऐतिहासिक समय नहि, मनुष्यक देह, सम्बन्ध आ श्रमक बदलैत अनुभव सेहो अछि।

महामारी-विषयक अपेक्षाकृत विस्तृत कवितामे परिवारक व्यक्तिसभ घरक भीतर सीमित छथि; बाजार, आवागमन आ आपसी मिलनक सामान्य परिपाटी भंग भऽ जाइत अछि। एहि सामाजिक अवरोधक कारण कविता मनोवैज्ञानिक तनाव, प्रतीक्षा, बेचैनी आ पारस्परिक निर्भरताक काव्य सेहो बनैत अछि। 'मरतै गरीबहे'क संग एहि रचनासभकेँ पढ़ला पर स्वास्थ्य-संकट आ आर्थिक विषमता एकहि सामाजिक क्षितिजक अलग-अलग चेहरा जानि पड़ैत अछि। विषम परिस्थिति सभक एहि समीपता सँ सामाजिक करुणाक व्यापक परिप्रेक्ष्य बनैत अछि। ... 81

महामारी-सम्बन्धी रचनाक शिल्पगत प्रश्न स्पष्ट करब आवश्यक अछि। तत्काल घटित समाचार-सदृश दृश्यकेँ कविता बनएबाक समय कविक सामने दू खतरा रहैत अछि : तथ्यक सरलीकरण आ बिम्बक सीमितता। एहि समूहमे अनेक पंक्ति प्रत्यक्ष विवरणक निकट अछि; तें एतए भावनात्मक दस्तावेजी मूल्य बेशी अछि, मुदा कतिपय ठाम कलात्मक रूपान्तरण कम अछि। तथापि रोजमर्राक जीवित भाषा आ घरक भीतरक संकट एकर सामाजिक साक्ष्यक महत्त्व बनबैत अछि। सभ रचनाकेँ समान सौन्दर्यात्मक दर्जा देब आलोचनाक न्याय नहि हएत।

१०. प्रकृति, पर्यावरण आ जीवनक परस्परावलम्बन

प्रकृति कवि लेल केवल ऋतु-रंगक सजावट नहि। 'ऋतुराज'मे प्रकृतिक सौन्दर्य प्रेमक आवेग बनैत अछि, जखन 'प्रकृत'मे गाछ, फूल, पानि, सूर्य, माटि आ जीव-जगतक परस्पर सम्बन्धक चिन्ता सामने अबैत अछि। वस्तु-अनुभवसँ जीवन-निर्भरता धरि ई गति कविताक पर्यावरण-बोधकेँ मूर्त बनबैत अछि। कवि मनुष्यकेँ प्रकृतिसँ अलग सर्वोच्च प्राणी मानि नहि चलैत; अन्तर्सम्बन्ध आ सहअस्तित्वक आग्रह राखैत अछि।

'पर्यावरण-सुरक्षा' जकाँ शीर्षक प्रकृतिक प्रति कविक सजगता सूचित करैत अछि। तथापि पर्यावरणक उद्देश्य घोषित कऽ देब मात्रसँ श्रेष्ठ कविता नहि बनैत। 'प्रकृत'मे जीव-जगत, गाछ-पात आ घरक परिचित संसारक संग मनुष्यक सम्बन्ध अधिक मूर्त रूप पबैत अछि। प्रकृतिक महत्त्व तखने प्रभावी होइत अछि जखन ओ उपदेशक विषय नहि रहि जीवन-निर्भरता, स्नेह, क्षति आ संरक्षणक दृश्य बनैत अछि।

प्रसादक प्रकृति-बोधक स्थानीयता ओकर शब्दचयन आ वस्तु-संसारसँ निर्मित अछि। फूल, माटि, ऋतु आ गाछ केवल दृश्यात्मक सजावट नहि, मानवीय अनुभूतिक संवाहक बनैत अछि। कखनो ई तत्व प्रेमक आवेग बढ़बैत अछि, कखनो सन्तुलनक आकांक्षा जगबैत अछि। एतए प्रकृतिक सभसँ जीवन्त रूप ओ अछि जाहिमे कविताक भाव-संचार आ वस्तु-जगत परस्पर सहयोग करैत अछि; परिचित दृश्य असाधारण आत्मीयता पाबि जाइत अछि।

११. रूपविधान : लघुगीत, सूची, आवर्तन आ प्रश्नलय

'मनक हाट'क काव्यरूप एकरूप नहि। 'काजर', 'मन', 'कविता', 'नाक' जकाँ अपेक्षाकृत लघु कविता, 'मनुख', 'तोड़ि ले सिनेह', 'मरतै गरीबहे' आ 'कोरोना काल' जकाँ विस्तार पाबि रहल कविता, तथा 'गीत' नामक रचना सभ एकहि संग्रहमे स्थान पबैत अछि। लोकगीत-जेकाँ पंक्ति-ताल, एकहि ध्वनिक वापसी, सम्बोधन आ अन्तिम

निष्कर्षक प्रवृत्ति अनेक ठाम लक्ष्य होइत अछि। छन्दमुक्त पंक्ति-विभाजनक बावजूद गायन-सन्निकट लय सुनाइत अछि। ... 4

आवर्तन एतए प्रभावकारी शिल्प-उपकरण अछि। 'मनक हाट'क प्रश्न-वापसी पाठककेँ अन्हार-विरोधी जिज्ञासामे बाँधैत अछि; 'मरतै गरीबहे'क बारम्बार आवर्तन सामाजिक वेदनाकेँ सांगीतिक स्मृति बनबैत अछि; 'कोरोना काल'क दोहराएल शीर्षक महामारीक लौटैत कठिनाइक सामूहिक नाम बनि सकैत अछि। मुदा पुनरावृत्ति सफल तखने होइत अछि जखन प्रत्येक पुनरागमन नव परिस्थिति, अर्थ अथवा विडम्बना जोड़य। अर्थ-विस्तार बिना दोहराव काव्यक ऊर्जा घटा दैत अछि। ... 4

'कविता' नामक अत्यन्त संक्षिप्त रचना एकटा रोचक आत्मविषयक टिप्पणी अछि। केवल कतिपय पंक्तिमे कविता आ जीवनक भीतरक सम्बन्ध व्यक्त करबाक चेष्टा अछि। ई लघुता स्वरक निस्संगता उत्पन्न करैत अछि; मुदा एकर कल्पना जतेक तेजीसँ समाप्त होइत अछि, ओतेक अधिक पुनर्व्याख्याक अवसर नहि दैत। एहि उदाहरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे संक्षिप्तता अपने-आप घनत्वक समानार्थी नहि।

१२. काव्यभाषा : मैथिलीपन, सहजता आ अभिव्यक्तिक असमानता

शिव कुमार प्रसादक सबल विशेषता मैथिली लोक-उच्चारणक समीप रहल भाषा अछि। 'छै', 'अछि', 'अहाँ', 'हमर', 'अपन', 'डीह', 'सिनेह', 'भिनसर', 'दुलार' जकाँ प्रयोग पाठकक अनुभवक भाषाकेँ काव्यक भीतर सुरक्षित रखैत अछि। मैथिली आ हिन्दी अथवा संस्कृतक परस्पर सम्पर्कक बीच एहि संग्रहक बोलचाल-सम्बद्ध शब्द कविता-भाषाक स्वाधीन पहिचान रचैत अछि। सामाजिक विषयपर सरसता बनौने रखबाक ई महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि।

प्रसादक भाषा बहुते ठाम सांकेतिक रूपकक अपेक्षा कथ्यक पारदर्शितापर भरोसा करैत अछि। एहि शैलीमे विषय तेजी सँ सम्प्रेषित होइत अछि; सामान्य परिवार आ जीवित सामाजिक व्यवहार पाठकसँ दूर नहि पड़ैत। मुदा काव्यभाषाक प्रभाव केवल

सहजताक नाम नहि : जे वाक्य पहिलहि बेरमे अपन सम्पूर्ण आशय खोलि दैत अछि, से कखनो पुनर्पाठमे नूतन अनुभव नहि दऽ पबैत अछि। ‘जिनगीक साँस’क भाव-सूची, कतिपय ‘शीर्षक’ कविता आ लघुरचना ‘कविता’मे विचारक सीधा विन्यास काव्यक अव्यक्त अर्थक्षेत्रकेँ छोट कऽ दैत अछि।

लोकवाक्य, वस्तुचित्र, गामक पदावली आ भीतरक घावक मिलनपर भाषा सर्वाधिक सफल अछि। ‘मनक हाट’क अन्हार-इजोत, ‘अपन डीह’क निवास-स्मृति, ‘तोड़ि ले सिनेह’क घर-आँगन आ ‘नाक’क सामाजिक व्यंग्य एकर प्रमुख प्रमाण अछि। एहि स्थलसभ पर भाषा मानकवादी कठोरतासँ नहि, जीवित व्यवहारसँ अपन प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। एही कारण भाषिक भिन्नरूपकेँ मात्र ‘अशुद्धि’ मानि सुधारि देब मूल काव्यस्वरकेँ क्षति पहुँचा सकैत अछि। ... 4

१३. सौन्दर्यबोध : करुणा, आशा, विडम्बना आ ध्वनिक मर्यादा

भारतीय काव्यचिन्तनक सामान्य पदावलीमे एहि संग्रहक अनेक स्थल करुण, शृंगार, हास्य-विनोद आ शान्तिमूलक अनुभवक बीच संचरित होइत अछि। ‘मरतै गरीबहे’क सामाजिक वेदना करुणाक, ‘काजर’क चितवन शृंगारक, ‘नाक’क चुटीला रूपक व्यंग्यक आ ‘बितैत भिनसर’क समय-संवेदना क्षय-आशाक संयुक्त अनुभवक उदाहरण अछि। मुदा प्रत्येक कविताकेँ यान्त्रिक रूपसँ एक-एक रसक डिब्बामे रखब तकर भाषिक वाक्य-व्यवहारकेँ छोट करब थिक। एहि लेखमे ‘रस’ शब्द काव्यानुभूतिक विवेचनात्मक संकेत अछि, सर्वसमाधानकारी मापपट्टी नहि।

ध्वनि अथवा व्यंजना तखने प्रभावी होइत अछि जखन शब्दक प्रत्यक्ष अर्थसँ आओर किछु सम्भावना निस्सृत हो। ‘मनक हाट’क ‘अन्हार’ आ ‘इजोत’ एहि अर्थमे सफल अछि; ‘अपन डीह’क स्थान स्मृतिभूमि बनि उठैत अछि; ‘नाक’ देहक अंगसँ बेसी मान-सम्मानक सामाजिक व्यवहार बतबैत अछि। एकर विपरीत जे ठाम कविता अपन नैतिक प्रतिपाद्य अगबे स्पष्ट करि दैत अछि, ओतए व्यंजना सीमित रहि जाइत

अछि। एहि असमानताकेँ काव्यधर्म आ कथ्य-प्रसारणक बीचक अन्तर्द्वन्द्व मानब अधिक उपयोगी हएत। ... 4

कविताक समीप-पाठ देखबैत अछि जे प्रसादक उत्साहात्मक नैतिक निष्कर्ष प्रायः ‘जीबू’, ‘आगाँ बढ़ू’ जकाँ प्रेरक दिशामे जाएब चाहैत अछि; मुदा सर्वाधिक याद रहबाक दृश्य ओ अछि जाहिमे नैतिकता प्रश्नक रूपमे लौटैत अछि। ‘मनक हाट’ एहि दृष्टिसँ संग्रहक सौन्दर्य-आलोचनात्मक मापदण्ड अपने स्थापित करैत अछि : रोशनीक आवश्यकता आदेशसँ नहि, अन्हारमे प्रश्न उठेबासँ सिद्ध होइत अछि। ... 4

१४. आधुनिक मैथिली साहित्यक सार्वजनिक परिप्रेक्ष्य

संग्रहकेँ साहित्येतिहासक विशाल दावाक स्थानपर मैथिली मुद्रण-संस्कृतिक निश्चित परिप्रेक्ष्यमे देखब उचित अछि। स्नेहा झाक औपनिवेशिक भाषा-नीति सम्बन्धी अध्ययन देखबैत अछि जे मैथिलीक वर्गीकरण आ राज्यकीय दृष्टि भाषिक अधिकारक इतिहाससँ जुड़ल छल। ललित कुमारक मुद्रण-सम्बन्धी अनुसन्धान मैथिली लिपि, जातिगत वैधता आ छपाइ-संस्कृतिक जटिल सम्बन्धपर चर्चा करैत अछि। एहि बाहरी शोधसभसँ ‘मनक हाट’क मूल विषय बदलैत नहि, मुदा क्षेत्रीय कविता किएक भाषा-चयन आ प्रकाशनक स्तरपर सेहो सामाजिक अर्थ धारण करैत अछि, से स्पष्ट करबाक पृष्ठभूमि भेटैत अछि। ... 4

क्रिस्टोफर डायमण्ड आधुनिक मैथिली नाटकक सन्दर्भमे क्षेत्रीय भाषाक स्वायत्तता आ हिन्दी-बंगला सांस्कृतिक प्रभुत्वक बीचक सम्बन्ध देखबैत छथि। उफाक़ पैकर मैथिलीक बहुभाषिक, बहु-समुदायिक ऐतिहासिक परम्पराक महत्त्व स्थापित करैत छथि। एहि शोधसभक आलोकमे प्रसादक मैथिली काव्य-स्वरकेँ केवल ‘ग्रामीण स्वाद’ कहि सीमित नहि करबाक चाही। तथापि एहि विद्वानसभक इतिहास-विश्लेषणकेँ प्रसादक व्यक्तिगत जीवनी, जातिगत आत्मपहिचान अथवा कविताक प्रत्यक्ष प्रेरणा सिद्ध करबाक आधार नहि बनाओल जा सकैत अछि।

शिव कुमार प्रसादक काव्य-जगतकेँ मैथिलीमे लोकभाषाक आधुनिक प्रयोगक व्यापक धारासँ जोड़ि देखल जा सकैत अछि। ‘मनक हाट’क विशेषता ई अछि जे साधारण जीवन-स्थिति—जिनगीक साँस, घरक सिनेह, गामक स्मृति, गरीबक अस्तित्व आ सामाजिक प्रतिष्ठा—काव्यक केन्द्रीय प्रश्न बनैत अछि। कविक अन्य प्रकाशित कृतिसभ व्यापक रचनात्मक उपस्थिति सूचित करैत अछि; मुदा एहि संग्रहक स्वतन्त्र पहचान मनोभाव आ लोकानुभवक लगातार आवागमनमे निहित अछि। ... 4

१५. आलोचनात्मक मूल्यांकन : उपलब्धि आ अपूर्णता

१५.१. जे कारणसँ संग्रह उल्लेखनीय अछि

पहिल, संग्रह व्यक्तिगत वेदनाक संकुचित दायरा तोड़ि सामाजिक मनोविज्ञान रचैत अछि; ‘मनुख’सँ ‘मरतै गरीबहे’ धरि एकटा संवेदनात्मक वक्र भेटैत अछि। दोसर, कवि गाम, घर, डीह, सिनेह, भिनसर, चान, फूल, भोजन, बाजार आ साधारण चीजबस्तुक माध्यमसँ अनुभवकेँ स्पर्शनीय बनबैत अछि। तेसर, ‘मनक हाट’ आ ‘अनुत्तरित प्रश्न’ जकाँ कविता पाठकसँ सक्रिय नैतिक संवाद करैत अछि। चारिम, महामारीक कविता इतिहासक विशिष्ट संकटकेँ लोकभाषामे अंकित करैत अछि। पाँचम, संग्रहक अनेक शब्द आ वाक्य-विन्यास आधुनिक मैथिली कविताक बोलचाल-निष्ठ शक्तिक साक्षी अछि। ... 4

१५.२. जे कारणसँ पुनर्मूल्यांकन आवश्यक अछि

पहिल, समान नैतिक निष्कर्ष आ परिचित प्रतीकक अधिक आवर्तन कतिपय रचनाकेँ एक-दोसरासँ कम पृथक करैत अछि। दोसर, प्रश्नोन्मुख कविता जतए नाटकीय प्रभाव उत्पन्न करैत अछि, ओतहि अनेक प्रत्यक्ष उपदेशात्मक पंक्तिमे अर्थ

अपेक्षाकृत शीघ्र समाप्त होइत अछि। तेसर, लोकवाक्यसँ उत्पन्न सहज लय प्रभावकारी अछि, मुदा सभ कवितामे ध्वनि-संयम आ पंक्ति-विन्यास एकसमान सघन नहि। चारिम, एकहि सामान्य शीर्षकक अन्तर्गत अनेक रचना राखल जाएबसँ विशिष्ट काव्यानुभवक अलग पहिचान दुर्बल पड़ैत अछि। ई सीमासभ मानि लेलासँ रचनाकारक संवेदना कम नहि होइत; उलटे संग्रहक वास्तविक सौन्दर्यात्मक उपलब्धि अधिक स्पष्ट होइत अछि।

१५.३. मूल्य-निर्धारणक विवेक

कविताक गुण-दोषकेँ सामाजिक उपयोगिता मात्रसँ नापल नहि जा सकैत अछि। गरीबीक पक्षमे उठल आवाज महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा ओ आवाज कविता तखने बनैत अछि जखन शब्द-क्रम, बिम्ब, विराम, प्रश्न, मौन अथवा आन्तरिक लय अनुभवकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। एही तरहेँ प्रेमक सरल शब्दावली पाठकीय निकटता दैत अछि, पर ओकर भीतरक तनाव, अनकहल अर्थ आ विशिष्ट दृश्य जतेक रचल जाए, काव्य-मूल्य ओतेक बढ़ैत अछि। 'मनक हाट'क न्यायपूर्ण मूल्यांकन एहने दूहरा मापदण्डपर सम्भव अछि : सामाजिक संवेदना आ काव्य-रचना—दुनूक आलोचनात्मक परीक्षण। ... 4

१६. निष्कर्ष

'मनक हाट' एकटा एहन संग्रह अछि जाहिमे मनक एकान्त संसार सार्वजनिक अनुभवक हाट बनि उठैत अछि। एकरे भीतर प्रेमक कोमलता, सम्बन्धक टूटन, गामक स्मृति, गरीबक पीड़ा, राजनीतिक विडम्बना, महामारीक भय आ जीवनकेँ धारण करबाक आकांक्षा संग-संग उपस्थित अछि। शीर्षक-कविताक अन्हार आ इजोतक संवाद सम्पूर्ण पोथीक एक प्रभावी अर्थसूत्र प्रदान करैत अछि। एकर तुलना 'मरतै गरीबहे'क करुणा, 'अपन डीह'क स्थानिकता, 'तोड़ि ले सिनेह'क पारिवारिक तनाव

आ ‘नाक’क व्यंग्यसँ कएल जाय तँ कविक संवेदनात्मक विस्तार स्पष्ट होइत अछि। ... 4

तथापि संग्रह पूर्णतः समान कलात्मक उपलब्धिक पोथी नहि। अनेक रचना सहज पठनीय आ नैतिक दृष्टिसँ मूल्यवान अछि, मुदा बिम्ब-मौलिकता, सूक्ष्म ध्वनि, सम्पादकीय शीर्षकीकरण आ भाषिक संयमक स्तरपर पुनरावृत्ति आ असमानता देखाइत अछि। एहि कारण शुद्ध प्रशंसात्मक अध्ययन संग्रहकेँ अधिक नहि, कम बुझत। आलोचनाक उपयुक्त निष्कर्ष ई अछि जे प्रसादक सर्वाधिक सफल कविता निजी दुःखकेँ सामाजिक प्रश्नमे रूपान्तरित करैत अछि, जखन कम सफल कविता प्रश्नकेँ तत्काल सूत्रवाक्यमे बदलि दैत अछि।

समकालीन मैथिली काव्यमे एहि संग्रहक महत्त्व ओकर बोलचालक सजीव स्वर, सामान्य लोकक प्रति सहानुभूति आ निजी दुःखकेँ सामाजिक प्रश्नमे बदलबाक क्षमतामे देखल जाएबाक चाही। सभ कविता समान रूपसँ अविस्मरणीय नहि, मुदा जे ठाम बिम्ब, प्रश्न, लोकशब्द आ अनुभव एक-दोसरामे घुलि जाइत अछि, ओतए प्रसादक काव्य अपन विशिष्ट स्वर अर्जित करैत अछि। ‘मनक हाट’ अन्ततः मनक भीतर स्थित सामाजिक संसारक कविता थिक—एहन संसार जाहिमे जीवनक टूटन आ आशा परस्पर विरोधी होइतो एक-दोसराकेँ अर्थ दैत अछि। ... 4

ग्रन्थसूची आ सन्दर्भ

प्रसाद, शिव कुमार। मनक हाट। निर्मली, सुपौल: पल्लवी प्रकाशन, २०२१। १७० पृष्ठ। ... **4**

झा, स्नेहा **(Jha, Sneha)**। **"Bringing Order to Chaos: The Appropriation of Maithili by Colonial State, c 1870s–1940s." Indian Historical Review 46,** अङ्क **2 (**ऑनलाइन प्रकाशन**:** २०२०**)**। **https://doi.org/10.1177/0376983619889512**

कुमार, ललित **(Kumar, Lalit)**। **"Caste, Script and Language: The Curious Case of Maithili Print." Society and Culture in South Asia 12,** अङ्क **1 (**ऑनलाइन प्रकाशन**:** २०२५**)**। **https://doi.org/10.1177/23938617251337694**

डायमण्ड, क्रिस्टोफर एल. (Diamond, Christopher L.)। "The 'Indescribable Country': Locating Mithila between Bengal and the Hindi Heartland in Raghunandana Das's Mithilānāṭaka." Asian Ethnology 85, अङ्क 1 (२०२६)। https://doi.org/10.18874/ae.85.1.03

प्रकाश, प्रणव **(Prakash, Pranav)। "A Cowherd's Chapbook: An Inquiry into the Ethics of Literary Historiography." Asian Ethnology 85,** अङ्क **1 (**२०२६**)।** **https://doi.org/10.18874/ae.85.1.06**

पैकर, उफाक़ **(Paiker, Ufaque)। "Shadings of Languages: A Study of Maithili Marsīya in Nineteenth-Century Bihar." Asian Ethnology 85,** अङ्क **1 (**२०२६**)। https://doi.org/10.18874/ae.85.1.04**

ठाकुर, गजेन्द्र (Thakur, Gajendra)। "A Comprehensive Analysis of Dr. Shiv Kumar Prasad's Contributions." विदेह, A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, Part 25। https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_25.htm (देखल: १७ नवम्बर २०२६)।

विदेह पोथी अभिलेख। **"**डॉ. शिव कुमार प्रसाद**"** शीर्षकान्तर्गत पुस्तक-प्रविष्टि। **https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm**

(देखल**:** १७ नवम्बर २०२६**)।**

सोंहाँत-अनसोंहाँत : जीवनक काव्य-संसार 23

डॉ. शिव कुमार प्रसादक 'सोंहाँत-अनसोंहाँत'क पाठकेन्द्रित विस्तृत साहित्यिक समीक्षा ... 23

◆ ◆ ◆

सारांश

डॉ. शिव कुमार प्रसादक मैथिली कविता-संग्रह 'सोंहाँत-अनसोंहाँत'मे आत्मसंवाद, ग्राम्य स्मृति, भाषिक अस्मिता, सामाजिक विडम्बना, श्रम, पारिवारिक संवेदना आ प्रकृति-अनुभवक विविध स्वर एक संग उपस्थित अछि। शीर्षकक द्वन्द्वात्मक संरचनासँ उठल प्रश्न 'मिथिला धाम', 'शहर ओ गेल', 'गाम छूटल', 'निर्मलीक निर्मलतामे', 'भातक थारी', 'खेतिहर', 'अनसोंहाँत', 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' आ 'साखी' शृंखलाक अलग-अलग काव्यस्थितिमे विकसित होइत अछि। गाम आ नगर, स्मृति आ वर्तमान, अपनत्व आ आत्मालोचना, सामूहिक राग आ नैतिक प्रतिरोध एहि संग्रहक प्रमुख संवेदनात्मक धुरी अछि। गीतात्मक पुनरावृत्ति, लोकलयक निकट लयविन्यास, बोलचालक मैथिली आ दैनिक जीवनसँ उठाओल बिम्ब कविक अभिव्यक्तिक विशिष्ट आधार बनैत अछि। संगहि कतिपय रचनामे ग्रामीण जीवनक आदर्शीकरण, विचारक सीधे उपदेशमे बदलि जाएब आ पुनरावृत्तिक कारण भावात्मक विस्तारक अवरोध सेहो देखाइत अछि। ध्वनि-विचार, भाषिक काव्यकार्य आ ग्राम–नगर सम्बन्धक आलोचनात्मक अवधारणाक आलोकमे एहि संग्रहक शक्ति ओकर आत्मीय सामुदायिक स्वर आ ओहि स्वरक भीतर उभरैत असहमतिक द्वन्द्वमे निहित अछि। ... 23

मुख्य शब्द : मैथिली कविता; शिव कुमार प्रसाद; सोंहाँत-अनसोंहाँत; ग्राम्य स्मृति; भाषिक अस्मिता; लोकलय; नैतिकता; निकट-पाठ। ... 23

१. प्रस्तावना : सोंहाँत-अनसोंहाँतक काव्य-संसार ... 23

'सोंहाँत-अनसोंहाँत' डॉ. शिव कुमार प्रसादक मैथिली कविता-संग्रह अछि, जकर प्रथम प्रकाशन २०१८ मे पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल) सँ भेल। संग्रहक आरम्भ 'प्राक्कथन'सँ होइत अछि आ अन्त 'साखी' शृंखलाक नीतिपरक उच्चारणसँ। एहि दू सिराक बीच मिथिलाक गाम, माटि, शिक्षा, ऋतु, लोकपर्व, पारिवारिक नाता, शहरक अनुभव, श्रम, विश्वास आ विडम्बनाक बहुरंगी काव्यलोक खुलैत अछि। रचनाकार अपन परिवेशकेँ कोनो निष्क्रिय दृश्य जेकाँ नहि देखैत छथि; ओ स्थान आ सम्बन्धक भीतर मानवीय मूल्य खोजैत आ तकर विसंगतिक सामना करैत छथि। 'निर्मली' सन नाम केवल भौगोलिक ठेकाना नहि रहि, आत्मीयता आ सामाजिक उम्मीदक अर्थध्वनि ग्रहण करैत अछि। ... 23

पुस्तकक शीर्षक तत्काल कोनो एकल भाव नहि दैत अछि। 'सोंहाँत' आ 'अनसोंहाँत'क समास-समीपता उपयुक्त–अनुपयुक्त, अपन–अनअपन, तृप्ति–अतृप्ति, स्वीकार–अस्वीकारक बीचक अस्थिर क्षेत्र खोलैत अछि। रचनासभ कखनो अपन समाजक प्रति गहन अनुराग व्यक्त करैत अछि, कखनो ओहि समाजक रूढ़ि, अव्यवस्था, बनावटीपन आ आत्मविस्मृतिक आलोचना करैत अछि। तैं शीर्षककेँ मात्र सुख-दुःखक भावात्मक जोड़ी मानब संग्रहक विचारगत तनावकेँ छोट करब होयत। विशेषतः 'अनसोंहाँत' नामक कवितामे आत्मसम्मान, प्रदर्शनप्रियता, भौतिक उपभोग आ पीढ़ीक उपेक्षाक एकसाथ उपस्थितिक कारण एहि द्वन्द्वक नैतिक अर्थ सघन होइत अछि।

संग्रहक काव्यगत विशेषता एहि बातमे अछि जे स्थानक स्मृति निजी रहितहुँ समुदायसँ जुड़ैत अछि, आ सामाजिक प्रतिरोध उपदेशात्मक भाषा ग्रहण करितहुँ किछु ठाम तीक्ष्ण बिम्बक रूप लैत अछि। प्रश्न तैं केवल एहि बातक नहि जे कवि मिथिलासँ कतेक नेह करैत छथि, अपितु एहि बातक सेहो अछि जे ओहि नेहक भीतर ओ अपन समाजक बनावटीपन, असमानता आ आत्मविस्मृतिसँ कोना जूझैत छथि।

लोकभाषाक सहज प्रवाह आ पुनरावृत्तिक गेय संरचना एहि जूझक संवेदनात्मक रूप निर्धारित करैत अछि।

२. समर्पण, आत्मस्वर आ काव्य-दृष्टिक निर्मिति

संग्रहक समर्पणमे नव पीढ़ी, गामक अभाव आ अपन ठामसँ दूरिक अनुभूति सघन रूपमे व्यक्त भेल अछि। लेखकक 'पोथीक मादे'मे रचनासभक विविधता आ हृदयक अनुभूतिसँ ओकर सम्बन्धक चर्चा एहि आत्मीय प्रस्तावनाकेँ आर स्पष्ट करैत अछि। ई दूनू प्रारम्भिक उच्चारण आगाँ आबऽवला कवितासभमे गाम, घर, भाषिक निकटता आ समयक बदलैत अनुभवक भावभूमि तैयार करैत अछि। समर्पणक स्मृति जखन 'गाम छूटल'क वियोगक संग पढ़ल जाइत अछि, तखन एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ी धरि सांस्कृतिक अनुभवक हस्तान्तरणक चिन्ता उभरैत अछि।

डॉ. प्रसादक कविता प्रत्यक्ष कथन आ व्यञ्जनात्मक संकेतक बीच आवाजाही करैत अछि। 'मिथिला धाम'क पुनरावृत्त अपनत्व गेय भावभूमि रचैत अछि; 'शहर ओ गेल'क पाथर-बिम्ब नागर संवेदनहीनताकेँ साकार करैत अछि; 'दीप'क उजास आ अन्हार जीवनक नैतिक अनिश्चितताकेँ आकार दैत अछि। एहिसँ कविताक अर्थ केवल कथित विषयमे नहि, ध्वनि, सम्बोधन, पुनरुक्ति आ बिम्बक आन्तरिक सम्बन्धमे सेहो बनैत अछि। आनन्दवर्धनक व्यञ्जना-विचार आ रोमन याकोब्सनक काव्यात्मक भाषाक अवधारणा एहि सम्बन्धक सूक्ष्मता बुझबाक उपयोगी परिप्रेक्ष्य दैत अछि; रेमण्ड विलियम्सक ग्राम–नगर चिन्तन स्मृतिक आदर्शलोक आ सामाजिक यथार्थक बीचक अन्तर उजागर करैत अछि।

कविता-संसारमे 'हम' एकरूप स्वर नहि अछि। कखनो ओ आत्मीय मनुख छथि, कखनो सामूहिक गामक प्रतिनिधि, कखनो प्रेमक आकुल वक्ता, कखनो सामाजिक कुप्रथाक विरुद्ध प्रश्न उठेनिहार चेतना। एहि स्वरगत परिवर्तनसँ संग्रहक गीतात्मकता एकहि भावक अटूट पुनरावृत्ति बनि नहि रहैत, बरु निजी अनुभव आ लोकजीवनक

बीच आवागमनक रूप लैत अछि। कविक निजी व्यक्तित्व आ कविताक 'हम'क बीचक अन्तर ध्यानमे रखला पर रचनासभक आलोचनात्मक सामर्थ्य आर स्पष्ट होइत अछि।

३. शीर्षकक द्वन्द्व : अपनत्व, असहजता आ मूल्य-संघर्ष

'सोंहाँत-अनसोंहाँत'क मूल लय द्विपदीय नहि, द्वन्द्वात्मक अछि : ओहि चीजसँ लगाव जकर आलोचना आवश्यक बुझाइत अछि। उद्घाटनक 'प्राक्कथन'मे जीवनकेँ काँट आ फूलक सहवासक रूपमे देखल गेल अछि; अपेक्षा-उपेक्षा, सत्य-असत्य, सद्भाव आ विकर्षणक साथे कला-सौन्दर्यक स्वीकारक आग्रह सेहो रहैत अछि। 'काँट' आ 'फूल'क द्वि-बिम्ब आरम्भहि सँ एकांगी रमणीयताकेँ अस्थिर करैत अछि। कविक जीवन-दृष्टि मे विरोधी अनुभव सभ एकहि जीवनक सहचर अछि। ... 23

'अनसोंहाँत' एहि प्रारम्भिक बीजकेँ सामाजिक धरातल दैत अछि। कविताक वक्ता देखादेखी, लोक-लाज, आडम्बर, अतीतक ज्ञानक गर्व आ वर्तमानक विडम्बनाक प्रसंग उठबैत अछि। पंक्तिसभक सतह पर सामान्य नीतिकथनक स्वर अछि; भीतर अपन सामाजिक समुदायसँ असन्तोषक आत्मालोचक प्रेरणा सेहो। मुदा ई आलोचना कोनो ठोस सामाजिक वर्ग वा संस्थाक विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत नहि करैत; संकेतक व्यापकता आ प्रसंगक संक्षिप्तता मिलि प्रश्नकेँ खुलल छोड़ि दैत अछि। एहि खुलापनकेँ सदा ध्वनि-कौशल नहि मानि सकैत छी—किछु ठाम विस्तारक अभाव सेहो अछि।

'सभ झूठ-फूसमे बाझल छी'मे वक्ता अपन भाषिक आ सामाजिक व्यवहारक जालमे फँसल अनुभव करैत अछि। 'झूठ' कविता परत-दर-परत झूठक सामुदायिक प्रसार देखबैत अछि। दुनू कविता एकसाथ पढ़ला पर संग्रहक असहमति-बोध केवल 'बाहरी' समाजक आलोचना नहि रहैत; 'हम' स्वयं आलोचनाक वस्तु बनैत छी। एहि आत्मसमावेशितामे काव्यनैतिकताक महत्त्वपूर्ण आधार अछि।

४. मिथिला : भूमि, भाषा आ सांस्कृतिक प्रतिज्ञा

‘मिथिला धाम’मे ‘अपन’ शब्दक आवृत्ति संयोग नहि। गाछक छाँह, धाम, सिमर-गाम, घर-आँगन आ लोकसंगीतक आसपास ओ अपन भूमिक निष्ठाकेँ गाढ़ करैत अछि। एहिमे मिथिला कोनो निर्जीव मानचित्र नहि, ध्वनि, रीत, स्मृति आ मानवीय सम्बन्धक समुच्चय अछि। कविता-पंक्तिक पुनःआगमनसँ स्मृति एकटा गीतात्मक घर बना लैत अछि। स्वयं ‘धाम’ शब्द साधारण क्षेत्रकेँ सांस्कृतिक आदरक स्थलमे बदलैत अछि; इएह शब्दक भावनात्मक प्रभाव अछि।

‘निर्मलीक निर्मलतामे’ स्थान-नामकेँ ध्वन्यात्मक समानता (‘निर्मली’/‘निर्मलता’) द्वारा नैतिक अर्थ दैत अछि। शिक्षक, छोट बच्चा, विद्यालय आ गामक गतिविधिक प्रसंगमे शिक्षा सामाजिक गतिशीलताक स्थान-विशेष बनैत अछि। एतय स्वदेश-प्रेम केवल विरासत-स्मरण नहि; शिक्षाकेँ मूल्य-निर्माणक सामुदायिक क्रिया मानबाक संभावना अछि। मुदा स्थान-नाम आ ‘निर्मलता’क सहज जोड़ एक प्रकारक आदर्शीकरण सेहो रचैत अछि। सैद्धान्तिक आलोचनाक प्रश्न ई अछि जे आदर्श स्थलभ्रमण लेल प्रेरक होइत अछि वा स्थानीय असमानताकेँ अदृश्य सेहो कऽ सकैत अछि।

‘मैथिल’, ‘गामक बात’ आ ‘बाबाक गाम’मे भाषा-समुदायक स्मृति, घरेलू आदत आ पीढ़ी-अनुभवक भिन्न रूप भेटैत अछि। मिथिलेश कुमार झाक मैथिली आन्दोलनपर कएल अध्ययन बतबैत अछि जे आधुनिक कालमे मैथिली अस्मिता भाषिक आ ऐतिहासिक बहसक माध्यमसँ रचल गेल; किन्तु ई कविता ककरो आन्दोलनक घोषणापत्र नहि, निजी–सामुदायिक अपनत्वक काव्य-अभिव्यक्ति अछि। नवीन इतिहासलेखन भाषा-संस्कृतिक एक जाति वा एक धर्मक एकाधिकार मानबाक विरुद्ध सावधान करैत अछि। एहि पृष्ठभूमिमे कवितासभक ‘अपन’ केँ समावेशक प्रश्नसँ पढ़ब उपयोगी अछि: एहि ‘अपन’मे के–के शामिल छथि, आ के अस्पष्ट रहि जाइत छथि?

५. गाम–नगर : स्मृतिक मिठास आ विस्थापनक टीस

‘शहर ओ गेल’ संग्रहक सबसँ तीक्ष्ण रूपकात्मक स्थलसभमे एक अछि। शहर पहुँचब ‘मनुख’ बनबाक आशासँ जुड़ल अछि, जखन कि गामक जीवनकेँ ‘बन-मानुख’ कहल जाएबाक व्यंग्य झलकैत अछि। एहिमे नागर सभ्यताक दम्भ उघड़ैत अछि : मानवताक प्रमाण यदि शहरक मानदण्ड तय करत, तँ ग्रामीण अनुभव स्वतः हीन बनि जायत। कविता एहि प्रतिमानकेँ उलटैत अछि; ‘शहरक पाथर’क आवृत्ति भावनाहीन सामाजिक संरचनाक बिम्ब बनैत अछि। यथार्थक कठोरता पाथरमे संकुचित भऽ जाइत अछि।

‘देख एलौं हम पटना’मे नगर-दर्शनक दृश्यपरकता ‘शहर ओ गेल’क सामान्य रूपककेँ ठोस अनुभव दैत अछि। रास्ता, रेल/यातायात, चौराहा, बौद्धिक वा व्यवहारिक असुविधा—सभ नगरकेँ आकर्षण मात्र नहि, कठिन व्यवस्था बनबैत अछि। कविताक सामाजिक आलोचना दृश्यक तीव्र संचयनसँ बनैत अछि। ‘गाम छूटल’मे पुनरावृत्त ‘फेर आब गाम छूटल’ स्मृतिक लय बनि जाइत अछि, जइमे सुर, रोटी, माटि, दूध आ नेहक छूटब केवल भौगोलिक गमन नहि रहैत। प्रवास एक सामाजिक इन्द्रिय-वियोग बनि जाइत अछि।

रेमण्ड विलियम्स अपन *The Country and the City* मे साहित्यक ग्राम–नगर छविक ऐतिहासिक आदर्शीकरण आ वैचारिक निर्माणक प्रश्न उठबैत छथि। ओहि दृष्टिसँ ‘गाम छूटल’ पढ़ला पर कविता ग्राम्य जीवनक वास्तविक विषमता कतेक देखबैत अछि—ई पूछब आवश्यक अछि। संग्रह स्वयं ‘छोटकी-बड़की’ आ ‘जातिक छाउर’ द्वारा बतबैत अछि जे गाम असीम समानताक ठाम नहि। तैं पुस्तकक भीतर एक कविता दोसरक ग्रामीण स्वप्नकेँ संशोधित करैत अछि। ई अन्तःपाठीय तनाव संग्रहकेँ सरल ग्राम्य-विलापक श्रेणीसँ बाहर लऽ जाइत अछि।

६. श्रम, अभाव आ भातक नैतिक अर्थ

'भातक थारी'मे थारी केवल खानपानक वस्तु नहि, मनुष्यक श्रम-सम्बन्ध आ साझा जीवनक मूल्यांकनक केन्द्र अछि। भोजनक दृश्य लोक-जीवनक सर्वाधिक बुनियादी प्रश्न—ककर श्रमसँ अन्न उपलब्ध अछि, ककरो लेल ई अभाव कोना रहैत अछि—कँ संवेदनात्मक रूपमे व्यक्त करैत अछि। 'कर्मक बाट' श्रमक आदर्शकँ उद्घोषित करैत अछि; बिना कर्म कए फल अर्जित करबाक कल्पनाक स्थानपर निरन्तर क्रियाशीलताक आग्रह अछि। दुनूकँ पढ़ला पर अन्न आ कर्म परस्परकँ अर्थ दैत अछि : भोजनक थारी श्रमक दृश्य परिणाम थिक।

'खेतिहर' बरखा, माटि, खेत आ ग्रामीण जीवनक संग कृषि-आश्रित प्रतीक्षाकँ जोड़ैत अछि। पृथ्वी एतय शोभाक पृष्ठभूमि मात्र नहि; श्रमक परिस्थिति बनैत अछि। 'अगहन पूष' आ 'जाड़'मे ऋतु मौसमक विवरण मात्र बनि नहि रहैत; ऋतु मानवीय परिश्रम, शरीरक अनुभव आ ग्रामीण समय-सरणीक मानक बनैत अछि। एहि ठाम प्रकृतिक प्रति कविक राग श्रमक सामाजिक लयद्वारा अर्थ पबैत अछि।

एहि रचनासभमे श्रमक गरिमा मुख्यतः मनुष्यक दैनिक अनुभव आ संवेदनाक माध्यमसँ व्यक्त भेल अछि। खेतक प्रतीक्षा, ऋतुक दबाव आ अन्नक महत्त्व कविताकँ जीवनक मूर्त धरातल दैत अछि। सामाजिक जीवनक ई संक्षिप्त बिम्बसभ व्यापक आर्थिक प्रश्न दिस संकेत करैत अछि, मुदा कविक प्राथमिक रुचि आँकड़ा वा नीति नहि, श्रमशील मनुष्यक अनुभूति अछि। एहिमे ओहि काव्यपरम्पराक निरन्तरता देखल जा सकैत अछि जतय माटि आ श्रम सौन्दर्यक संग नैतिक मूल्य सेहो ग्रहण करैत अछि।

७. ऋतु, पर्यावरण आ इन्द्रियबोध

'साँझ', 'बसंत', 'फगुआ', 'फागुन', 'गाछ', 'हरित पुलकित प्राण' आ 'गाए आ गंगा' पढ़ला पर प्रकृति-सम्बन्धी एक बहुविध संग्रह-मानचित्र उभरैत अछि। 'फगुआ'मे

रङ्ग आ ऋतु सामूहिक उल्लासक प्रसंग बनैत अछि, तँ 'गाछ'मे वृक्षक जीवनसँ मनुष्यक निर्भरता आ अपनत्वक प्रश्न। 'गाए आ गंगा'क शीर्षक संस्कृति-धर्म आ ग्राम्य जीविकाक जुड़ल छविक संकेत दैत अछि; शीर्षकसँ आगाँ कविता स्वयं प्रकृति आ लोकजीवनक द्वैतकैँ कम करैत अछि।

'हरित पुलकित प्राण'मे हरियरी बाह्य दृश्यसँ आन्तरिक प्राणस्थिति धरि पहुँचेबाक आकांक्षा व्यक्त होइत अछि। परम्परागत रस-ध्वनि विवेचनक रोशनीमे हरियर रंगक प्रत्यक्ष अर्थ वनस्पति अछि; ओकर ध्वनित अर्थ नवजीवन, शान्ति आ संवेदनात्मक पुनरुत्थान भऽ सकैत अछि। ई सम्भावित व्यञ्जना पाठक-विवेचन अछि, कवि द्वारा प्रतिपादित शास्त्रीय सिद्धान्तक तथ्य नहि। 'गाछ' कविता वृक्ष आ मानवीय उपस्थितिक निकटता लेल अधिक प्रत्यक्ष भाषा चुनैत अछि; तैं सभ प्रकृति-कविताक संकेत-प्रक्रिया एकसरिख नहि।

ऋतु, गाछ, खेत आ हरियरीक प्रति एहि अनुरागमे पर्यावरणबोधक एक कोमल आधार भेटैत अछि। रॉब निक्सनक पर्यावरणीय हिंसा सम्बन्धी विचार याद दिलबैत अछि जे प्रकृतिक अनुभवमे सौन्दर्यक संग समाजक असमानता आ संकट देखबाक दृष्टि सेहो आवश्यक होइत अछि। प्रसादक कवितामे प्रकृति प्रायः अपनत्व, खेती आ नवजीवनक रूपमे आबैत अछि; ओकर सौन्दर्य-केंद्रित प्रस्तुति जतेक प्रभावकारी अछि, ओतबे पर्यावरणीय असुरक्षाक सामाजिक पक्ष पाछाँ रहि जाइत अछि। ई अन्तर कविताक सीमाक संग ओकर विशेष काव्याभिमुखता सेहो स्पष्ट करैत अछि।

८. लोकाचार, पाबनि आ सामूहिक स्मृति

'छठि पाबनि'मे अनुष्ठानक आसपास जनसमुदायक सम्मिलित कर्म, घाट आ पाबनिक लय बनैत अछि। कोनो पाबनिकैँ मात्र धार्मिक कर्म मानलासँ कविता अधूरी रहि जाइत अछि: ओकर भीतर परिवार, स्त्री-पुरुषक श्रम, मौसम, नदीक तट आ बोलचालक साझा स्मृति शामिल भऽ सकैत अछि। 'ढोलक बोरवार'मे ताल-बोध आ

गामक लोक-सम्पर्क, तथा ‘फगुआ’मे सामूहिकता आ ॠतु-उल्लास एक-दोसराक निकट पहुँचैत अछि।

एहि स्थानीयता मे परम्पराक दुहरी भूमिका अछि। ओ एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ी धरि सांस्कृतिक संवेदना पहुँचबैत अछि; संगहि रीति-रिवाजक कठोर सीमासभकेँ सही ठहराबऽक आशंका सेहो रहैत अछि। ‘परम्परा’क पाठ एही प्रश्नकेँ सोझाँ आनैत अछि—परम्परा जखन सहायक संस्मरण रहैत अछि तखन जीवनदायिनी, आ जखन मूल्यांकनक एकमात्र दण्ड बनैत अछि तखन संकुचित। संग्रहक भीतर परम्परा आ सामाजिक परिवर्तनक ई सहअस्तित्व महत्त्वपूर्ण अछि।

‘साखी–१’, ‘साखी–२’ आ ‘साखी–३’ अन्तमे राखल गेल अछि। ई कविता-क्रमक अन्त तटस्थ संरचनात्मक घटना नहि : विस्तारित गीतात्मक पंक्तिसभसँ संक्षिप्त नीतिपरक कथनसभ धरि यात्रा रचनाकारक सामाजिक उपदेश-स्वरकेँ तीव्र करैत अछि। ‘साखी’ नाम अपन आपमे लोक-उपदेश आ परम्परागत सूक्तिक स्मरण करबैत अछि; एतय ओकर ऐतिहासिक परम्परा सँ सीधा वंशक्रम सिद्ध करबाक आधार नहि, मुदा रूपगत निकटता स्पष्ट अछि।

९. आत्म, नेह, परिवार आ पीढ़ीक सम्बोधन

संग्रहक सामाजिक चिन्तामे पारिवारिक आ आत्मीय स्वर अनिवार्य अछि। ‘माय हमर नव-कुसुम नहेली’ मातृरूपककेँ नव-कुसुमसँ जोड़ि स्मृतिक कोमलता रचैत अछि। ‘नेह’ बहुत कम पंक्तिमे प्रेमक अनुभूतिकेँ देह, गाम आ सहचर्यक स्पर्शद्वारा रूपायित करैत अछि। ‘पियास’, ‘सुमीता’, ‘सुरभित आनन’ आ ‘मनक बात’ भावकेँ एकान्तर स्वर प्रदान करैत अछि। एतय कविता सामूहिक प्रश्नमे समर्पित होइतहुँ स्नेहक नाजुक क्षण नहि बिसरैत अछि।

‘बौआक उबटन’ घरेलू संस्कार आ सामाजिक परिवर्तनक बीच घर्षण देखबैत अछि। ‘छोटकी-बड़की’ घरक भीतर वा घरसँ सम्बद्ध छोट–बड़ भेदक प्रश्न उठबैत अछि। एहि दुनूकेँ एक संग पढ़बासँ घरेलू संसार एकसाथ प्रेमक आश्रय आ सामाजिक विभाजनक

स्थल बनैत अछि। स्त्री-चित्रण पर पाठ आधारित स्पष्ट निष्कर्ष एतबे अछि जे कतिपय कवितामे मातृत्व, घरेलू सम्बन्ध आ सम्बोधन सशक्त भावात्मक संसाधन अछि; मुदा एहि आधार पर सम्पूर्ण संग्रहकेँ स्त्री-अनुभवक विस्तृत वैकल्पिक आख्यान मानि लेब अनुचित होयत।

'किनको क्यो नहि भेल' मनुष्यक पारस्परिक अविश्वास आ उदासीनताक प्रश्न उपस्थित करैत अछि। 'बिसबास'मे भरोसा व्यक्तिक स्थिति सँ समाजक आधार धरि पसरैत अछि। 'नेह' आ 'बिसबास' दुनू संक्षिप्त होइतहुँ मूल्य-शब्द बनैत अछि; जखन ओ संस्कारित कहावतक स्वरमे नहि, अनुभवक विशेष दृश्य बनि आबैत छथि, तखन काव्यात्मक प्रभाव अधिक गाढ़ होइत अछि।

१०. पीड़ा, संकट आ नश्वरताक अनुभव

'भूमकम्प'मे धरतीक अस्थिरता मनुष्यक जीवनक नाजुकता उजागर करैत अछि। धरकम्पक क्षणमे आश्रय, भय, प्रियजन आ भविष्यक प्रश्न एक संग उभरैत अछि। कविताक भय केवल बाहरी प्रकोप नहि रहि, मनक अनिश्चितताक अनुभव बनि जाइत अछि। प्राकृतिक घटनाक एहि संवेदनात्मक रूपान्तरणसँ सभ्यताक आत्मविश्वास आ मनुष्यक वास्तविक असुरक्षाक बीचक फाँक देखाइत अछि।

'जिनगीक झमेला', 'मन पछताय', 'थकावट', 'अवस्था' आ 'नोर' वैयक्तिक अशान्तिक अलग-अलग मात्रा देखबैत अछि। कतहु विफलताक अनुभूति आत्म-भर्त्सनामे बदलैत अछि; कतहु ओ साझा जीवनक अर्थक खोज जगबैत अछि। 'संतोष' एहि तनावक एक संभावित नैतिक उत्तर अछि। एहि समूहमे जीवन-जिजीविषा आ निराशा अलगा-अलगा खेमामे नहि, परस्पर उपस्थित अछि।

'हर्षित पुलकित प्राण' आ 'आश विहीन हास विहीन'क शीर्षक एक-दोसराक लगभग प्रतिलोम भावभूमि रचैत अछि। संग्रहक भावविश्वक व्यापकता एहि तुलनामे स्पष्ट होइत अछि; मुदा भावक भिन्नता मात्रे गहनता सिद्ध नहि करैत। काव्यक

कसौटी पर देखबाक अछि जे भीतरी मनोवृत्ति ठोस बिम्ब, क्रिया वा परिस्थिति बनि सकैत अछि कि नहि। संग्रहक श्रेष्ठ क्षण एहि रूपान्तरणमे भेटैत अछि।

११. बिम्बविधान : पाथर, दीप, गाछ, थारी आ बाट

कविक बिम्बभण्डार मुख्यतः दैनिक जीवनसँ उठाओल अछि। 'पाथर' नगरीय संवेदनहीनताक, 'गाछ' आत्मीय पर्यावरणक, 'थारी' जीविकाक, 'बाट' कर्म आ गमनक, 'दीप' उज्जर भविष्यक सम्भावनाक रूपमे सक्रिय होइत अछि। संग्रहमे 'दीप' शीर्षकक दूटा स्वतन्त्र कविता अछि। एक्के नामक पुनरागमनसँ प्रकाशक प्रतीकक प्रति कविक विशेष आग्रह स्पष्ट होइत अछि; मुदा दूनूक भावभूमि भिन्न रहलाक कारण ई पुनरुक्ति एकहि अनुभूतिक यान्त्रिक दुहराव नहि अछि।

पहिल 'दीप'मे राति भरि दीप जरेबाक अनुभवक बादो अन्हारक शेष रहब संकेत करैत अछि जे प्रकाशक बाह्य व्यवस्था आ मानवीय अन्तःस्थिति एक नहि। दीपक उजास पर्याप्त होइतहुँ घर/मनक अन्हारक उपस्थिति वैचारिक व्यञ्जना उत्पन्न करैत अछि। दोसर 'दीप' अपेक्षाकृत संक्षिप्त, आत्मिक उजास आ बुझबाक क्रियाक ध्वनि खोलैत अछि। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'मे एहि प्रकाश-बिम्बक संस्कृत सूक्तिसँ संवाद स्थापित होइत अछि। एहि तीन रचनाकेँ एकसाथ पढ़ला पर प्रकाश मूल्य, चेतना आ सामुदायिक सुधारक आवर्ती रूपक बनि जाइत अछि।

'चोरबा सभकिछु लऽ गेल'क आवृत्ति वस्तुक हरणक संग विश्वास, निश्चिन्तता आ सामाजिक सुरक्षाक प्रश्न उभारैत अछि। 'विवाहक अर्थी' शीर्षकहिमे उत्सव आ अन्त्येष्टिक सांस्कृतिक प्रतिलोम उपस्थित करैत अछि। विवाह-जेकाँ सामान्यतः शुभ मानल जाएवला प्रसंगक संग 'अर्थी'क साहचर्य पाठककेँ चकित करैत अछि। एहि विरोधाभासमे आहत सम्बन्ध आ सामाजिक विडम्बनाक सम्भावना एक साथ खुलैत अछि। प्रतीकक एहि टकराहटमे ओहि काव्यशक्तिक परिचय भेटैत अछि जे प्रत्यक्ष नैतिक कथनक तुलना मे अधिक बहुअर्थी अनुभव जगबैत अछि।

१२. भाषा आ लोकलय : पुनरावृत्तिक कला आ ओकर सीमा

संग्रहक काव्य-भाषा मुख्यतः संवाद-सन्निकट मैथिली अछि। 'अपन', 'हमर', 'गाम', 'मन', 'नेह', 'आब', 'जिनगी' सन शब्द कविता-पाठकँ सामान्य जीवनक आसपास राखैत अछि। 'गाम छूटल', 'मिथिला धाम', 'शहर ओ गेल', 'कर्मक बाट' आ 'फागुन'मे मुखड़ा-जेकाँ पंक्तिक लौटब गीतात्मकता निर्मित करैत अछि। एकहि वाक्यक पुनः उच्चारण पाठककँ भावसम्बन्धी स्थायित्व दैत अछि, जखन कि बीचक बिम्ब-विस्तार भावकँ बदलैत अछि।

याकोब्सनक अनुसार काव्यात्मक भाषामे संदेशक स्वरूप स्वयं ध्यानक विषय बनैत अछि। एहि दृष्टिसँ 'निर्मलीक निर्मलतामे'मे ध्वनि-साम्य, 'झूठ'मे पुनरावृत्ति, 'सोंहाँत-अनसोंहाँत'मे शब्द-प्रतिलोम, आ 'फागुन'मे ऋतु-नामक बारम्बार उच्चारण अर्थक निर्माणमे सक्रिय अछि। मुदा पुनरावृत्ति जखन प्रत्येक अन्तराक बाद नव अर्थ नहि जोड़ैत, तखन ओ गीतक सुदृढ़ स्थापत्य बनबाक बदला भावगत स्थिरता सेहो पैदा करैत अछि। ई संग्रहक तकनीकी मूल्यांकनक महत्त्वपूर्ण कसौटी अछि। ... 23

कवितासभमे प्रायः मुक्त विन्यास, लोकगीतक लय, मुखड़ा आ संक्षिप्त दोहासन्निकट वक्तव्यक सहवास अछि। 'साखी' शृंखलाक संक्षिप्त कथनक अभिप्राय उदाहरणार्थ दीर्घ गेय कवितासँ भिन्न अछि। पाठक लेल काव्य-मूल्य केवल छन्दक शुद्ध व्याकरणक प्रश्न नहि; अनुभूतिक अनिवार्यता, भाषिक संयम आ पंक्तिक आन्तरिक तनाव सेहो आवश्यक अछि। 'शहर ओ गेल'क पाथर-बिम्ब, 'गाम छूटल'क मोहक पुनरागमन आ 'दीप'क अन्तर्विरोध एहि समन्वयक समर्थ उदाहरण अछि।

१३. नैतिक स्वर, प्रतिरोध आ उपदेशात्मकताक प्रश्न

'कर्मक बाट', 'संतोष', 'तमसो मा ज्योतिर्गमय', 'झूठ', 'अनसोंहाँत' आ 'साखी' शृंखला मिलि कविक सार्वजनिक नैतिक स्वरकँ स्पष्ट करैत अछि। एहि स्वरमे ई आग्रह निहित अछि जे भाषा केवल निजी प्रसन्नता वा पीड़ाक माध्यम नहि; ओ समाजक

आत्मपरीक्षण करबाक उपकरण सेहो बनय। कथनक प्रायः प्रत्यक्षता पाठकँ असुविधाजनक सामाजिक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।

किन्तु नैतिक उद्घोषणा आ कविताक बहुअर्थक अनुभव एक वस्तु नहि। जखन पंक्ति केवल 'सत्य कहू' वा 'कर्म करू' सन निष्कर्षसँ सन्तुष्ट होइत अछि, पाठकक स्वतन्त्र कल्पना आ विचारक अवसर कम भऽ सकैत अछि। जखन ओही आग्रह 'थारी', 'पाथर', 'गाछ' वा 'दीप'क विशेष स्थितिमे मूर्त होइत अछि, निष्कर्ष अनुभवसँ उद्‌भूत लगैत अछि। एतय भारतीय काव्यशास्त्रक कथितार्थ–व्यञ्जितार्थक भेद उपयोगी अछि : श्रेष्ठ काव्य क्षण ओ अछि जतय शब्द किछु कहैत अछि, आ अपन प्रत्यक्ष कथनसँ अधिक अनुभूति जगबैत अछि।

'जातिक छाउर' समाजक भीतर जाति-सम्बन्धी विभाजनक पीड़ादायक अनुभूति सोझाँ आनैत अछि। 'छोटकी-बड़की' आ 'परम्परा'क संग एकरा पढ़ला पर सामुदायिक जीवनमे अपनत्वक संग भेदक उपस्थिति सेहो स्पष्ट होइत अछि। ई कवितासभ समाजक आदर्शीकरणकँ भीतरसँ प्रश्नांकित करैत अछि; संगहि ईहो देखबैत अछि जे कविक समता-आकांक्षा कतेक ठाम विचारक रूपमे सीधे व्यक्त होइत अछि, आ कतेक ठाम जीवनदृश्यक तनावमे बदलि जाइत अछि।

१४. सामुदायिक 'हम'क शक्ति आ आलोचनात्मक सीमा

संग्रहमे 'हम' आ 'अपन'क बारम्बार उच्चारण निजी आत्मालापकँ सामूहिक संवेदनामे बदलैत अछि। 'अपन मिथिला', 'अपन गाम', 'हमर मन', 'हमर कर्म' सन वाक्यरचना भाषिक निकटता आ सहभागीपनक बोध रचैत अछि। मुदा सामुदायिक सर्वनामक अपन एक आलोचनात्मक प्रश्न सेहो अछि—'अपन'क परिधिमे भिन्न जाति, वर्ग आ जीवन-अनुभवक स्थान कतय अछि? मिथिलेश कुमार झाक मैथिली आन्दोलनक विवेचन आ ललित कुमारक जाति-लिपि सम्बन्धी अध्ययन एहि प्रश्नक ऐतिहासिक जटिलता बुझबैत अछि। प्रसादक कवितामे एहि बहसक व्यवस्थित

इतिहास नहि, मुदा अपनत्व आ विभाजनक संग-साथ काव्यक भीतरहि प्रश्न पैदा करैत अछि।

उदाहरणस्वरूप 'मिथिला धाम'क अपनत्व आ 'निर्मलीक निर्मलतामे'क शिक्षा-सम्बन्धी आशा समाजकेँ जोड़बाक काव्यगत संकेत अछि। दोसर दिस 'झूठ', 'अनसोंहाँत' आ 'छोटकी-बड़की' सामाजिक व्यवहारक पाखण्ड आ भेदकेँ काव्यक भीतर आनैत अछि। सभ मिलि 'हम'क भीतरहि प्रश्न उपस्थित करैत अछि—संग्रहक सबसँ उत्पादक आलोचनात्मक सम्भावना इएह अछि।

१५. अन्तिम 'साखी' : गीतसँ सूक्ति धरि

'साखी–१'क पंक्तिसभमे शिक्षक, सीख, समाज, प्रेम, कर्तव्य आ पाप–पुण्य सम्बन्धी मूल्यवाक्य भेटैत अछि। 'साखी–२' जेठ–कनिष्ठ, सामाजिक व्यवहार, प्रेम आ कर्म पर संक्षिप्त टिप्पणी करैत अछि; 'साखी–३' जीवनक अनिश्चितता आ मनुष्यक कर्म-विवेकक कथनसभ प्रस्तुत करैत अछि। संग्रहक अन्तमे एहि त्रयीकेँ रखबाक निर्णय समग्र रचनाक बौद्धिक आस्वाद बदलैत अछि : पाठक निजी चित्रणसँ सार्वजनिक नीति-वचन धरि पहुँचैत छथि।

कथ्यक सरलता साखीक सम्प्रेषणीयता बढ़बैत अछि, मुदा कवितात्मक अनपेक्षितताक अवसर घटा सकैत अछि। उदाहरणार्थ, कोनो स्पष्ट नैतिक आग्रह तत्काल याद रहि सकैत अछि, जखन कि एक अप्रत्याशित बिम्ब दीर्घकाल धरि प्रश्न बनि रहैत अछि। एहि कसौटी पर संग्रहक गीतात्मक अंश आ साखी-अंश भिन्न सौन्दर्यपद्धति प्रस्तुत करैत अछि; एक-दोसरासँ 'श्रेष्ठ' वा 'निम्न'क सरलीकृत क्रम बनाबऽक आवश्यकता नहि। उद्देश्य अलग अछि, तैं मूल्यांकनक पद्धति सेहो अलग हेबाक चाही।

१६. उपलब्धिसभक समेकित मूल्यांकन

संग्रहक प्रथम उपलब्धि अछि—मिथिलाक भूगोलकेँ अनुभवजन्य भाषामे बदलि देब। गाम, नगर, खेत, गाछ, थारी, पाबनि, शिक्षक, परिवार आ गीत एक साझा काव्य-प्रदेश बनबैत अछि। दोसर उपलब्धि—लोक-भाषाक प्रत्यक्षता; शब्द साधारण रहितहुँ प्रसंग मिलला पर गहन अर्थ पबैत अछि। तेसर उपलब्धि—आत्मीयता आ आत्मालोचनाक सहअस्तित्व; संग्रह अपन जगतकेँ प्रेम करैत अछि, मुदा ओकर अनौचित्य पर मौन नहि रहैत। चारिम उपलब्धि—पुनरावृत्तिक माध्यमसँ पठनीय/गानयोग्य लय। पाँचम उपलब्धि—दीप, पाथर, गाछ, बाट, थारी सन प्रत्यक्ष बिम्बद्वारा प्रश्नकेँ रूपायित करबाक सामर्थ्य।

अपूर्णतासभ सेहो पाठमे स्पष्ट अछि। कतिपय कवितामे भावनात्मक विचार एक-दू पंक्तिमे उद्घाटित होइतहि पुनःपुनः बयान होइत अछि, मुदा नव बिम्ब वा दृष्टि नहि जुड़ैत। कतेक ठाम सामाजिक असन्तोषक लक्ष्य पर्याप्त ठोस नहि; 'समाजक पतन' आ 'मूल्यक पुनर्स्थापन' बीच कारण-सम्बन्ध अस्पष्ट रहैत अछि। कवितासभक स्वर अधिकतर नैतिक–भावनात्मक अछि; वर्गीय हित, जातिगत अनुभव, स्त्रीक विशिष्ट श्रम वा आधुनिक आर्थिक संरचनाक अन्तर-प्रक्रिया पूर्ण रूपेँ विस्तार नहि पबैत। एहि सीमाक उल्लेख कविता पर बाहरी परियोजना थोपब नहि, बरु पाठक स्वतन्त्रता आ सामाजिक दावाक अनुपात जाँचब अछि।

ईहो जरूरी अछि जे काव्यक सामाजिक पक्षकेँ मात्र घोषणाक संख्यासँ न मापल जाए। 'शहर ओ गेल' जे एक पाथर-जेकाँ प्रतिमा दैत अछि, ओ कतेक लम्बा नीति-वचनसँ अधिक तीक्ष्ण प्रश्न उठा सकैत अछि। 'दीप'मे बाहरी उजासक बावजूद अन्हारक टिकि रहब वैचारिक जटिलता उत्पन्न करैत अछि। 'गाम छूटल'क मुखड़ा विस्थापनक भावलेख बनि जाइत अछि। एतय कविता अपन संदेशक 'कहल बात'सँ आगाँ बढ़ैत अछि—एहि बढ़तक क्षणसभ संग्रहकेँ साहित्यिक रूपसँ महत्त्वपूर्ण बनबैत अछि।

१७. निष्कर्ष

‘सोंहाँत-अनसोंहाँत’क केन्द्रीय ऊर्जा अपन समुदायसँ प्रेम करैत ओकर भीतरक असहजताकेँ नाम देबाक प्रयत्नमे अछि। पोथीक शीर्षक व्यक्तिगत रुचि–अरुचिसँ आगाँ बढ़ि समय, स्मृति, शहर, गाम, भाषा, श्रम आ नैतिकताक बीचक द्वन्द्वकेँ संकेत करैत अछि। एक दिस ‘मिथिला धाम’, ‘गामक बात’, ‘फगुआ’ आ ‘गाछ’मे पुनःप्राप्तिक इच्छा अछि; दोसर दिस ‘शहर ओ गेल’, ‘गाम छूटल’, ‘झूठ’, ‘अनसोंहाँत’ आ ‘छोटकी-बड़की’मे टूटन, विसंगति आ आलोचना। ‘दीप’क बिम्ब एहि दुनू संसारक बीच आशाक थिर बिन्दु नहि, अपितु सतत् साधबाक आवश्यकताक स्मारक अछि। ... 23

एहि कविता-संग्रहक मूल्यांकनक न्यायपूर्ण निष्कर्ष प्रशंसाक अतिशयोक्ति वा नकारात्मक सर्वेक्षणसँ नहि निकलत। ई न सम्पूर्ण ग्रामीण इतिहास अछि, न आधुनिक सामाजिक संकटसभक पूर्ण सिद्धान्त; ई एहन मैथिली काव्याभ्यास अछि जाहिमे साधारण भाषा अपन बृहत्तर जीवनार्थक खोज करैत अछि। जखन शब्द बिम्ब बनि उठैत अछि, संग्रहक काव्यशक्ति घनीभूत होइत अछि; जखन विचार सीधे उपदेश भऽ जाइत अछि, तखन ऊर्जाक घनत्व घटैत अछि। एहि दू प्रवृत्तिक साझा उपस्थिति एहि ग्रन्थक विशिष्ट आलोचनात्मक पहचान अछि।

आगाँ चलि डॉ. प्रसादक अन्य कविता-संग्रहसभक संग ‘सोंहाँत-अनसोंहाँत’क तुलना, लोकधुनक निकट रचनासभक श्रव्य आस्वाद आ क्षेत्रीय पाठक-स्वीकृतिक अध्ययन मैथिली गीतात्मकताक नव आयाम खोलि सकैत अछि। तथापि एहि संग्रहक अपन स्वतन्त्र साहित्यिक पहचान एखनहि स्पष्ट अछि : ई गामक प्रति मोहकेँ सामाजिक विवेकसँ जोड़ैत अछि, आ सहज मैथिली भाषाक भीतर राग, विडम्बना, प्रश्न तथा नैतिक प्रतिरोधक सहअस्तित्व सम्भव बनबैत अछि। ... 23

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

प्रसाद, शिव कुमार। सोंहाँत-अनसोंहाँत। निर्मली, सुपौल, बिहार: पल्लवी प्रकाशन, २०१८। ISBN 978-93-87675-72-8। ... 23

Ānandavardhana. The Dhvanyāloka of Ānandavardhana with the Locana of Abhinavagupta. Translated by Daniel H. H. Ingalls, Jeffrey Moussaieff Masson, and M. V. Patwardhan. Edited by Daniel H. H. Ingalls. Harvard Oriental Series 49. Cambridge, MA: Harvard University Press, 1990.

Bakhtin, M. M. The Dialogic Imagination: Four Essays. Edited by Michael Holquist. Translated by Caryl Emerson and Michael Holquist. Austin: University of Texas Press, 1981.

Jakobson, Roman. “Closing Statement: Linguistics and Poetics.” In Style in Language, edited by Thomas A. Sebeok, 350–377. Cambridge, MA: MIT Press, 1960.

Jha, Mithilesh Kumar. Language Politics and Public Sphere in North India: Making of the Maithili Movement. Oxford: Oxford University Press, 2018. https://doi.org/10.1093/oso/9780199479344.001.0001

Kumar, Lalit. “Caste, Script and Language: The Curious Case of Maithili Print.” Society and Culture in South Asia 12, no. 1 (2026): 82–99. https://doi.org/10.1177/23938617251337694

Nixon, Rob. Slow Violence and the Environmentalism of the Poor. Cambridge, MA: Harvard University Press, 2011. https://doi.org/10.4159/harvard.9780674061194

Paiker, Ufaque. “Shadings of Languages: A Study of Maithili Marṯīya in Nineteenth-Century Bihar.” Asian Ethnology 85, no. 1 (2026). https://doi.org/10.18874/ae.85.1.04

Williams, Raymond. The Country and the City. New York: Oxford University Press, 1973.

अध्याय 3

राग-विराग : लोकस्मृति, भाषिक अस्मिता आ सामाजिक नैतिकता ... 41

डॉ. शिव कुमार प्रसादक कविता-संग्रहक विस्तृत आलोचनात्मक अध्ययन

सारांश

डॉ. शिव कुमार प्रसादक 'राग–विराग' प्रेम आ विरक्ति, जीवनानुभव आ आत्मपरीक्षण, मिथिलाक स्मृति आ ओकर बदलैत सामाजिक यथार्थक बीच एकटा सघन काव्यात्मक संवाद रचैत अछि। संग्रहक बयासी कवितामे मैथिली भाषाक आत्मीयता, परिवार आ परम्पराक स्नेह, बाढ़ि आ पर्यावरणीय असुरक्षा, शिक्षा-व्यवस्थाक विडम्बना, गामक भौतिक-सांस्कृतिक संसार आ सार्वजनिक आचरणक नैतिक संकट परस्पर गुंथल भेटैत अछि। एहि आलेखक प्रतिपाद्य ई अछि जे संग्रहमे 'राग' केवल अनुरक्ति नहि, सामाजिक सम्बन्धक निर्माणकारी शक्ति अछि, जखन 'विराग' ओकर अन्धता, स्वार्थ आ पाखण्डक विरुद्ध विवेकक रूप धारण करैत अछि। 'राग–०१', 'राग–०२', 'राग–विराग', 'मैथिली', 'मिथिला', 'बाढ़ि' शृंखला, 'हमरामे हमर गाम'क दुनू खण्ड, 'नवका शिक्षा', 'बेटी', 'मटरा माय', 'बड़हन' आ 'कविता'क निकट पाठनसँ लोकवाचिक लय, सूचीकरण, सम्बोधन, व्यंग्य, विरोध-युग्म आ स्मृतिक संरचनाक वैशिष्ट्य उद्घाटित होइत अछि। लेख एहि उपलब्धिसभक संग स्त्री-पात्रक सीमित स्वायत्तता, अतीतक आदर्शीकरण, व्यापक नैतिक सामान्यीकरण आ किछु कविताक उपदेशात्मक समापनक सीमा सेहो चिन्हित करैत अछि। एहि द्विमुखी मूल्यांकनसँ 'राग–विराग' समकालीन मैथिली कवितामे आत्मीयता आ सामाजिक आलोचनाक महत्त्वपूर्ण संगम रूपमे सोझाँ अबैत अछि।

बीजशब्द : मैथिली कविता; राग–विराग; लोकस्मृति; भाषिक अस्मिता; पर्यावरणीय आलोचना; बाढ़ि; व्यंग्य; स्त्री-अनुभव; मुक्तछन्द।

१. प्रस्तावना : स्नेहक संसार आ विडम्बनाक चेतना

डॉ. शिव कुमार प्रसादक 'राग–विराग' मैथिली कविताक एहन संग्रह अछि जाहिमे मनुष्यक निजी व्यथा, सामाजिक सम्बन्ध आ सामूहिक उत्तरदायित्व एक-दोसरसँ पृथक नहि रहैत अछि। पल्लवी प्रकाशन, निर्मलीसँ २०२४ मे प्रकाशित एहि संग्रहक बयासी कविताक बहुलता केवल विषयक विविधता नहि, अनुभूतिक अनेक दृष्टि बनबैत अछि। 'गणपति'क भक्तिभावसँ 'कहू हम झूठ कहै छी?'क प्रतिवादी स्वर धरि कवि कखनहुँ विनम्र आराधक, कखनहुँ ग्रामीण स्मृतिक संवाहक, कखनहुँ परिवारक सदस्य आ कखनहुँ सार्वजनिक जीवनक कटु पर्यवेक्षक बनि सोझाँ अबैत छथि। एहि भूमिका-परिवर्तनक बीच एकटा स्थिर आग्रह अछि : मनुष्यक आचरणकेँ मनुष्यक दुःख आ गरिमाक कसौटीपर परखल जाय।

संग्रहक समर्पण 'मैथिली माय'क पीड़ाकेँ मिथिलाक भौगोलिक आ भाषिक अन्तर्कलह, गुटबाजी, वर्चस्ववाद आ व्यक्तिस्वार्थसँ जोड़ैत अछि। एहिसँ कविता-संसारक आत्मीयता आरम्भहिसँ संघर्ष-मुक्त नहि रहैत; स्नेहक भीतर घावक चेतना प्रवेश करैत अछि। भूमिकामे कवि जीवनक सुख-दुख, प्राकृतिक प्रकोप, प्रशासनिक व्यवहार आ सामाजिक विद्रूपताकेँ रचनाक प्रेरणा मानैत छथि। कविताकेँ 'जिनगीक आलोचना' कहबाक हुनकर आग्रह एहि संग्रहक एकटा आधारभूत सौन्दर्यबोध खोलैत अछि : करुणा आ प्रतिवाद विरोधी नहि, एक्के नैतिक अनुभवक दू स्वर अछि।

एहि शोधक केन्द्रमे चारि परस्पर सम्बद्ध प्रश्न अछि। पहिल, रागक आत्मीयता विरागक विवेकमे कोना रूपान्तरित होइत अछि? दोसर, मैथिली भाषाक पक्षधरता आ मिथिलाक ग्राम्यस्मृति अपन सामाजिक समावेशन आ बहिष्करणक प्रश्नसँ कोना जूझैत अछि? तेसर, आपदा, शिक्षा, प्रवासन आ घरेलू सम्बन्धक कविता व्यक्तिगत

वेदनाकेँ सार्वजनिक प्रश्नमे कोना बदलैत अछि? चारिम, कविक मुक्तछन्द, लोकवाचिक लय, पुनरुक्ति, सूचीकरण आ व्यंग्य कथ्यकेँ कतेक प्रभावी ढङ्गसँ कविता बनबैत अछि? एहि प्रश्नसभक उत्तर कविता-स्थितिक सूक्ष्म विवेचनमे निहित अछि।

२. आलोचनात्मक प्रतिमान : ध्वनि, पर्यावरण आ ग्राम्यस्मृति

'राग–विराग'क अर्थ-निर्माणमे प्रत्यक्ष कथनक संग ओ अर्थ सेहो सक्रिय अछि जे कविता बिम्ब, अन्तर्विरोध, सम्बोधन आ मौनक माध्यमसँ प्रकट करैत अछि। एहि कारणेँ एकर व्यंग्यकेँ मात्र आरोपक सूची आ स्मृतिकेँ केवल अतीतप्रेम मानलासँ रचनाक कलात्मक स्वरूप ओझराइत अछि। 'बाढ़ि' शृंखलामे पीड़ितक देह आ प्रशासनक निश्चिन्तता, 'बड़हन'मे विदाक चुप्पी, 'राग–०१'मे करुणा आ परपीड़ासुखक एकसाथ उपस्थिति—ई सभ भावार्थक अतिरिक्त स्तर खोलैत अछि। आलोचनाक कसौटी एहि बहुअर्थकताकेँ पहचानब, आ जतए कविता एकटा निष्कर्षपर अकस्मात् ठमकि जाइत अछि, ओतए ओकर सीमा रेखांकित करब सेहो आवश्यक अछि।

आनन्दवर्धनक ध्वनि-विचार कथित अर्थ आ व्यंजित आशयक अन्तर समझबाक एकटा उपयोगी दृष्टि दैत अछि; आधुनिक मैथिली कवितापर प्राचीन काव्यवर्गीकरण आरोपित करब एहि अध्ययनक उद्देश्य नहि। लॉरेन्स बुएलक पर्यावरणीय आलोचना 'मिथिला', 'जनमभूमि' आ बाढ़ि-विषयक कवितामे प्रकृतिसँ मनुष्यक निर्भरता आ हिंसक हस्तक्षेपक प्रश्न उभारबामे सहायक अछि। रेमण्ड विलियम्सक ग्राम–नगर सम्बन्धी विवेचन ग्राम्यस्मृति आ प्रवासनक संघर्षकेँ पढ़बाक तुलनात्मक भूमि दैत अछि। मैथिली साहित्यक इतिहास-लेखनमे जयकान्त मिश्र आ देवकान्त झाक कार्य आधुनिक रचनाकेँ व्यापक साहित्यिक परम्परामे रखबाक पृष्ठभूमि दैत अछि; मुदा प्रसादक कविताक अर्थ आ मूल्यांकन अन्ततः हुनक अपन रचनासँ निर्धारित होइत अछि।

३. रचना-विन्यास : परस्पर गुंथल पाँच संवेदनात्मक क्षेत्र

संग्रहक आरम्भ भक्तिपरक रचनासँ होइत अछि, मुदा ओ केवल अनुष्ठानक कविता नहि रहि जाइत। 'मैथिली', 'मिथिला' आ 'जनमभूमि' भाषिक आ स्थानिक लगावक प्रश्न उठबैत अछि; 'बाढ़ि'क चारि कविता प्राकृतिक आ संस्थागत संकटक संग जूझैत अछि; 'शिक्षाक संसार' आ 'नवका शिक्षा' सार्वजनिक शिक्षाक विडम्बना उद्घाटित करैत अछि; 'बेटी', 'मटरा माय', 'माए' आ 'बड़हन' गृहजीवनक ऊष्मा आ दूरीकेँ रूप दैत अछि। रचनाक क्रम एहि विषयसभकेँ अलग-अलग कोठरीमे नहि राखैत। एक काव्यधाराक प्रश्न दोसर धारामे घुरि अबैत अछि, आ एहि पुनरागमनसँ संग्रहक आन्तरिक एकता बनैत अछि।

४. रागक बहुअर्थता : प्रेम, प्रवृत्ति आ आत्मसंयम

'राग–०१'मे संगीतसँ आरम्भ होइत 'राग' शब्द जल्दीए भाषा, माटि, संस्कार, वात्सल्य, आँगन आ दुआर धरि पहुँचि जाइत अछि। 'रागेसँ ने वसुधा कुटुम्ब बनै छै' पंक्ति अनुरागकेँ सम्बन्धक रचनात्मक शक्ति मानैत अछि। मुदा कविता तुरन्त एकटा चकित करनिहार मोड़ लैत अछि : 'दोसरा के दुख देख हँसि' सकबाक प्रवृत्ति सेहो रागक अन्तर्गत आबि जाइत अछि। एहि उलटावसँ राग नैतिक रूपसँ स्वतः निष्कलुष नहि रहैत। मनुष्य जकरामे लगाव रखैत अछि, ओकर मूल्यांकन आवश्यक अछि। कविताक वास्तविक गाम्भीर्य एही आत्मपरीक्षणमे अछि।

'राग–विराग' पहिल 'राग'क भाव-विस्तारक भीतर सँ संयमक प्रश्न निकालैत अछि। 'रागसँ विराग', 'कामसँ निष्काम' आ 'आसक्तिसँ निरासक्ति' सन विरोध-युग्म जीवनक आध्यात्मिक अनुशासनक क्रम रचैत अछि। कवि स्वयं स्वीकारैत छथि जे एहि क्रमकेँ कहब सरल, जीवनमे उतारब कठिन अछि। कृष्णक अनेक नाम द्वारा अन्तमे एकत्वक धार्मिक प्रतिपादन अबैत अछि। एतए विराग भावना-शून्यता नहि, भावना पर नैतिक अधिकार अर्जित करबाक आकांक्षा बनैत अछि। यद्यपि आध्यात्मिक

समाधान व्यापक सामाजिक संघर्षक जटिलताकेँ पूर्णतः सम्बोधित नहि करैत, तकरा संग्रहक आन्तरिक दर्शनसँ अलग कऽ पढ़बो असम्भव अछि।

'राग–०२' एहि आत्मीयता-चिन्तनकेँ मातृभाषाक सार्वजनिक क्षेत्रमे लऽ अबैत अछि। भाषा 'भावक संवाहिका' अछि, 'कुलक बपौती नहि'—एहि विचार द्वारा कवि जन्म, जाति आ वंशपर आधारित भाषिक स्वामित्वक आलोचना करैत छथि। असम, जनकपुर आ मधुपुरक उल्लेख मैथिली भाषिक संसारक विस्तृत भूगोलक संकेत अछि। आम, लताम, मखान आ पानक वस्तुगत निकटता भाषा-प्रेमकेँ केवल घोषणामूलक नहि रहय दैत; ओकरा देह, स्वाद, धरती आ सम्बन्धक संग जोड़ैत अछि। पहिल रागक व्यापक मानवीयता एतए भाषिक समावेशनक आग्रह बनैत अछि।

'मनक हाट' आ 'मनक अकास' मनुष्यक अन्तरंग जीवनक दू भिन्न रूपक रचैत अछि। पहिलमे हाट सुख-दुख, नव-पुरान आ स्मृतिक भेंटक स्थान अछि; दोसरमे आकाशक विस्तारक बीच इन्द्रधनुष, विपत्तिक मेघ आ टूटैत आशाक गति उपस्थित अछि। मन एक्के समयमे वस्तुसंग्राहक आ खुलल सम्भावना अछि। 'सपना'मे 'जिनगीक सपना' आ 'सपनाक जिनगी'क विनिमय दृष्टिसँ एहि अन्तरक बौद्धिक विस्तार होइत अछि : कल्पित जीवन आ जीवनक सक्रिय आकांक्षा एक वस्तु नहि। एहि कवितासभमे दर्शन उपदेशक अपेक्षा बिम्ब आ शब्द-क्रमक अन्तरसँ प्रकट होइत अछि। ... 4

५. मैथिली आ मिथिला : मातृभाषाक स्नेहसँ सार्वजनिक अस्मिता धरि

'मैथिली'मे कवि अपन साहित्यिक कर्मकेँ निजी प्रतिष्ठाक बदला भाषिक दायित्वक रूपमे देखबैत छथि। 'मिथिलीक बेटा छी / माय हमर मैथिली' मातृभाषाकेँ पोषण आ ऋणस्वीकारक सम्बन्धमे रखैत अछि। अन्तिम प्रश्न—'मैथिलीमे लिखि पढ़ि / किनकर हक छिनै छी?'–एक दिस भाषिक परिश्रमक गरिमा स्थापित करैत अछि, दोसर दिस साहित्यिक समाजमे अविश्वास आ प्रतिस्पर्धाक आहत चेतनाकेँ उजागर करैत अछि। ई स्वर व्यक्तिगत प्रतिवादक ऊर्जा रखैत अछि; मुदा भाषा-संसाधन, शिक्षण आ प्रकाशनक संस्थागत असमानता सेहो एहि संघर्षक व्यापक परिवेश होय सकैत अछि।

‘अपन मैथिली’मे दूर-दूरक यात्रा, अनेक भाषाक संसर्ग आ अपन मातृबोलीक अनुपस्थिति एकटा गतिशील आत्मपरिचय बनबैत अछि। कवि असम, बंगाल, पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात, केरल आ कर्नाटकक अनुभवक पाछाँ ‘मैथिल मीठ बोलिया’क स्मृति राखैत छथि। एहि कविता आ ‘राग–०२’क बीच सूक्ष्म तनाव अछि : एकठाम अपन बोलीक अनुपम आत्मीयता, दोसरठाम भाषाक कुलगत स्वामित्वक निषेध। दुनू स्वरकेँ साथ रखलापर मातृभाषा-प्रेमक समावेशी रूप उभरैत अछि, जाहिमे बहुभाषी जीवनक अनुभव अपन भाषासँ अनुरागकेँ कमजोर नहि करैत।

‘मिथिला’मे एकटा पीपलक गाछ सम्पूर्ण सामाजिक आकांक्षाक केन्द्र बनैत अछि। ओकर छाँहमे केवल मैथिल नातेदार नहि, ‘समस्त मानव’, पशु-पक्षी आ चिड़ै सभ लेल ठाम अछि। गाछ एहि अर्थमे राजनीतिक समावेशनक संग पर्यावरणीय सहजीवनक प्रतीक बनैत अछि। एकर प्रतिपक्ष ‘जनमभूमि’मे उपस्थित अछि, जतए गाछहीनता, जलहीनता, प्लास्टिकक ढेर, टूटैत पारस्परिकता आ धनक प्रधानता सामुदायिक क्षरणक चिह्न बनैत अछि। पहिल कविता आदर्शक चित्र रचैत अछि, दोसर वर्तमानक विघटनपर प्रश्न उठबैत अछि। ई जोड़ी कविता-संग्रहक संवेदनात्मक केन्द्रकेँ स्पष्ट करैत अछि।

भाषिक विवाद आ सामाजिक अन्तर्कलहक जे संकेत समर्पणमे अछि, ओकर सकारात्मक प्रत्युत्तर ‘राग–०२’क वंशाधारित अधिकार-विरोध आ ‘मिथिला’क सम्मिलित छाँहमे भेटैत अछि। तथापि कविता कखनहुँ सार्वजनिक समस्याकेँ व्यक्तिगत दोषसँ मात्र बुझबाक दिस झुकैत अछि। साहित्यिक वैधता एहि बातमे अछि जे कविक व्याकुलता समाजक व्यापक नैतिक प्रश्न उठबैत अछि; ओकरा कियो विशिष्ट व्यक्ति वा संस्थाक विरुद्ध स्वतः प्रमाणित आरोप नहि मानि सकैत।

६. बाढ़िक चारि स्वर : विपत्ति, सार्वजनिक नैतिकता आ पर्यावरणीय न्याय

‘बाढ़ि–०१’क काव्य-स्थान अचानक उजड़ल घरक शोकसँ बनैत अछि। भसिआएल जीवनक बीच पिता अथवा परिजनक देह भेटबाक विलम्ब आपदाक समयकेँ मरणक

क्षणसँ बहुत दूर धरि खींचि लैत अछि। आगि, पानि आ काल एक-दोसरसँ प्रतिस्पर्धा करैत विपत्तिक छवि बनबैत अछि। मुदा कविताक अन्तिम चिन्ता केवल प्रकृतिक भयावहता नहि; 'दीन-हीन लोक'क लगातार कानब अछि। एहि पंक्तिमे प्राकृतिक संकटक बीच सामाजिक असमानता एकटा मानवीय प्रश्न बनि सोझाँ अबैत अछि।

'बाढ़ि–०२'मे उजड़ल डीह, उपड़ल गाछ, भूखल देह आ सड़कपर ठाढ़ मनुष्य राहत-व्यवस्थाक दृश्यसँ टकराइत छथि। पीड़ित लोककेँ 'मनुज, प्रकृत, प्रशासन आ अखबार'क खेलौना कहबाक भाव राजनीतिक प्रदर्शनक आलोचना अछि। देखने, चिन्हने आ कहल जेनिहार आपदाक बीच वास्तविक भूखल मनुष्यक स्वतन्त्र आवाज कतऽ अछि—कविता एहि प्रश्नसँ पाठककेँ असहज करैत अछि। एकरा कारणेँ कविक करुणा केवल निजी शोक नहि, संस्थागत उत्तरदायित्वक प्रश्न बनैत अछि।

'बाढ़ि–०३'मे खेत-पथार, भात-चूल्हा, दूध-दही आ घरक सामानक नष्ट होयब घरेलू अर्थव्यवस्थाक विघटनक ठोस रूप अछि। बाढ़ि एतए जलक आवेग नहि, भोजन, श्रम, आश्रय आ भविष्यक एक्के घरी छिनि जेबाक अनुभव अछि। घरेलू वस्तुसभक नाम विपत्तिक व्यापक अर्थकेँ स्थानीय विवरणमे बदलैत अछि। एहन वस्तुगतता कविताकेँ अमूर्त 'प्रकृति-प्रकोप'क विलापसँ अलग करैत अछि।

'बाढ़ि–०४' करुणाक स्वरकेँ नाटकीय व्यंग्यमे फेरैत अछि। हाथ डोलाबैत नेता, समझाइश दैत अधिकारी, टूटैत बाँध आ 'फेर बनौतै फेरो टूटतै'क आवर्तन सहानुभूतिक संस्थागत अभिनय खोलैत अछि। 'काल्हि कहलकै सभ ठीक छै / रातिये मे की भेलै?' सन प्रश्न प्रशासनक दावाक सोझाँ ग्राम्यअनुभवक सत्य राखैत अछि। एहि कविताक उपलब्धि घटना-विवरण मात्र नहि, सार्वजनिक विश्वासक टूटनकेँ काव्यलय बनबेनाइ अछि। चारू कविताक सामूहिक क्रम शोकसँ व्यंग्य धरि पहुँचैत आपदाक नैतिक भूगोल रचैत अछि।

'अपना लेल' एहि आलोचनाक दिशाकेँ बदलि दैत अछि। गाछ-वृक्ष काटनाइ, पोखरि-झाँखरि भरनाइ, बाँधपर मनमानी करनाइ आ बादमे सरकारकेँ दोष देनाइ—कवि एहि व्यवहारसभमे समाजक अपन सहभागिता देखबैत छथि। 'गाय'मे कृषि-

जीवनक सहचरी पशुक सेवा भोगलाक बाद ओकर उपेक्षा मनुष्यक उपयोगितावादी दृष्टिपर प्रश्न बनैत अछि। एहि दू कविता द्वारा प्रकृति आ पशुजगत मानवीय सुविधाक निष्क्रिय संसाधन नहि रहैत। यद्यपि कवितासभ वैज्ञानिक बाढ़ि-कारणक सम्पूर्ण विवेचन नहि करैत, मनुष्यक पर्यावरणीय उत्तरदायित्वक प्रति जागरण अवश्य रचैत अछि।

७. 'हमरामे हमर गाम' : स्मृतिक वस्तु-संसार आ प्रवासनक पीड़ा

'हमरामे हमर गाम–१'मे गाम एकटा रिक्त भावसूचक नाम नहि; ओ कलमी आमक जाति, गाछीक दिशा, पियर आ लाल फर, दादीक आँचर, परिवारक सम्बोधन आ नेनपनक खेलक विशिष्ट संसार अछि। आमक जातिसभक बारम्बार नाम लेनाइ स्मृतिक सूचीकरण मात्र नहि, स्थानिक अनुभूतिक विस्तार अछि। स्वाद, गन्ध आ देहगत स्मरणक कारणेँ बचपनक गाम पाठकक सोझाँ वर्तमान अनुभव बनि ठाढ़ होइत अछि। एतए वस्तु कविता-शिल्पक साधन अछि : ओकर बिना 'माय-गाम'क आत्मीयता अपारदर्शी आ सामान्य रहि जाइत।

'हमरामे हमर गाम–२'मे गामक स्थानिकता पोखरि-इनार, ब्रह्मस्थान, मन्दिर, कुम्हारक चाक, माटिक बासन, जामुनक गाछ आ मखानक श्रमसँ आकार पबैत अछि। कुम्हारक घर आ वस्तु-निर्माणक विवरण गामकेँ शुद्ध रमणीय दृश्य होयसँ बचबैत अछि; ओ कारीगरी आ उत्पादनक संसार बनैत अछि। तथापि स्मृतिक एहि संसर्गमे अनेक जातीय-आर्थिक सम्बन्धक विस्तृत विश्लेषण स्वतः उपस्थित नहि होइत। स्मरण हमरा सोझाँ गामक एकटा आत्मीय रूप प्रस्तुत करैत अछि; सामाजिक इतिहासक समस्त रूप नहि। ई अन्तर कविता समझबाक लेल आवश्यक अछि।

'अपन आँगन' एहि ग्राम्यस्मृतिक भीतर प्रवासन आ उत्तराधिकारक कटु प्रश्न घुसबैत अछि। परदेसमे बनल महल, छुटैत आँगन, जीर्ण दीवार, वृद्ध मायक प्रतीक्षा आ जमीन बेचबाक द्वन्द्व—ई सभ ग्राम–नगर सम्बन्धकेँ आर्थिक नैतिकता आ पारिवारिक दायित्वक तनावमे बदलैत अछि। 'करी कोन योग'मे नगरक चकाचौंध आ

गाममे छूटल वृद्धजनक अनुभव एहि तनावकेँ लोककथनक तीक्ष्णतासँ कहैत अछि। एहि प्रसंगमे ग्राम्यसमाजकेँ अनिवार्य रूपसँ निष्कलुष आ शहरकेँ अनिवार्य रूपसँ भ्रष्ट मानब उचित नहि; कविताक केन्द्र मनुष्यक सम्बन्धमे उपजल असन्तुलन अछि।

'हमरामे हमर गाम–१'क बचपन जाति आ ऊँच-नीचक कटु स्मृतिसँ अधिक स्नेह आ सामूहिक खेलक आत्मीय दृश्य उपस्थित करैत अछि। एहि निर्मल स्मृतिमे साहित्यिक सत्य अछि, मुदा एकरा सम्पूर्ण ग्राम्यसमाजक ऐतिहासिक सामाजिक समरसताक निष्कर्ष बनाओल नहि जा सकैत। कविताक प्रथम पुरुष स्मरण विशेष अनुभवक विश्वसनीय संवेदनात्मक रूप अछि, समस्त समुदायक अनुभवक पर्याय नहि। कविक आत्मीय संसारक सम्मान करैत एहि दृष्टिगत सीमा चिन्हित करब आलोचनाक अनिवार्य उत्तरदायित्व अछि।

८. शिक्षाक विडम्बना : प्रमाणपत्र, पाठशाला आ सार्वजनिक वचन

'शिक्षाक संसार'मे शिक्षा-व्यवस्थाक प्रति क्षोभ असंगत पशु-उपमा आ अतिरञ्जनक माध्यमसँ प्रकट होइत अछि। छात्रवृत्ति, औपचारिक उपस्थिति, राजधानीक भाषण आ वास्तविक शिक्षणक बीच कविता गम्भीर फाँक देखबैत अछि। 'बात तँ बुझियौ'मे बेरोजगार पढ़ल-लिखल युवक आ योजना-व्यवस्थाक दलाली एहि फाँककेँ सामाजिक जीवनक व्यापक संकट बनबैत अछि। एहन व्यंग्यक प्रभाव वस्तुनिष्ठ आँकड़ाक अभावमे घटैत नहि; ओकर कार्य व्यवस्था द्वारा निर्मित विसंगतिक नैतिक अनुभूति जगाएब अछि। तथापि एकर अतिरञ्जित रूपकेँ विद्यार्थी वा शिक्षक-वर्गक शाब्दिक चित्रण मानब अनुचित होयत।

'नवका शिक्षा–०१'मे 'एम.ए.' आ 'बी.ए.' शिक्षण आ जीविकाक बीच टूटल सम्बन्धक विडम्बनात्मक चिह्न अछि। 'नवका शिक्षा–०२'मे आवर्तित प्रश्न—पढ़नाइ जँ आवश्यक नहि रहि गेल, तखन परीक्षा, विद्यार्थी आ शिक्षाक सम्बन्ध की?—कविताकेँ लोकवाचिक प्रतिवादक लय दैत अछि। साइकिल, पोशाक आ अन्य योजनाक उल्लेख सुविधाक नैतिक विरोध नहि, ओकरा शिक्षणक स्थानापन्न बना

देबाक आशंकाकेँ उद्घाटित करैत अछि। ई अन्तर महत्त्वपूर्ण अछि; अन्यथा व्यंग्य सामाजिक अवसरविस्तारक विपरीत अर्थ ग्रहण कऽ सकैत अछि।

एहि शृंखलाक शक्ति ई अछि जे संस्था अपन घोषित उद्देश्यसँ कतेक दूर अछि, से प्रश्न कविता-भाषामे उठैत अछि। तथापि शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक, प्रशासन आ रोजगार-बाजारक परस्पर भिन्न उत्तरदायित्व कखनहुँ एक्के दोषारोपणमे समेटा जाइत अछि। व्यंग्यक ऊर्जा एहि संक्षेपणसँ बढ़ैत अछि, मुदा समाजक संरचनात्मक जटिलता ओझरा सकैत अछि। संग्रह एहि प्रकारेँ नीतिशास्त्रीय समाधानक बदला नैतिक असन्तोषक काव्यात्मक अभिव्यक्ति दैत अछि।

९. बेटी, माए आ बहिन : स्नेह, देखभाल आ स्त्रीक स्थान

'बेटी'मे बेटी अँगनाक हँसी, घरक साज आ मानवीय अपनत्वक आश्रय बनैत अछि। कविता बेटीक अस्तित्वकेँ वरदान कहैत पितृसत्तात्मक अवमूल्यनक प्रतिपक्षमे एकटा स्नेहपूर्ण घोषणाकेँ सोझाँ अनैत अछि। मुदा एहि प्रेमक केन्द्र बहुत दूर धरि परिवारक सुख-सज्जा रहैत अछि। बेटीक स्वतन्त्र इच्छा, शिक्षा, निर्णय आ सार्वजनिक जीवन एतए स्पष्ट स्वर नहि पबैत। एहि अन्तरसँ कविता कमजोर नहि, अपितु ओकर प्रेमक सामाजिक सीमा पहिचानल जा सकैत अछि।

'मटरा माय' वृद्ध मातृत्वक परित्यक्त श्रमक हृदयस्पर्शी आख्यान अछि। देहरीपर ठाढ़ माय, कठुआएल देह, पुत्रक पढ़ाइ-नोकरीक लेल कएल त्याग आ जीवनक अन्तिम चरणक अकेलापन—ई सभ देखभालक अवैतनिक श्रमकेँ कविता बनबैत अछि। पुत्रक बढ़ल समृद्धिक संग मायसँ बढ़ैत दूरी कविक नैतिक प्रश्न अछि। मुदा परिवारमे परिवर्तनक समस्त कारण नववधूक उपस्थिति पर डालि देब स्त्री-पात्रक जटिलता घटा सकैत अछि। पुत्रक अपन निर्णय आ प्रवासनक बाध्यता सेहो एहि नैतिक सम्बन्धक हिस्सा अछि। एहि द्वन्द्वकेँ चिन्हित कएलापर कविताक सामाजिक अभिप्राय अधिक स्पष्ट होइत अछि।

‘माए’ आ ‘माँ’ मातृस्नेहक भिन्न भावदिशा प्रस्तुत करैत अछि। पहिल कविता स्मरण आ अनुपस्थितिक भाषा रचैत अछि, दोसर रक्षणक छविमे आँचर, मेघ आ कोराक सहारा खोजैत अछि। ‘बड़हन’मे बहुत दिन बाद भेटल भाइ-बहिनक आनन्द आ बिछुड़बाक घड़ीक चुप्पी भाषाक असमर्थतासँ जन्मल गहन प्रभाव बनि जाइत अछि। कविताक अन्त ‘भाइ चुप / बहिन चुप’क निःशब्दता पर ठहरैत अछि। संग्रहमे जतए अनेक रचना अपना अर्थकेँ स्पष्ट कऽ दैत अछि, ओतए ‘बड़हन’ मौनकेँ अर्थ-सृष्टिक साधन बनबैत अछि।

‘जोड़ि ले सिनेह आइ’ एहि पारिवारिक संसारक भीतर स्त्रीक निवासाधिकारक अस्थिर प्रश्न रखैत अछि। जन्मक घर, विवाहक घर आ अन्ततः बेटाक घर—स्त्रीक अपन कहबाक स्थान कतऽ बचैत अछि? बेटीकेँ आलोक कहनिहार कविता आ एहि स्थायी घर-विहीनताक प्रश्नकेँ एकसाथ पढ़ला पर संग्रहक स्त्री-दृष्टि एकरेखीय नहि रहैत। एहिमे प्रेम अछि, मुदा अधिकारक असमानता सेहो अछि; सम्मान अछि, मुदा सम्बन्धक निर्णायक संरचना बहुधा स्त्रीक हाथमे नहि।

१०. भक्ति आ पाखण्ड : लोकअनुष्ठानक दू मुख

‘गणपति’, ‘चौरचन’ आ ‘दुखहरणी’मे लोकपर्व आ देवी-आराधनाक सामुदायिक ऊष्मा अछि। अरिपन, आँगन, दही, चन्द्रदर्शन आ प्रार्थना धार्मिक अनुभवकेँ घर-परिवारक साझा लय बनबैत अछि। मुदा ‘पूजा’मे भव्य पण्डाल आ प्रदर्शनक बीच श्रद्धाक निष्प्राणता पर व्यंग्य अछि; ‘पूजाक महत्ता’मे धार्मिक ध्वनि आ सच्चा आराधनाक बीच दूरी रेखांकित होइत अछि। एहि प्रकारेँ कवि भक्ति आ धार्मिक व्यापारकेँ समान वस्तु नहि मानैत छथि। धार्मिक संस्कारक सांस्कृतिक जीवन आ सार्वजनिक पाखण्डक आलोचना एहि संग्रहमे सहअस्तित्वमे अछि।

‘हे हरि चरण कमल बलिहारी’मे स्तुतिपरक ध्रुवपदक भीतर लालच, सूदखोरी आ असत्यक संसार प्रवेश करैत अछि। भक्ति-भाषाक द्वारा व्यवहारक अधार्मिकता उद्घाटित करबाक ई छद्मस्तुति कविता लेल तीक्ष्ण व्यंग्यक सम्भावना खोलैत अछि।

एहि रचनासभक नैतिक निष्कर्ष अछि जे अनुष्ठानक बाहरी सफलता मनुष्यक करुणा वा सत्यनिष्ठाक सुनिश्चित प्रमाण नहि होइत। एक दिस भक्तिरस, दोसर दिस विडम्बना—ई द्विस्वर संग्रहक राग–विराग संरचनाक धार्मिक रूपान्तरण अछि।

११. काव्यभाषा : मुक्तछन्द, ध्रुवपद, सूचीकरण आ निःशब्दता

रचनासभक प्रमुख आधार मुक्तछन्द अछि, मुदा एकर लय निरन्तर समान नहि रहैत। 'राग–०१'मे 'राग' शब्दक आवृत्ति विचारक क्रमिक विस्तार बनबैत अछि; 'राग –विराग'मे विरोध-युग्म बौद्धिक संक्षिप्तता दैत अछि; 'नवका शिक्षा–०२' आ 'कहू हम झूठ कहै छी?'मे आवर्ती प्रश्न जनभाषाक नाटकीय प्रतिवाद बनैत अछि। 'बड़हन'मे ध्रुवपदक बदला मौन प्रमुख अर्थसाधन अछि। एहि भिन्न शिल्प-समाधानसँ स्पष्ट होइत अछि जे कविक रचना-प्रक्रिया केवल विचारक सूची देबाक नहि, भिन्न प्रसंगक लेल भिन्न वाचिक गति खोजबाक प्रयास अछि।

बोलचालक मैथिली एहि संग्रहक महत्त्वपूर्ण कलात्मक साधन अछि। 'नेना-भुटका', 'अँगना-दुआर', 'डीह', 'पोखरि', 'मखान', 'अरिपन', 'भौजी' आ 'काकी' सन शब्द स्थानिक सम्बन्धक ठोस वातावरण तैयार करैत अछि। शब्दक स्थानीय रंग स्वयं साहित्यिक गुण नहि; ओकर काव्यमूल्य तखन बनैत अछि जखन ओ दृश्य, क्रिया आ स्मृतिक अर्थव्यवस्थामे सक्रिय होइत अछि। 'हमरामे हमर गाम'मे आम आ माटिक बासनक नाम एहि कारणेँ महत्त्वपूर्ण अछि जे ओ नष्ट होइत लोकज्ञान आ सम्बन्ध-मानचित्रकेँ पुनर्स्थापित करैत अछि। 'बाढ़ि–०३'मे घरेलू वस्तुक अनुक्रम विनाशक आर्थिक-सांस्कृतिक मोल स्पष्ट करैत अछि।

सम्बोधन सेहो एतए अर्थनिर्माणक प्रमुख विधि अछि। 'हे भगवती'क प्रार्थना, 'हलो जिनगी'क आत्मालाप आ 'कहू हम झूठ कहै छी?'क सार्वजनिक प्रश्न पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे खींचि अनैत अछि। 'कोना छी?'मे साधारण बातचीत आ धार्मिक आचरणक विसंगति एक्के मौखिक मंचपर आ जाइत अछि। एहि वाचिक प्रविधिसँ गीत, गप्प, उलाहना, व्यंग्य आ प्रार्थनाक दूरी घटैत अछि। क्लीनथ ब्रूक्स द्वारा

काव्यक आन्तरिक तनावपर देल जोर एहि अर्थ-ब्रह्मकेँ विवेचित करबाक एकटा तुलनात्मक दृष्टि दैत अछि; किन्तु मैथिली लोकभाषाक अपन लय आ सामाजिक सन्दर्भ एहि आलोचनाक प्राथमिक आधार रहबाक चाही।

'दाँत बीच जीभ सन' रचना कविक काव्यशास्त्र-संबन्धी आत्मविडम्बनाक महत्त्वपूर्ण उदाहरण अछि। रस, अलंकार, छन्द, ध्वनि, वक्रोक्ति, कथा आ उपन्यासक नाम लैत कवि अपन सीमितता कहैत छथि। मुदा एहि आत्मविनयमे साहित्यिक आडम्बर, आक्रामक पाण्डित्य आ प्रतिष्ठाक प्रतिस्पर्धापर कटाक्ष सेहो छिपल अछि। कविता एकसाथ आत्मस्वीकृति आ सामुदायिक व्यंग्यक काम करैत अछि। तथापि विनम्रताक घोषणा कविताकेँ रूप-सौष्ठवक आलोचनासँ मुक्त नहि करैत; कविता अन्ततः अपन शब्द, ध्वनि आ संरचनामे परखल जाइत अछि।

१२. कविता आ जिनगी : रचनाक आत्मचेतना

'कविता'मे कवि स्पष्ट करैत छथि जे कविता निरपेक्ष आकाश वा धरतीसँ स्वतः उत्पन्न नहि होइत; ओकर जन्म 'भावानुभूतिक असह्य संवेदना'सँ होइत अछि। जीवनक उजास, अन्हार, हँसी, असफलता आ जिजीविषा एहिमे एकसाथ उपस्थित अछि। ई रचना संग्रहक आरम्भिक कवि-वक्तव्यक अन्तःप्रतिध्वनि अछि : कविता स्वायत्त सजावट नहि, भोगल जीवनक संवेदनात्मक पुनर्निर्माण अछि। तथापि एहि दावाक अर्थ मात्र प्रत्यक्ष अनुभवक नकल नहि; वस्तु रचना तखने बनैत अछि जखन अनुभव शब्दक भीतर नवा लय आ अर्थ ग्रहण करैत अछि।

'जिनगी–०१' जीवनक हिंसक लोभ आ शोषणकेँ कठोर स्वरमे व्यक्त करैत अछि; 'जिनगी–०२' सुख, श्रम, निर्धनता, शारीरिक कठिनाई आ अहंकारक अनेक अवस्थामे जीवनक रूप देखबैत अछि। 'लोके सन लोक'मे 'भोगी रागमे / योगी विरागमे'क विरोध मनुष्यक अलग-अलग प्रवृत्तिक सामाजिक बोधक रूपमे अबैत अछि। एहि रचनासभक संयुक्त निष्कर्ष ई अछि जे जीवनसँ अनुराग अन्यायसँ

समझौता नहि, बरु ओकर पहचानक आधार बनि सकैत अछि। यथार्थ, अनुभूति आ नैतिक प्रतिक्रिया एहि संग्रहक रचनादर्शनक तीनटा महत्त्वपूर्ण घटक अछि।

१३. उपलब्धि, अन्तर्विरोध आ साहित्यिक मूल्य

संग्रहक प्रथम उपलब्धि लोकजीवनक ठोस विवरणकेँ भावात्मक शक्ति प्रदान करब अछि। आमक भिन्न जाति, कुम्हारक चाक, मखान, माटिक घैल, डुबैत डीह, मायक देहरी आ भाइ-बहिनक बिछोह मनुष्यक संसारकेँ दृश्य, स्पर्श आ स्मृतिक गहिराई दैत अछि। दोसर उपलब्धि सार्वजनिक नैतिक प्रश्नक निर्भीक प्रस्तुति अछि : शिक्षा, राजनीतिक प्रदर्शन, प्राकृतिक विपत्ति, भाषिक संकीर्णता आ पारिवारिक उपेक्षापर कविता खुलि कऽ सवाल करैत अछि। तेसर उपलब्धि बोलचालक मैथिलीक लयकेँ साहित्यिक विधान बनबेनाइ अछि। विशेषतः 'बाढ़ि–०४'क विडम्बना, 'राग–०१'क आवृत्ति आ 'बड़हन'क मौन अलग-अलग काव्यसाधनक प्रभाव सिद्ध करैत अछि।

एहि उपलब्धिसभक संग सीमा सेहो स्पष्ट अछि। नैतिक व्याकुलता कखनहुँ 'सभ' आ 'कोनो' सन व्यापक संकेतक द्वारा भिन्न सामाजिक भूमिकाकेँ एक्के दोषक कोठरीमे राखि दैत अछि। गामक स्मृति अनेक ठाम स्नेहमय अतीतक आदर्श निर्मित करैत अछि, जाहिमे जाति आ वर्गक विषमता अपेक्षाकृत ओझरायल रहि सकैत अछि। किछु कविताक अन्तिम पंक्तिसभ बहुअर्थक सम्भावनाकेँ खुलल छोड़बाक बदला निष्कर्ष स्वयं सुना दैत अछि। जखन एहि कवितासभक तुलना 'बड़हन'क मौन आ 'मनक अकास'क अनुत्तरित प्रश्नसँ करैत छी, तखन अनुभवक सूक्ष्मता आ कथनक आग्रहक अन्तर अधिक स्पष्ट होइत अछि।

स्त्री-अनुभवक चित्रणमे माए आ बेटीक सम्मानजनक स्थिति अछि, मुदा हुनकर अपन इच्छा, श्रमक सामाजिक मूल्य आ निर्णयक अधिकार सभ ठाम समान गहराईसँ नहि उभरैत। 'जोड़ि ले सिनेह आइ' एहि सीमाकेँ भीतरसँ चुनौती दैत अछि। पर्यावरणक कविता प्रकृति-विनाश आ नागरिक दायित्वक महत्त्वपूर्ण प्रश्न रखैत अछि, मुदा जटिल कारण-सम्बन्धक ठाम नैतिक आचरणपर अपेक्षाकृत अधिक जोर दैत

अछि। ई कमी कविता लेल अनिवार्य दोष नहि; मुदा जतए अनुभव विशिष्ट समाजक व्यापक सच बनबाक आकांक्षा रखैत अछि, ओतए आलोचनाकेँ पाठक विकल्प आ अनुपस्थित अनुभवसभक पूछताछ करब आवश्यक अछि।

१४. निष्कर्ष : अनुरागक नैतिक परीक्षा

'राग–विराग'क केन्द्रीय द्वन्द्व अनुरक्ति आ त्यागक सरल विरोध नहि, स्नेहक नैतिक परीक्षा अछि। भाषा, गाम, धरती, परिवार, भक्ति आ मनुष्यक प्रति राग कवि-मनकेँ जीवनसँ जोड़ैत अछि; पाखण्ड, स्वार्थ, शोषण आ असमानताक प्रति विराग एहि लगावकेँ आलोचनात्मक दृष्टि दैत अछि। बाढ़िक पीड़ा प्रशासनिक तमाशा पर सवाल बनैत अछि; भाषा-प्रेम 'कुलक बपौती'क निषेधमे रूपान्तरित होइत अछि; ग्राम्यस्मृति लोकज्ञानक अनेक लुप्त होइत चिह्नकेँ भावमय रूपमे बचबैत अछि। एहि तीन दिशामे संग्रहक महत्त्व विशेष उभरैत अछि : निजी अनुभूति सामुदायिक उत्तरदायित्वक भाषा ग्रहण करैत अछि।

संग्रहक रचना-सफलता सर्वत्र समान नहि। कतिपय स्थानपर तीव्र नैतिक आग्रह बिम्बक स्वतन्त्रता घटबैत अछि, मुदा श्रेष्ठ कवितासभमे वस्तु आ अनुभूति एक-दोसरकेँ आलोकित करैत अछि। बाढ़िक चारि स्वर शोकसँ नागरिक प्रतिवाद धरि पहुँचैत अछि; 'हमरामे हमर गाम'क विस्तृत सूचीकरण स्थानिक स्मृतिक सांस्कृतिक अर्थ खोलैत अछि; 'बड़हन'क मौन शब्दक सीमा देखबैत अछि। एहिसँ 'राग–विराग' मैथिली कवितामे केवल आत्मकथ्यात्मक भावोद्गार नहि, लोकजीवनक संवेदना, भाषिक अस्मिता, पर्यावरणीय बेचैनी आ सार्वजनिक नैतिकताक बहसक एकटा विशिष्ट योगदान बनैत अछि।

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

प्रसाद, शिव कुमार. राग–विराग. प्रथम संस्करण. निर्मली, सुपौल : पल्लवी प्रकाशन, २०२४. ISBN 978-93-93135-80-3।

आनन्दवर्धन. Dhvanyāloka of Ānandavardhana. सम्पादन, अनुवाद आ टिप्पणी : K. Krishnamoorthy. धारवाड़ : Karnatak University, 1974.

Buell, Lawrence. The Future of Environmental Criticism: Environmental Crisis and Literary Imagination. Malden, MA : Blackwell, 2005.

Brooks, Cleanth. The Well Wrought Urn: Studies in the Structure of Poetry. New York : Harcourt, Brace, 1947.

Jha, Devakanta. A History of Modern Maithili Literature: Post-Independence Period. New Delhi : Sahitya Akademi, 2004.

Mishra, Jayakanta. History of Maithili Literature. New Delhi : Sahitya Akademi, 1976.

Williams, Raymond. The Country and the City. New York : Oxford University Press, 1973.

अध्याय **4**

पघलैत हिमखंड : हिन्दी-मैथिली काव्यानुवाद आ स्त्री-चेतना ... 57

रजनी छाबड़ाक कविता आ डॉ. शिव कुमार प्रसादक मैथिली अनुवादक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

सारांश

रजनी छाबड़ाक हिन्दी कविता-संग्रहक डॉ. शिव कुमार प्रसादक मैथिली रूपान्तर 'पघलैत हिमखंड' (२०१८) भावानुभूति आ सांस्कृतिक पुनर्सृजनक विशिष्ट कृति अछि। संग्रहक तिरसठि कवितामे प्रेम, स्मृति, ठंढा पड़ैत सम्बन्ध, भरोसा, आत्मपरिचय, स्त्रीक अस्मिता, परिवार, शिक्षा आ भाषिक उत्तराधिकारक प्रश्न एक-दोसरासँ जुड़ैत अछि। प्रस्तुत अध्ययनक केन्द्र ओ काव्यात्मक प्रक्रिया अछि, जाहिमे हिन्दी कविताक भाव-संरचना मैथिलीक सम्बोधन, वाक्य-लय, लोक-बिम्ब आ नैतिक संवेदनाक सहारे नवा श्रव्य आ दृश्य रूप लैत अछि। याकोब्सनक अन्तरभाषिक अनुवाद, नाइडाक समतुल्यता, तूरीक लक्ष्य-संस्कृति, वेनूटीक स्वदेशीकरण, लेफ़ेवेरक पुनर्लेखन आ शेरी साइमनक स्त्रीवादी अनुवाद-दृष्टिक आलोकमे चयनित कविताक निकट-पाठ कएल गेल अछि। 'नारी', 'एकटा हेराएल जनानी', 'राजभाषा', 'विद्याक बाट', 'घरक पाग', 'हिमखंड' आ 'अहाँक थाती' सन कविता संग्रहकेँ केवल व्यक्तिगत अनुभूतिक काव्य नहि रहय दैत; ई सामाजिक मूल्य, पहिचान आ उत्तराधिकारक बहस खोलैत अछि। शीर्षक-कविताक हिन्दी आ मैथिली रूपक सममुख पठनसँ बिम्बक भावान्तर आ मैथिलीक संवेद्य मुहावराक भूमिका स्पष्ट होइत अछि। ग्रन्थक मुख्य उपलब्धि आत्मीय सम्बोधन आ मानवीय अनुभवक सहज मैथिली अभिव्यक्ति अछि; कतिपय रचनामे कथनक सूक्तिपरकता आ बिम्बक सीमित विस्तार ओकर कलात्मक चुनौती अछि। ... 57

बीजशब्द : पघलैत हिमखंड; रजनी छाबड़ा; शिव कुमार प्रसाद; हिन्दी–मैथिली अनुवाद; काव्यानुवाद; लक्ष्य-संस्कृति; स्त्री-अस्मिता; स्वदेशीकरण; निकट-पाठ। ... 57

१. प्रस्तावना : अनुवादक भीतर कविता आ कविताक भीतर नव भाषा

कविताक अनुवाद-यात्रामे शब्दक अर्थ निश्चल नहि रहैत। एक भाषाक भाव दोसर भाषामे प्रवेश करैत काल स्वर, लय, सम्बोधन, स्मृति आ सांस्कृतिक पहिचानक नव परिस्थिति प्राप्त करैत अछि। रजनी छाबड़ाक कवितासँ मैथिलीक 'पघलैत हिमखंड' धरि ई यात्रा ओहने बिम्बक यात्रा अछि, जकर शीतलता, ताप, दूरी आ सिनेह अनुवादित शब्दक भीतर नवा ढङ्गसँ अनुगुञ्जित होइत अछि। मूलक आशयक प्रति उत्तरदायित्व आ मैथिलीक रचनात्मक स्वाधीनता दूनू अनुवादक मूल्याङ्कनमे महत्त्वपूर्ण अछि। काव्यात्मक समतुल्यता केवल शब्द-समानता नहि; ओ अर्थ, ध्वनि, संस्कार आ पाठकीय अनुभवक संयुक्त सम्बन्ध अछि। ... 57

रजनी छाबड़ाक हिन्दी कविताक डॉ. शिव कुमार प्रसाद कृत ई मैथिली रूपान्तर २०१८ ई. मे पल्लवी प्रकाशन, निर्मलीसँ प्रकाशित भेल। तिरसठि कविताक क्रम 'मधुबन' सँ आरम्भ भऽ 'बिसबासक मूर्ति' धरि जाइत अछि। आरम्भमे बचपन, प्रकृति आ मनक उन्मुक्तता; बीचमे परिचय, नारी, घर, भाषा आ जीवन-संघर्ष; अन्तमे स्मृति, थाती आ विश्वासक नव निर्माण—ई विषयगत विस्तार संग्रहकेँ एकटा विशिष्ट भाव-लय देइत अछि। कवितासभक क्रमकेँ यान्त्रिक कथानक मानबाक अपेक्षा ओकर परस्पर सन्दर्भ आ आवर्तन देखब अधिक सार्थक अछि।

कवयित्रीक 'अनुसृजन : साहित्यिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान' आ अनुवादकक 'आमुख आ आभार' एहि काव्य-प्रयासक दू महत्त्वपूर्ण वैचारिक प्रवेश-द्वार छथि। कवयित्री अनुवादमे सांस्कृतिक आदान-प्रदानक सम्भावना देखैत छथि; अनुवादक मैथिली पाठकक सम्मुख कविताकेँ आत्मीयतापूर्वक प्रस्तुत करैत छथि। भूमिका-द्वयक

ई स्वर कविताक शिल्पगत विवेचनक विकल्प नहि, बल्कि ओकर साहित्यिक अभिप्रायक पृष्ठभूमि प्रदान करैत अछि।

एहि संग्रहक विशेषता ई जे एकहि कवितामे घरक सहज बोली आ व्यापक मानवीय प्रश्न मिलैत अछि। 'अहाँ', 'हम', 'जिनगी', 'रौद' आ 'पाग' सन शब्द मैथिली पाठककेँ निकट अनैत अछि; 'नारी', 'राजभाषा' आ 'विद्याक बाट' सन कविता एहि निकटताकेँ सामाजिक विचारक क्षेत्रमे विस्तृत करैत अछि। समीक्षा लेल तें अर्थ-संप्रेषणक सहजता, काव्यात्मक सघनता, स्त्रीक स्वर आ सांस्कृतिक पुनर्स्थापनाक सूक्ष्म अन्तरकेँ एक साथ देखबाक आवश्यकता अछि।

२. काव्य-जगतक रूपरेखा : विषय, संवेदना आ दृष्टि

'पघलैत हिमखंड'क तिरसठि कविता आकार, वक्ता-स्थिति आ भाव-प्रवृत्तिक दृष्टिसँ विविध अछि। 'मधुबन'क स्मृति-सम्बद्ध प्रकृति, 'उन्मुक्त'क मुक्तिक अभिलाषा, 'परिचय'क आत्म-पुनर्रचना, 'नारी'क अस्तित्वगत आग्रह, 'एकटा हेराएल जननी'क घरेलू अदृश्यता, 'राजभाषा'क भाषिक चेतना, 'विद्याक बाट'क सामाजिक आकांक्षा, 'घरक पाग'क पारिवारिक गरिमा, 'हिमखंड'क सम्बन्ध-रूपक आ 'बिसबासक मूर्ति'क पुनर्निर्माणात्मक आशा—ई सभ मिलि संग्रहक मूल संवेदनात्मक मानचित्र बनबैत अछि। किछु कविता अत्यन्त संक्षिप्त कथनसँ अर्थ खोलैत अछि, तँ किछु कविता दृश्य, समय आ परिस्थितिकेँ विस्तृत कऽ अपन प्रभाव रचैत अछि। ... 57

संग्रहक बहुतेक कविता मुक्तछन्दमे अछि। पंक्ति-विच्छेद, पुनरुक्ति, सम्बोधन, प्रत्यक्ष प्रश्न, मानवीकरण आ प्रकृतिकेँ मनोभावक रूपक बनायब एकर प्रमुख शिल्पगत साधन अछि। एहि आधारपर एकरा केवल 'सरल भाषा'क कविता कहि छाड़ि देब उचित नहि; सरलताक भीतर सामाजिक असन्तोष, स्मृतिक विखण्डन आ आशाक नैतिक आग्रह परस्पर उलझल अछि। विशेष महत्त्व एहि बातक अछि जे निजी अनुभवसँ उठल कथन अनेक ठाम सामूहिक जीवनक प्रश्न बनि जाइत अछि।

कवितासभक अन्तर्मनमे विरोधी भाव एक संग जीबैत छथि—स्नेह आ दूरी, घर आ अकेलापन, स्मृति आ विस्मरण, परम्परा आ आत्मनिर्णय, विश्वास आ संदेह। कवयित्रीक अनुभवक सर्जनात्मक विस्तार एहि विरोधक कारण सम्भव बनैत अछि। मैथिली अनुवादमे ई द्वन्द्व प्रायः सर्वनाम, साधारण शब्द आ दृश्यात्मक बिम्बक सहारे व्यक्त होइत अछि। जेठ प्रश्नक जटिलता कविताकेँ अर्थपूर्ण बनबैत अछि, ओहि प्रश्नकेँ अति शीघ्र सूक्तिमे बदलि देबाक प्रवृत्ति कतहु-कतहु ओकर बहुअर्थिताकेँ सीमित सेहो करैत अछि।

कविता आ अनुवादक एहि संयुक्त काव्य-भूमिमे मूल कसौटी अछि—कथन अपने भीतर अनुभवक तनाव, ध्वनिक संगति आ भावक नवा दृष्टि पैदा करैत अछि कि नहि। 'हिमखंड'मे ठंढ आ रौदक द्वन्द्व जतेक मूर्त अछि, 'एकटा हेराएल जनानी'मे अनदेखल श्रमक यथार्थ ततबे ठोस अछि। एकर विपरीत, जखन जीवन-मूल्य बिना आन्तरिक रूपान्तरणक प्रत्यक्ष उपदेश रूपमे उपस्थित होइत अछि, तखन कविता सुन्दर विचार तऽ कहैत अछि, मुदा सदिखन समतुल्य कलात्मक गहनता नहि अर्जित करैत।

३. अनुवाद-सिद्धान्त आ मैथिली काव्यक रचनात्मकता

३.१ अन्तरभाषिक अनुवाद आ काव्यक अनुवादनीयता

रोमन याकोब्सनक 'अन्तरभाषिक अनुवाद'क संकल्पना अनुसार एक भाषाक संकेत दोसर भाषाक संकेत-व्यवस्थामे व्याख्यायित होइत अछि। मुदा काव्यक अर्थ केवल शब्दकोशीय समानार्थक पद नहि होइत; भाषा-ध्वनि आ संरचना अतिरिक्त सम्बन्ध बनबैत अछि। 'स्नेह', 'सिनेह', 'रौद', 'उष्णता', 'हिमखंड' आ 'बरफक पहाड़' समान अर्थ-क्षेत्रमे रहलहुँ अलग संवेदनात्मक परिदृश्य रचि सकैत अछि। एतए प्रश्न ई

नहि जे एक शब्दक 'सही' शब्द की; प्रश्न ई अछि जे परिवर्तित शब्द पाठकक अनुभवमे कोन अतिरिक्त शरीर देलक।

३.२ नाइडा : रूपक निकटता बनाम प्रभावक समतुल्यता

यूजीन नाइडा रूपात्मक निकटता आ पाठकीय प्रभावक समतुल्यताक बीच महत्त्वपूर्ण अन्तर देखबैत छथि। एहि दृष्टिसँ प्रश्न उठैत अछि जे कविता अपन बिम्बक भाव-संरचना केना बचबैत अछि आ अनूदित भाषामे पाठक तक ओकर भावात्मक ऊर्जा केना पहुँचैत अछि। 'हिमखंड'मे विश्वासक तापकेँ 'रौद'क मूर्त अनुभव देल गेल अछि; एतए भाव-समतुल्यता केवल अमूर्त अर्थक पुनर्व्याख्या नहि, संवेदनात्मक नवान्तरक सम्भावना सेहो बनैत अछि। समान अर्थ-क्षेत्रमे भिन्न शब्द अपन सांस्कृतिक तापमान आ ध्वन्यात्मक स्पर्शक कारण अलग काव्य-प्रभाव उत्पन्न करैत अछि।

३.३ तूरी : लक्ष्य-संस्कृतिक वास्तविक पाठ

गिदोन तूरीक वर्णनात्मक अनुवाद-अध्ययन अनूदित रचनाकेँ लक्ष्यभाषाक साहित्यिक संस्कृतिमे सक्रिय पाठ रूपेँ देखैत अछि। एहि आलोकमे 'पघलैत हिमखंड'क महत्त्व एहि बातमे अछि जे हिन्दी कविताक भाव मैथिली कविताक भाषिक व्यवहार आ सांस्कृतिक संकेतक भीतर कतेक आत्मीयता सँ बसैत अछि। शीर्षक, रचनाक क्रम, कवयित्रीक वक्तव्य, अनुवादकक भूमिका आ कविता भीतरक 'हम–अहाँ'क संवाद—ई सभ मैथिली साहित्यिक संसारमे एहि संग्रहक उपस्थितिकेँ बनबैत अछि। ... 57

३.४ वेनूटी आ लेफ़ेवेर : स्वदेशीकरण, दृश्यता आ पुनर्लेखन

वेनूटीक स्वदेशीकरण–विदेशीकरणक अवधारणा हिन्दी आ मैथिलीक निकट सम्बन्धक बावजूद स्वरक भिन्नता पहिचानबामे सहायक अछि। 'रौद', 'पाग', 'जिनगी' आ 'अहाँ' सन प्रयोग हिन्दी मूलक भावकेँ मैथिली जीवनानुभवक समीप

अनैत अछि; मुदा शब्द-निर्वाचनक ई सहजता अनुवादकक सर्जनात्मक हस्तक्षेपकेँ अदृश्य नहि करैत। लेफ़ेवेरक पुनर्लेखन-दृष्टि एहि प्रक्रियाक दोसर पक्ष खोलैत अछि : अनुवाद मूल रचनाक नव साहित्यिक जीवन अछि, जाहिमे प्रकाशन, पाठकीय संस्कार आ लक्ष्यभाषाक अभिव्यक्तिक सम्भावना अर्थ-निर्माणमे भाग लैत अछि। ई पुनर्लेखन स्वेच्छाचारिता नहि, उत्तरदायी काव्यात्मक रूपान्तरण होयबाक चाही।

३.५ लिंग-सापेक्ष अनुवाद : स्वर, सत्ता आ सामाजिक बोझ

शेरी साइमन अनुवादकेँ लिंग-निरपेक्ष शब्द-व्यवहार नहि, सांस्कृतिक हस्तक्षेपक सम्भावना मानैत छथि। एही दृष्टिसँ 'नारी', 'आजुक नारी', 'एकटा हेराएल जननी' आ 'घरक पाग'क पाठ करैत काल स्त्री-पात्रक प्रतिनिधित्व, बोलबाक अधिकार, शरीरक नामकरण आ घरक भीतरक श्रम-व्यवस्था परस्पर देखल जा सकैत अछि। काव्य-वक्ता सदिखन कवयित्री स्वयं छथि—ई निष्कर्ष नहि; मुदा कविता ककरा बोलबा दैत अछि आ ककर जीवनकेँ विवेचनक केन्द्र बनबैत अछि, ई निश्चय पूछल जा सकैत अछि।

३.६ व्यावहारिक भाषिक मूल्याङ्कन

बेकर आ जोन्सक समकालीन अनुवाद-अध्ययन अर्थक शब्दीय स्तरसँ आगाँ वाक्यरचना, पाठ-संसक्ति, प्राग्मैटिक संकेत आ अनुवाद-नैतिकता धरि जाइत अछि। एहि लेखमे 'अहाँ', 'हम', 'ओ', 'जननी', 'घर', 'आस', 'सपना', 'बिसबास' जेकाँ आवृत्त पदकेँ एकल अर्थ-इकाई रूपेँ नहि, सम्बोधन, सम्बन्ध आ समाज-विन्यासक संयुक्त चिह्न रूपेँ देखल गेल अछि। 'अहाँ'क आदरसूचक भंगिमा केतबा कवितामे वक्ता–श्रोता दूरीकेँ घटबैत अछि आ केतबामे प्रश्नक नैतिक दायित्व बढ़बैत अछि—ई प्राग्मैटिक स्तरक विशेष संकेत अछि।

४. प्रकृति, स्मृति आ विश्वासक बिम्ब-व्यवस्था

४.१ प्रकृति एकटा बाहरी दृश्य नहि, अन्तर्मनक प्रयोगशाला

'मधुबन'क आरम्भमे बचपनक चाह, जीवनक मधुरता आ स्मृतिक फेर घुमि अबैक भाव अछि। आरम्भक हरियाली मात्र वर्ण्यवस्तु नहि, समयक पुनर्गठनक साधन अछि। एहिसँ संग्रहक बादक 'कुहेस', 'लहर', 'आसक चिड़े' आ 'हिमखंड' धरि प्रकृति-बिम्बक एकटा भावात्मक कड़ी बनैत अछि। कोनो बिम्ब ठोस प्रकृति-चित्र रहि नहि जाइत; ठंढा बर्फ विश्वासक प्रकाशसँ पघलैत अछि, चिड़ै आकांक्षा बनैत अछि, लहर सम्बन्धक प्रवाहक रूप धारण करैत अछि।

एहि प्रकार प्रकृतिकेँ स्थानीय भूगोलक सचित्र दस्तावेज मानि लेब अनुचित होयत। 'बरफक पहाड़' मैथिलीभाषी नदी-मैदानक प्रत्यक्ष दृश्य नहि सेहो भऽ सकैत अछि; मुदा 'रौद'क प्रयोग तात्त्विक तापकेँ दिनचर्याक स्पर्श प्रदान करैत अछि। अनुवाद सफल ओहि समय लगैत अछि जखन प्रकृतियुक्त बिम्ब नव भाषामे अर्थक सहज विस्तार प्राप्त करैत अछि। एतए बिम्बक कार्य बाह्य जगतक नकल सँ बेसी भावक दृश्यात्मक विन्यास अछि।

४.२ आशा–हताशा आ विश्वासक अविरल आवर्तन

'बिसबास', 'साँचक धरातल', 'साँसक संग', 'सतरंगा आनन्द' आ 'बिसबासक मूर्ति'मे मनुष्यक भविष्यक प्रश्न विश्वास आ आत्मबलक रूपमे उपस्थित अछि। 'बिसबास'क कथन पाठककेँ प्रत्यक्ष सम्बोधित करैत अछि; 'साँसक संग'मे श्वास, सम्बन्ध, गीत आ क्षणिक लय जीवनक व्यापकता रचैत अछि; 'सतरंगा आनन्द'मे रंगक बहुलता ऊर्जाक अभिलाषा बनैत अछि। आशा एकदम बाधारहित भाव नहि; ओकर पृष्ठभूमिमे स्मृतिक टूटन, एकान्त आ सम्बन्धक अस्थिरता विद्यमान अछि।

एही कारण आशावादी कथन कविता-क्रमक संकटपूर्ण अनुभवक प्रतिपक्ष रूपेँ पढ़ल चाही।

एहिसँग एक आलोचनात्मक भेद राखब आवश्यक अछि। जहाँ कवितामे अनुभव बिम्ब वा कथानुभूतिक माध्यमसँ व्यक्त होइत अछि, ओतय भावक विश्वास पैदा होइत अछि; जतय पाठ सीधा जीवनोपदेश बनि जाइत अछि, ओतय काव्य-दबाव कम भऽ सकैत अछि। 'बिसबास' वा 'सतरंगा आनन्द'क कतिपय खण्डक तात्पर्य स्पष्ट अछि, मुदा स्पष्टता अपने-आप काव्य-गुणक पर्याप्त प्रमाण नहि। पाठकक भावात्मक सहभागिता लेल प्रत्यक्ष निर्देश आ कलात्मक संकेतक बीच सन्तुलन महत्त्वपूर्ण अछि।

४.३ आत्म-खोज, स्मृति आ अस्तित्वक अस्थिर धरातल

'परिचय' परिचयकेँ स्थिर नामक बदला परिवर्तनीय अन्तःस्थितिक रूपमे पढ़बाक अवसर दैत अछि। 'हम केतए छलौं'मे स्मृतिक भीतर अपना स्थान नहि भेटबाक बेचैनी अछि; 'मनक कनकोआ'क उड़ान मनक अतल विस्तारक बिम्ब बनैत अछि; 'जिनगीसँ की चाहे छी'मे वक्ता अपन चाहक विषयमे अनिश्चित अछि। एहिसँ आधुनिक आत्मक 'सुसंगत, निर्णायक' प्रतिमाक बदला खोजरत, असम्पूर्ण आ बदलैत स्वर सामने अबैत अछि।

'मनक बजार'क शीर्षक मानसिक जगतकेँ विनिमय, भीड़ आ भटकनक रूपकसँ जोड़ैत अछि, मुदा कविता मनक आग्रहकेँ 'फेन नहि' सन नकारात्मक विधानद्वारा व्यक्त करैत अछि। छोट कथन सामाजिक शोरसँ ऊबरि आत्मबोधक इच्छा बनैत अछि। 'बजार'क रूपक आलोचनाकेँ अनेक दिशा दैत अछि, तथापि ओकर सघनता शब्दक संकेत आ कविता भीतरक अनुभवसँ मापल चाही; असम्बद्ध सामाजिक अर्थ आरोपित करब काव्यक मूल तनावकेँ धुँधला सकैत अछि।

५. स्त्री-अस्मिता : देह, परिचय, पीढ़ी आ घर

५.१ 'नारी' : श्रेणीकरणक विरुद्ध एकटा प्रश्न

'नारी' संग्रहक प्रमुख सामाजिक कवितासभमे सँ एक अछि। स्त्रीकेँ केवल सम्बन्ध-निर्धारित पद—देवी, जननी, पूजा अथवा परिवारक नैतिक प्रतिमा—बनाय देबाक सामाजिक अभ्यस्तता एतए प्रश्नक घेरेमे अबैत अछि। 'जननीकें मात्र जननी' कहि बुझबाक माँग स्त्रीकेँ रूपक वा पूज्य प्रतिमासँ बाहर मनुष्य रूपमे देखबाक आग्रह अछि। एहि बिन्दुपर कविता परम्परागत 'नारी-महिमा' आ आधुनिक स्वायत्त व्यक्तित्वक बीच आलोचनात्मक दूरी पैदा करैत अछि।

कवितामे स्त्रीक प्रति श्रद्धा आ स्त्रीक स्वतन्त्र व्यक्तित्व आवश्यक रूपेँ एक नहि अछि। समाज स्त्रीकेँ देवी कहि ओकर श्रम, इच्छा आ अधिकार अचिन्हार रखि सकैत अछि। अतः कविता जे मानवतावादी स्वर ग्रहण करैत अछि, ओकर मूल्य 'महिमा'क प्रशंसामे नहि, श्रेणीकरणक मानवीय आलोचनामे अछि। मैथिली पाठमे 'जनानी' सन घरेलू पदक प्रयोग व्याख्याक केन्द्रकेँ संस्कृतनिष्ठ अमूर्ततासँ हटाकय जीवित लोकभाषिक व्यक्तिपर केन्द्रित करैत अछि।

५.२ 'एकटा हेराएल जनानी' : परिवारक भीतर अनुपस्थितिक उपस्थिति

'एकटा हेराएल जनानी' उपेक्षाक एकटा गहिरा सामाजिक दृश्य उपस्थित करैत अछि। शीर्षक स्वयं विरोधाभास अछि : स्त्री घरक काजमे सर्वत्र उपस्थित, मुदा ओकर पहिचान हेराएल। पाठमे बच्चा, पुरुष, सेवा, परिवारक जिम्मेवारी आ स्त्रीक रोजमर्राक श्रम बारंबार संग अबैत अछि। सामाजिक दृष्टिसँ ई केवल निजी दुःखक शोकगीत नहि; परिवारक भीतर मान्यता, श्रम आ अधिकारक असमान वितरण पर प्रश्नचिह्न अछि।

एहि कविताक विशिष्टता कथात्मक विस्तारमे अछि। छोट सूक्तिपरक कवितासँ भिन्न एतए स्त्रीक अस्तित्व अनेक परिस्थिति आ दिनचर्याक माध्यमसँ चिन्हित होइत अछि। काज, पहिचान, सामाजिक मान्यता आ भावनात्मक अदृश्यताक बीचक तनाव कविता बनबैत अछि। मैथिली पाठ 'अपन', 'हमर', 'नारी' आ घरेलू व्यवहारक पदद्वारा एहन घरक रचना करैत अछि जे पाठककेँ अपन आसपासक सामाजिक जगतसँ सम्बन्धित लगैत अछि; मुदा एही निकटताक कारण कविता ओहि सम्बन्धक आलोचना सेहो तीक्ष्ण बनबैत अछि।

५.३ 'आजुक नारी' : समय-बोधक द्वैध

'आजुक नारी'मे 'आजुक' शब्द समय-चेतनाक संकेत अछि। ई केवल समकालीन फैशनक सूचक नहि; अतीतक अपेक्षा स्त्रीक स्थितिमे आएल परिवर्तनक दावा आ तकर परीक्षा दूनू सम्भव बनबैत अछि। रचनामे परम्परा, टूटन, क्षमता आ संघर्षक संक्षिप्त विन्यास अछि। आधुनिक स्त्रीक आदर्श केवल संघर्षशील, सर्वगुणसम्पन्न आ सहनशील बनाय देल जाय तँ नव आकृतिमे पुरनका बोझ लौटि सकैत अछि। कविताक सार्थक पाठ 'आत्मनिर्णय' आ 'नव दायित्व'क ई अन्तर चिन्हित करैत अछि।

५.४ 'घरक पाग' : बुजुर्ग, अनुभव आ नैतिक उत्तराधिकार

'घरक पाग'मे बुजुर्ग लोकनिकेँ घरक मानक बिम्ब 'पाग' द्वारा अर्थ प्रदान कएल गेल अछि। पाग मिथिलाक सांस्कृतिक पहिचानक एकटा सार्वजनिक चिह्न सेहो अछि; कविता भीतर ओ बुजुर्गक सम्मान, अनुभव आ धरोहरक उपमान बनैत अछि। मैथिली पाठक लेल एहि प्रतीकक स्थानीय प्रतिध्वनि गहिर अछि। परिजनक अनुभवकेँ सिरोपाक रूपेँ मानब, आ ओकर वास्तविक आवश्यकताक प्रति उदासीन रहब—एहि दूनू स्थितिक बीच कविताक नैतिक प्रश्न उभरैत अछि।

एहिसँ उत्पन्न सामाजिक प्रश्न मात्र सम्मानक नहि, सम्बन्धक सत्ता-रचनाक अछि। बुजुर्गकेँ प्रतीकात्मक उच्च आसन देब आ ओकर वास्तविक जीवनक उपेक्षा करब एकहि

घरमे सम्भव अछि। कविता अनुभवक संरक्षणक आग्रह करैत अछि, मुदा ओकर आदर्शीकृत 'घर'क भीतर पीढ़ीगत मतभेदक जटिलता कम बोलैत अछि। एहि कमीकेँ दोष मात्र नहि, काव्यक चयनित दृष्टिकोण रूपमे चिह्नित करब उचित।

५.५ 'घर', 'घर आओर मकान' : अन्तरंग स्थानक तत्त्व

'घर' आ 'घर आओर मकान' मिलि कऽ घरकेँ भौतिक भवनसँ अलग सम्बन्धक अनुभव-स्थान बनबैत अछि। मकान संरचना अछि, घर आत्मीयता आ सहजीवनक संकेत। मुदा संग्रहक 'हेराएल जनानी' आ 'घरक पाग'क संग पढ़ला पर ई अन्तर जटिल भऽ उठैत अछि : घर जँ स्नेहक स्थल अछि तँ ओतहि ककरो पहिचान किएक हेराइत अछि? एहि अन्तर्विरोधसँ संग्रहक अर्थ ओकर प्रत्यक्ष उपदेशसँ बेसी व्यापक बनैत अछि।

६. भाषा-चेतना आ सार्वजनिक जीवनक प्रश्न

६.१ 'राजभाषा' : पहिचान, अधिकार आ संवैधानिक शब्दक भाव

'राजभाषा' भाषाक नामकरण, सार्वजनिक प्रतिष्ठा आ आत्मीय भावक सम्बन्ध सामने अनैत अछि। भाषाकेँ देशक पहिचानक संग जोड़बाक प्रवृत्ति अछि; संगहि भाषामे अपनत्व, स्वीकृति आ मनक अवकाशक अनुभूति सेहो अछि। एहि कविताक केन्द्रीयता कानूनी विधानक विस्तृत व्याख्या नहि, बल्कि भाषायी गौरव आ आत्मीय संचारक भावात्मक मूल्य अछि। मैथिली अनुवादमे ई विषय दू भाषा-संसारक सम्बन्धपर नव विचारक अवसर दैत अछि।

हिन्दी सँ मैथिलीमे अनुवादित संग्रहमे 'राजभाषा'क उपस्थिति अपूर्व आलोचनात्मक सन्दर्भ दैत अछि। पाठककेँ विचार करय पड़ैत अछि जे केन्द्र–परिधिक भाषायी सम्बन्धक भीतर मैथिली स्वयं कोन ठाम उभैत अछि। ई प्रश्न अनूदित मैथिली

पाठक प्रसंगसँ उपजल आलोचनात्मक सम्भावना अछि; मूल कवयित्रीक अवश्य अभिप्राय छल, एहन दावा नहि। एतए तूरीक लक्ष्य-संस्कृति दृष्टि उपयोगी ठहरैत अछि—भाषा बदलला पर पाठकक सार्वजनिक प्रश्न सेहो बदलि सकैत अछि।

६.२ 'विद्याक बाट' : पुस्तक, शिक्षा आ पीढ़ी-गमन

'विद्याक बाट'मे गामक जीवन आ बच्चाक पढ़ाइ समाजक भविष्यसँ जुड़ल अछि। शिक्षा व्यक्तिक उन्नतिकेँ मात्र नहि, सामुदायिक परिवर्तनक साधन बनैत अछि। 'गबरा, धापु, लिछमी आ रामी' सन नामक अनुक्रम बालक-बालिकाक संसारकेँ ठोस बनबैत अछि। एहि नाम-सरणीक ध्वनिमे परिचित लोकजीवनक स्पर्श अछि, जाहिसँ शिक्षाक अमूर्त आदर्श साधारण परिवारक श्रम, इच्छा आ भविष्यक सहारे मूर्त होइत अछि।

शिक्षाक एहि विमर्शक सन्निकट 'अहाँक थाती' संस्कार, देश, भाषा आ उत्तरदायित्वक प्रश्न उठबैत अछि। विरासत एतए मृत स्मारक नहि, आगाँक पीढ़ीक हाथमे पहुँचबाक सामाजिक क्रिया बनैत अछि। अपन देश आ परम्पराक प्रति निष्ठा एहि कविताक नैतिक बल अछि; मुदा सांस्कृतिक उत्तराधिकार जीवित तखने रहैत अछि जखन ओ बहुलता, परिवर्तन आ समान अधिकारकेँ सेहो स्थान दैत अछि। एहि अर्थमे कविता स्मृति आ भविष्यक बीच एकटा खुलल संवाद रचैत अछि।

७. शीर्षक-कविताक सममुख पठन : हिमखंड, सिनेह आ विश्वासक रौद

शीर्षक-कविता 'हिमखंड'क केन्द्रमे सम्बन्धक शीतलता आ विश्वासक तापक विरोध रचाएल अछि। रजनी छाबड़ाक हिन्दी 'हिमखंड' आ शिव कुमार प्रसादक मैथिली 'हिमखंड'केँ संग पढ़ला पर काव्यात्मक अर्थक निरन्तरता आ अभिव्यक्तिक भिन्नता दूनू सामने अबैत अछि। हिन्दीमे 'सर्द रिश्तों' आ 'उष्णता'क संकल्पना जखन मैथिलीमे 'ठिठुरलो सिनेह' आ 'रौद'क सहारे व्यक्त होइत अछि, तखन अमूर्त भाव दैनिक अनुभूतिक समीप आबि जाइत अछि।

हिन्दी : "पिघलते हैं हिमखंड सर्द रिश्तों के" — "प्यार सने विश्वास की उष्णता"।

मैथिली : "पघलै छै बरफक पहाड़" — "ठिठुरलो सिनेहके" — "विश्वासक रौद"।

पहिल परिवर्तन शीर्षक आ कविताक देहक बीच देखल जा सकैत अछि। शीर्षकमे 'हिमखंड' शब्द बनल रहैत अछि, मुदा कविता भीतर 'बरफक पहाड़' अधिक दृश्य, बोलचालक निकट आ वस्तुगत रूपमे उपस्थित अछि। एकर प्रभाव ई जे अमूर्त, संस्कृतनिष्ठ संज्ञा स्थानीय पाठकक सामने बर्फसँ बनल पहाड़क स्पष्ट आकृति लैत अछि। ई अर्थक त्याग नहि, बिम्बक दृश्यीकरण अछि।

दोसर परिवर्तन 'सर्द रिश्तों' सँ 'ठिठुरलो सिनेह' धरि अछि। हिन्दी अंशमे ठंढक सम्बन्धक गुण अछि; मैथिलीमे 'ठिठुरलो' शब्दसँ सिनेह स्वयं ठंढसँ काँपैत शरीर जेकाँ बनि जाइत अछि। एहि व्यक्तीकरणसँ भावक स्पर्शशीलता बढ़ैत अछि। तथापि सम्बन्धक व्यापक सामाजिक परिभाषा 'सिनेह'क अपेक्षाकृत आत्मीय क्षेत्रमे सिमटैत अछि; अर्थक विस्तार आ संकुचन एकहि समय सम्भव अछि।

तेसर, 'उष्णता'क बदला 'रौद' अतिशय महत्त्वपूर्ण अछि। उष्णता तापक अमूर्त गुण अछि, जखन कि रौद सूर्यक किरणक दैनिक अनुभव। 'विश्वासक रौद' मैथिली पाठक लग जाड़क दिनक धूपक प्राकृतिक सांत्वना आनैत अछि। एकरा 'स्वदेशीकरण'क संकेत कहब सम्भव अछि, कारण अनुवाद भावकें परिचित संवेद्य माध्यम देइत अछि; तथापि हिन्दी–मैथिली दुनू भाषामे रौद–धूपक बिम्ब उपलब्ध रहबाक कारण एकरा निश्चित सांस्कृतिक विभाजन नहि मानब। मुख्य उपलब्धि बिम्बक दृश्यता आ तापक मानवीयकरण अछि।

मैथिली कविता अन्तमे 'दऽ कऽ देखियौ' कहैत अछि। एहि सम्बोधनसँ रचना निश्चयात्मक कथनसँ श्रोता-सक्रिय आग्रहक दिशा लैत अछि। 'देखियौ'क आदर-भंगिमा शिष्टता आ आत्मीय दूरीक अलग स्वर बनबैत अछि। मैथिलीक सम्बोधन-व्यवस्था

अर्थक एहन प्राग्मैटिक सूक्ष्मता रचैत अछि, जकर मूल्य केवल शब्दकोशीय समानार्थकतासँ नहि आँकल जा सकैत।

एहि सममुख पठनमे मूलक केन्द्रीय प्रतिमान—ठंढ पड़ल सम्बन्ध आ विश्वासक ऊष्मा—बनल रहैत अछि, मुदा मैथिली पद-चयन ओहि प्रतिमानकेँ देह, स्पर्श आ प्रकाश दैत अछि। 'बरफक पहाड़'क दृश्यात्मकता, 'ठिठुरलो सिनेह'क व्यक्तीकरण आ 'विश्वासक रौद'क अनुभवजन्य ताप काव्यानुवादक अर्थ-निष्ठा आ रूपात्मक नवान्तरक सहअस्तित्व देखबैत अछि। शीर्षक-कविता एहि प्रकार संग्रहक व्यापक भाव-द्वन्द्वक प्रतिनिधि रूपक बनैत अछि।

८. शब्द–प्रयोग, वाक्य-लय आ मुक्तछन्दक समस्या

८.१ सर्वनाम आ प्रत्यक्ष सम्बोधन

संग्रहमे 'हम', 'अहाँ', 'अपन', 'हमर' आ 'ओ'क पुनरावृत्ति शब्दीय आदत मात्र नहि। 'हम' आत्मपरीक्षक वक्ता बनैत अछि, 'अहाँ' संवादक सम्भावना, आ 'अपन' निजी जीवनक अधिकारक संकेत। 'बिसबास', 'हिमखंड', 'अहाँक थाती' आ 'बिसबासक मूर्ति'मे सम्बोधनक विन्यास वाक्यक लय आ नैतिक निकटता बदलैत अछि। मैथिलीमे सम्बोधन-रूप सामाजिक दूरीक संकेत वहन करैत अछि; एहि कारण अनुवादक सर्वनाम-निर्वाचन स्वयं अर्थ-निर्माणक केन्द्र अछि।

८.२ बहुभाषिक शब्द-सम्पर्क आ भाषिक स्वाभाविकता

पाठकक शब्द-संसारमे संस्कृतस्रोतक 'विश्वास', 'संसार', 'सम्बन्ध', 'आत्मीयता'क संग लोक-प्रयोगक 'रौद', 'पाग', 'नेनपन', 'जिनगी', 'बुजुर्ग', 'अहाँ' उपस्थित अछि। एहि सहअस्तित्वकेँ 'शुद्ध' बनाम 'अशुद्ध'क सरल द्वैधमे नहि बाँटल जा सकैत। समकालीन साहित्यिक मैथिली अनेक स्तरक शब्दसँ काम करैत अछि; भेद ई जे कोन

शब्द कविता भीतर बिम्ब-संरचनाकेँ आवश्यक सहायता दैत अछि आ कोन शब्द केवल गद्यात्मक अमूर्तन बढ़बैत अछि।

मैथिली अभिव्यक्तिक स्वाभाविकता संग्रहक अनेक कवितामे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि। मुदा सभ कविता एकहि कलात्मक सघनता नहि धारण करैत अछि। किछु स्थले सूक्ति-शैली बेशी हावी भेलासँ बिम्बक बहुअर्थिता घटैत अछि। 'चर्चा'क संक्षिप्त स्वर, 'बेसुध'क संवेदना आ 'सुख-दुख'क अर्थ-विस्तारमे उपदेशात्मक निष्कर्ष आ अनुभूतिमूलक रूपकक अनुपात भिन्न अछि। एहि भिन्नताकेँ पहिचानब समग्र संग्रहक न्यायपूर्ण साहित्यिक मूल्याङ्कनक आधार होयबाक चाही।

८.३ पंक्ति-विच्छेद, मौन आ अनुगूँज

मुक्तछन्दक अर्थ केवल पंक्ति तोड़ब नहि; ओकर प्रत्येक विराम पाठकक श्वास, अपेक्षा आ अर्थ-निर्माणमे भाग लैत अछि। 'हिमखंड'मे 'विश्वासक' बाद 'रौद'क आगमन क्षणिक विरामसँ नव संवेदना खोलैत अछि। 'साँसक संग'मे लघु-दीर्घ पदक्रम प्रेम, धड़कन आ गीतकेँ आन्तरिक लय दैत अछि। विपरीत, किछु कवितामे अत्यधिक खण्डित पंक्तिसँ अपेक्षित काव्य-तनाव उत्पन्न नहि होइत; ओतए विन्यास किछु हद धरि सजावटी लगि सकैत अछि।

८.४ पुनरुक्ति : संगीत आ सीमा

'हम जिनगीसँ...' सन आवर्तन, अनेक कविताक 'अहाँ' अथवा 'आ' सँ आरम्भ होइत खण्ड, आ 'बिसबास'क स्थायी उपस्थिति सामूहिक भावसूत्र बनबैत अछि। पुनरुक्ति पाठकक स्मृतिमे काव्य-स्वर लौटबैत अछि, मुदा यदि नवान्तर कम अछि तऽ अर्थ एकहि स्थानपर ठाढ़ रहि सकैत अछि। 'सतरंगा आनन्द'मे रंग-श्रृंखला ऊर्जा पैदा करैत अछि; 'मनक कनकोआ'मे विस्तारक पुनरुक्ति उड़ानक भावक अनुगूँज देइत अछि। ई पाठानुसार भिन्न प्रभाव अछि।

९. रूपकक सामाजिक भूगोल : घर, आकाश, मेलाप्रांगण आ राह

संग्रहक बिम्ब-संसारमे चारि आवर्त उभरैत अछि—घर/मकान, आकाश/अन्तरिक्ष, पथ/यात्रा आ भीड़/एकान्त। 'मेला मे एसगार' भीड़क बीच एकाकीपनक विरोधाभास उपस्थित करैत अछि। 'कुहेस' अस्पष्ट अनुभवक प्राकृतिक नाम बनैत अछि; 'दिंगतक नजीक' दूरीकेँ इच्छाक निकट आनबाक प्रयत्न करैत अछि; 'लहर' मनक आवेगक दृश्यात्मक रूप अछि। एहिसँ समकालीन व्यक्तिक भाव-परिसर बनैत अछि, जे सामाजिक रूपसँ आबद्ध रहितो भीतर एकाकी भऽ सकैत अछि।

'केना बिसरि सके छी?'मे स्मृति विस्मृतिक विरुद्ध नैतिक उत्तरदायित्व बनैत अछि; 'कारण' जीवनक प्रश्न–उत्तरक कठिनता उठबैत अछि; 'बहए दिऔ जिनगीकें' जीवनकेँ रोकबाक बदला प्रवाहित होय देबाक आग्रह व्यक्त करैत अछि। एक स्वर बन्धनसँ मुक्ति चाहैत अछि, दोसर सम्बन्ध छोड़बाक पीड़ासँ डराइत अछि। एहि विपरीत स्थितिक सहअस्तित्व संग्रहक आन्तरिक कथा अछि—न पूर्ण विरक्ति, न स्थिर आत्मसमर्पण।

एहि विविधताक सम्यक् मूल्याङ्कन लेल 'आन्तरिक संगति' आ 'दार्शनिक प्रणाली'क भेद आवश्यक अछि। घरक बिम्ब, स्मृति, अपेक्षा आ भरोसा एक-दोसराक अर्थ बदलैत अछि, मुदा एही आधारपर रचनासभकेँ एकटा सुस्पष्ट दार्शनिक सिद्धान्तक उदाहरण बना देब ग्रन्थकेँ ओकर वास्तविक काव्यात्मक खुलापनसँ वञ्चित करत।

१०. अनूदित पाठक सामाजिक अर्थ : राष्ट्र, परिवार आ सामुदायिक उत्तराधिकार

'अहाँक थाती' आ 'राजभाषा'कँ संग पढ़ला पर स्पष्ट होइत अछि जे संग्रहक 'हम' केवल निजी प्रेमक 'हम' नहि। ओ भाषाक मान, देशक हित, पीढ़ीक करुणा आ सांस्कृतिक निरन्तरताक प्रश्नमे सेहो प्रवेश करैत अछि। 'विद्याक बाट'क बच्चा, 'घरक

पाग’क बुजुर्ग आ ‘नारी’क अस्मिता मिलि एकटा सामाजिक नैतिकता निर्मित करैत अछि। ई नैतिकता सभ ठाम समान रूपेँ विकसित नहि, मुदा संग्रहक स्वतन्त्र विचार-सरणी अवश्य बनबैत अछि।

राष्ट्रक, मातृभाषाक वा घरक गौरवक काव्य अक्सर दोसर आवाजकेँ निष्प्रभ बना देबाक जोखिम वहन करैत अछि। एही कारण ‘अहाँक थाती’क आदर्श पढ़ैत काल सामाजिक बहुलता आ परिवर्तनशील सम्पदाक प्रश्न देखब आवश्यक अछि। परम्पराक संरक्षणक अर्थ यदि सबहक अनुभवकेँ स्वीकारब अछि तँ ई सकारात्मक मूल्य; यदि मात्र एकरूप सामाजिक संस्कारकेँ सर्वोच्च मानब अछि तँ आलोचनात्मक पुनर्पाठ आवश्यक। कविता व्यापक प्रश्न खोलैत अछि, जकर निश्चित राजनीतिक कार्यक्रम रचनामे स्पष्ट नहि अछि।

११. साहित्यिक परिवेश आ कविताक सांस्कृतिक संवाद

रजनी छाबड़ा आ शिव कुमार प्रसादक संयुक्त साहित्यिक उपक्रमकेँ संग्रहक भूमिका आ कविता-क्रमक माध्यमसँ देखला पर अनुवाद एकटा सक्रिय सांस्कृतिक संवाद रूपमे उभरैत अछि। २०१८ ई. मे निर्मलीसँ प्रकाशित एहि मैथिली संग्रहक महत्त्व केवल हिन्दी कविताकेँ दोसर भाषामे पहुँचाओनाइ नहि; ई मैथिली कविताक स्थापित आ चलायमान मुहावराक भीतर नवा संवेदना उपस्थित करब अछि। तिरसठि कविताक व्यापक विषय-सरणी पाठककेँ निकट अनुभव आ सार्वजनिक जीवनक प्रश्नक बीच निरन्तर आवागमन करबैत अछि।

मैथिल साहित्यिक परिवेशमे एहि पुस्तकक उल्लेख काव्यानुवादक साहित्यिक उपस्थितिकेँ संकेतित करैत अछि। मुदा एकर वास्तविक काव्य-महत्त्व पुस्तकक प्रचार अथवा प्रसारक परिमाणसँ नहि, पाठकक भीतरक भाव-संरचना आ कलात्मक साधनसँ मापल चाही। ‘रौद’क सहज दृश्य, ‘अहाँ’क संवादित स्वर, ‘जनानी’क सामाजिक प्रश्न आ ‘थाती’क सांस्कृतिक भार अनुवादकेँ जीवित कविता बनबैत अछि।

एही कारण साहित्यिक ग्रहणक केन्द्रीय प्रश्न कतेक लोक पुस्तक पढ़लनि नहि, बल्कि कविता भाषा आ संवेदनामे कोन नवा अर्थ सम्भव करैत अछि, ई अछि।

हिन्दी कविता-संसारमे रजनी छाबड़ाक कविताकेँ निजी अनुभव आ स्त्री-संवेदनाक आलोकमे पढ़ल गेल अछि। मैथिली 'पघलैत हिमखंड' एकर संग सामाजिक अर्थक आरो विस्तार देखबैत अछि : 'राजभाषा', 'विद्याक बाट' आ 'अहाँक थाती' भाषिक गरिमा, सार्वजनिक शिक्षा आ उत्तराधिकारक प्रश्नकेँ विषय बनबैत अछि। एहि बहुलताकेँ पहिचानि सकब संग्रहक सम्यक् समीक्षाक शर्त अछि। स्त्रीक अनुभूतिकेँ मात्र विरह वा भावुकतामे सीमित करब रचनाक सामाजिक प्रश्नकेँ ओझरायब होयत। ...
57

कवयित्रीक 'अनुसृजन' विषयक विचार भाषान्तरकेँ साहित्यिक आ सांस्कृतिक सन्धानक अनुष्ठान मानैत अछि। एहि भावनाकेँ वास्तविक रूप मैथिली कविताक ध्वनि, लय आ प्रतिमामे भेटैत अछि। केवल भाषायी सद्भावना अनुवादक सफलता सुनिश्चित नहि करैत; सफल काव्यानुवाद तखन घटित होइत अछि जखन 'विश्वासक रौद' सन अभिव्यक्ति नव भाषामे आन्तरिक जीवन प्राप्त करैत अछि आ साहित्यिक समीक्षा ओकर परिणामक सूक्ष्म परीक्षण करैत अछि।

१२. आलोचनात्मक प्रतिवाद : संग्रहक शक्ति आ कलात्मक चुनौती

१२.१ समुचित उपलब्धि

प्रथम उपलब्धि, मैथिलीमे भावक सहज संप्रेषण। पंक्ति-संकल्पना अनेक स्थले स्थानीय जीवनक निकट अछि; 'रौद', 'पाग', 'जिनगी', 'अहाँ' सन चयन संवेदनाकेँ अस्वाभाविक साँचामे कैद नहि करैत। द्वितीय, स्त्रीक सामाजिक अदृश्यता जेकाँ विषयक तीक्ष्ण उपस्थिति। तृतीय, छोट कविता आ अपेक्षाकृत दीर्घ पाठक सहअस्तित्व—सूक्ति, स्वगत, सम्बोधन, कथात्मक दृश्य सभ रूपेँ काव्यक बहुवचन

निर्माण। चतुर्थ, आत्मीय स्मृतिकेँ भाषा, शिक्षा आ सामाजिक उत्तराधिकारक संग जोड़बाक कोशिश।

१२.२ कविता आ सूक्तिक बीच असन्तुलन

एहि उपलब्धिक संग मुख्य चुनौती कथनक अतिस्पष्टता अछि। कोनो कविता जखन पाठककेँ प्रश्न करबाक अवसर देइत अछि, ओतय ओकर सौन्दर्य विस्तार पबैत अछि; मुदा जखन उत्तर पहिनहिसँ निश्चित अछि, सूक्तिमूलक वाक्य पाठक अनुभवकेँ सीमित कऽ सकैत अछि। 'बिसबास' वा 'सतरंगा आनन्द'मे अभिप्रेत मूल्य मानवतावादी अछि, मुदा साहित्यिक मूल्य केवल मंगलकामनाक उच्चारणसँ स्वतः जन्म नहि लैत। बिम्बक ठोसपन, अप्रत्याशित अर्थान्तर, रचनात्मक मौन आ स्वरक तनाव सेहो आवश्यक अछि।

१२.३ वर्तनी, मुहावरा आ भाषिक संगति

'बिसबास' सन रूप मानक संस्कृतस्रोत 'विश्वास'सँ अलग मैथिली ध्वनि-प्रवृत्तिक संकेत दैत अछि। एहि अन्तरकेँ स्वतः त्रुटि कहब भाषिक विविधताक प्रति न्याय नहि होयत। वास्तविक प्रश्न ई अछि जे एहन रूप कविता भीतर निरन्तरता, सहजता आ ध्वनि-संगतिक केहन व्यवस्था रचैत अछि। ताहि संग संस्कृतनिष्ठ अमूर्त पद आ घरेलू लोक-शब्दक सहअस्तित्व अनेक स्थले अर्थ सम्पन्न बनैत अछि, तँ कतहु वाक्यकेँ गद्यात्मक सेहो करैत अछि। एहि सूक्ष्म तनावमे अनुवादक भाषिक सजगता मापल चाही।

१२.४ मूलनिष्ठा आ मैथिली काव्यात्मकताक द्वैध कसौटी

काव्यानुवादक मूल्याङ्कन लेल अर्थ-संरक्षण आ सर्जनात्मक प्रभाव दूनू महत्त्वपूर्ण अछि। 'हिमखंड'क सममुख पठन देखबैत अछि जे मूलक ठंढ–तापक रूपक मैथिलीमे

निरन्तर रहितो अधिक दृश्यात्मक भऽ उठैत अछि। मुदा अर्थक ई सफलता अपने-आप सभ कविताक कलात्मक निर्णय नहि बनि सकैत। प्रत्येक रचनामे रूपक, सम्बोधन, लय, पुनरुक्ति आ मौनक आपसी सम्बन्ध परखब आवश्यक अछि; एहीसे अनुवादक प्रशंसा वा आलोचना बिना पाठीय कारणक नहि, कविताक वास्तविक बनावटपर आधारित रहैत अछि।

१३. समेकित मूल्याङ्कन : अनुवादकेँ साहित्यिक घटना रूपमे देखब

'पघलैत हिमखंड'क काव्य-सम्भावना तीन स्तरपर उल्लेखनीय अछि। एक, भावक अन्तरभाषिक यात्रा : मूल हिन्दी सन्दर्भसँ मैथिली शब्द-संसारमे प्रवेश करैत बिम्बकेँ नव श्वास भेटैत अछि। दू, स्त्री-अस्मिताक सामाजिक विस्तार : व्यक्तिगत सम्बन्धक प्रश्न घरक काम, मान्यता, पीढ़ी, शिक्षा आ भाषा धरि फैलैत अछि। तीन, मैथिली मुद्रित परिवेशमे अनुवादित कविता सँ सम्बद्ध साहित्यिक क्रिया : मूल कवयित्री आ अनुवादक दून्हिक नाम स्पष्ट रहैत अछि, जाहिसँ सर्जनात्मक जिम्मेदारीक परम्परा बनेल रहैत अछि। ... 57

याकोब्सनक भाषिक अन्तर, नाइडाक प्रभावक कसौटी, तूरीक लक्षित-साहित्यिक स्थिति, वेनूटीक भाषिक–सांस्कृतिक सन्धान, लेफ़ेवेरक पुनर्लेखन आ साइमनक लिंग-चेतना—ई सब सिद्धान्त एक-दोसराक ठाम नहि लेइत, अलग जिज्ञासा प्रदान करैत अछि। सिद्धान्तक सार्थकता एतए पंक्तिक सूक्ष्म पाठसँ मापल गेल अछि; कोनो कविताकेँ उदाहरण बनेबाक लेल बाहरसँ जड़ि देबाक प्रयास नहि।

समग्रतः मैथिली पाठक स्पष्ट सामर्थ्य ओकर आत्मीय सम्बोधन, अनुभूतिपरक घरेलू बिम्ब आ स्त्रीक सामाजिक प्रश्नक रूपायन अछि। ओकर सीमा कतिपय कविताक सूत्रात्मकता, अर्थक स्पष्ट निष्कर्षपर शीघ्र पहुँचबाक प्रवृत्ति आ काव्य-तीव्रताक असमान स्तरमे देखाइत अछि। ताहि लेल मूल्याङ्कन 'पूर्ण सफलता' वा 'असफलता'क एकपंक्तिक प्रमाणपत्र नहि, बहुस्तरीय साहित्यिक निष्पत्ति अछि।

१४. निष्कर्ष

रजनी छाबड़ाक हिन्दी कविताक डॉ. शिव कुमार प्रसाद कृत मैथिली रूपान्तर 'पघलैत हिमखंड' भाषान्तर आ सर्जनात्मक पुनर्स्थापनाक एकटा उल्लेखनीय उदाहरण अछि। अनूदित कविता अपन अर्थक अवयव मात्र नहि ढोइत; मैथिली पाठकक कान, बोलचाल, स्मृति, सामाजिक सम्बन्ध आ सांस्कृतिक प्रतीकमे नव रूप धारण करैत अछि। 'हिमखंड'क सममुख पठनमे 'उष्णता'सँ 'रौद' आ 'सर्द रिश्तों'सँ 'ठिठुरलो सिनेह' धरि रूपान्तरणक विशेष महत्त्व अछि। एहि सूक्ष्म परिवर्तनसँ सिद्ध होइत अछि जे सर्जनात्मक काव्यानुवाद अर्थक रक्षण आ अनुभूतिक नव आकार दूनू एक संग सम्भव करैत अछि। ... 57

संग्रहक रचनात्मक उपलब्धि ओकर विषयगत बहुलता अछि : 'नारी' स्त्रीक मनुष्यत्वक प्रश्न उठबैत अछि; 'एकटा हेराएल जननी' घरेलू अदृश्य श्रमक सामाजिक आलोचना बनैत अछि; 'राजभाषा' आ 'अहाँक थाती' भाषा आ सांस्कृतिक उत्तराधिकारकेँ विमर्शक विषय करैत अछि; 'घरक पाग' परिवारक प्रतीकात्मक मान –अमानक प्रश्न आगाँ अनैत अछि; 'बिसबासक मूर्ति' भरोसाक नव निर्माणक इच्छा रूपेँ संग्रह बन्द करैत अछि। ई सब रचना अनुवादित काव्यकेँ प्रेम आ एकान्तक सीमित परिधिसँ बाहर लऽ जाइत अछि।

एहि आधारपर समेकित साहित्यिक निष्कर्ष ई अछि जे 'पघलैत हिमखंड'क मुख्य उपलब्धि हिन्दी संवेदनाकेँ मैथिली भाषिक आत्मीयता, सांस्कृतिक बिम्ब आ सम्बोधनक नव विन्यास देबामे अछि। संग्रहक प्रत्येक कविता समान तीव्रताक नहि; कतिपय पदक सूक्तिपरकता आ कथनक शीघ्र समापन काव्यात्मक सम्भावनाकेँ सीमित करैत अछि। तथापि 'नारी', 'एकटा हेराएल जननी', 'घरक पाग', 'राजभाषा' आ 'हिमखंड'क संयुक्त पठन एक स्पष्ट उपलब्धि स्थापित करैत अछि—ई अनुवाद निजी भावानुभूतिकेँ सामाजिक विचारक संग जोड़ि समकालीन मैथिली अनूदित कविताक साहित्यिक क्षितिज विस्तृत करैत अछि। ... 81

परिशिष्ट : चयनित कविताक विषयगत आलोचनात्मक सारिणी

निम्न सारिणी संग्रहक चयनित कविताक विषय, प्रतीक आ प्रमुख आलोचनात्मक सम्भावनाकेँ एक ठाम रखैत अछि। एकरा कविता सभक परस्पर सम्बन्ध बुझबाक संकेत-रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि।

सन्दर्भ-सूची

मूल कृति, अनूदित संग्रह आ समकालीन साहित्यिक सन्दर्भ

छाबड़ा, रजनी। पघलैत हिमखंड। हिन्दी सँ मैथिली अनुवाद : डॉ. शिव कुमार प्रसाद। निर्मली, सुपौल : पल्लवी प्रकाशन, २०१८। ... 57

छाबड़ा, रजनी। “हिमखंड।” प्रतिलिपि, हिन्दी लेखक-पृष्ठपर प्रकाशित कविता। https://hindi.pratilipi.com/story/himkhand-by-rajni-chhabra-opd06u30zfbi (अभिगमन : १७ नवम्बर २०२६)।

ग़ाज़ी, इम्तियाज़ अहमद। “मौन की बांसुरी, पिघलते हिमखंड, लड़कियां, नदी को सोचने दो और...।” गुफ़्तगू, २८ मई २०१७। https://guftgu-allahabad.blogspot.com/2017/05/blog-post_28.html ।

मैथिल मंच। “मैथिली : कविता।” बाबूजीक पुस्तकालय, पुस्तक-सूची। https://www.maithilmanch.in/babujeekpustakalaya/maithili-kavita/ (अभिगमन : १७ नवम्बर २०२६)।

“सगर राति दीप जरयक इतिहास।” सगर राति दीप जरय, ३० जून २०२६। https://sagarraatideepjaray.wordpress.com/2026/06/30/ ।

Baker, Mona, and Henry Jones. In Other Words: A Coursebook on Translation. 4th ed. London/New York: Routledge, 2026. https://doi.org/10.4324/9781003440857.

Bassnett, Susan. Translation Studies. 4th ed. London/New York: Routledge, 2014.

Jakobson, Roman. "On Linguistic Aspects of Translation." In On Translation, edited by Reuben A. Brower, 232-239. Cambridge, MA: Harvard University Press, 1959. https://doi.org/10.4159/harvard.9780674731615.c18.

Lefevere, André. Translation, Rewriting and the Manipulation of Literary Fame. London/New York: Routledge, 1992.

Nida, Eugene A. Toward a Science of Translating: With Special Reference to Principles and Procedures Involved in Bible Translating. Leiden: Brill, 1964.

Simon, Sherry. Gender in Translation: Cultural Identity and the Politics of Transmission. London/New York: Routledge, 1996.

Toury, Gideon. Descriptive Translation Studies - and Beyond. Revised ed. Amsterdam/Philadelphia: John Benjamins, 2012. https://doi.org/10.1075/btl.100.

Venuti, Lawrence. The Translator's Invisibility: A History of Translation. London/New York: Routledge, 1995.

अध्याय 5

क्षितिज : जनकाव्य, द्विभाषिक उपन्यास आ समष्टिक आदर्श ... 81

डॉ. शिव कुमार प्रसादक 'क्षितिज'क नागार्जुन आ अनूप लाल मण्डल-विषयक तीन निबन्धक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा ... 81

सारांश

डॉ. शिव कुमार प्रसादक आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह 'क्षितिज'क 'नागार्जुन का काव्य संसार', 'नागार्जुन का हिन्दी और मैथिली उपन्यास साहित्य में योगदान' आ 'व्यष्टि से समष्टि के रचनाकार अनूप लाल मण्डल' तीनटा निबन्ध आधुनिक उत्तर भारतीय साहित्यक सामाजिक सरोकारकेँ तीन अलग विधागत धरातलपर देखैत अछि। पहिल निबन्ध 'प्रतिबद्ध–सम्बद्ध–आबद्ध'क सूत्रसँ नागार्जुनक वैचारिकता, प्रकृति-संवेदना आ आत्मीय संसारकेँ समेटैत अछि; दोसर निबन्ध मैथिली–हिन्दी कथा-लेखनमे ग्रामीण वर्ग-संघर्ष, स्त्री-अवस्था आ भाषिक असमानताक परिप्रेक्ष्य खोलैत अछि; छठम निबन्ध अनूप लाल मण्डलक उपन्यासमे व्यक्ति-आदर्श, समाजसुधार, प्रेम, बलिदान आ शिल्पक द्वन्द्व पहिचानैत अछि। तीनू निबन्धक तुलनात्मक समीक्षासँ स्पष्ट होइत अछि जे साहित्यक जनपक्षधर मूल्यक व्याख्या कृतिक सौन्दर्यात्मक संरचनासँ पृथक नहि कएल जा सकैत अछि। प्रसादक आलोचनाक शक्ति अपन नैतिक प्रतिबद्धता आ उपेक्षित अनुभवक प्रति आग्रहमे अछि; ओकर सीमा कतहु-कतहु प्रशंसात्मक विशेषण, विषयक वर्गीकरण आ मूल रचनाक रूपविन्यासक अपेक्षाकृत संक्षिप्त विवेचनमे देखाइत अछि। मैथिली, हिन्दी आ अंगिका साहित्यक परस्पर सम्बन्ध, प्रकाशन-इतिहासक असंगति आ कथ्य-शिल्पक सम्बन्ध पर विचार करैत ई समीक्षा पुस्तकक आलोचनात्मक अवदान आ ओकर आगाँक सम्भावना दूनूकेँ स्पष्ट करैत अछि। ... 81

बीजशब्द : शिव कुमार प्रसाद; क्षितिज; नागार्जुन; यात्री; अनूप लाल मण्डल; जनकाव्य; मैथिली–हिन्दी द्विभाषिकता; उपन्यास-शिल्प; कोसी-अंचल। ... 81

१. समीक्षाक परिप्रेक्ष्य : साहित्य, समाज आ आलोचनात्मक दृष्टि

डॉ. शिव कुमार प्रसादक 'क्षितिज' हिन्दी आलोचनात्मक निबन्धक संग्रह अछि, जकर द्वितीय संस्करण पल्लवी प्रकाशन, निर्मलीसँ प्रकाशित भेल। एहि संग्रहक पहिल निबन्ध नागार्जुनक कविता, दोसर हुनकर हिन्दी आ मैथिली उपन्यास तथा छठम अनूप लाल मण्डलक उपन्यास-संसारकेँ विषय बनबैत अछि। एकहि ग्रन्थमे जनकविता, द्विभाषिक कथासाहित्य आ सुधारवादी उपन्यास-परम्पराक ई संगति आकस्मिक नहि लगैत अछि; सामाजिक उत्तरदायित्वकेँ साहित्यिक मूल्यक केन्द्र मानब लेखकक आलोचनात्मक रुचिक साझा आधार अछि। ... 81

एहि तीनू निबन्धक साहित्यिक मूल्यांकनमे एक दिस लेखकक चयनित कविता, कथा-प्रसंग, पात्र, उपन्यास-सूची आ आलोचनात्मक निर्णयकेँ परस्पर जोड़ि पढ़ल गेल अछि; दोसर दिस तर्कक कलात्मक सामर्थ्य आ ओकर सीमा जाँचल गेल अछि। एहि समीक्षाक विषय प्रसादक आलोचनात्मक प्रतिपादन अछि, ताहि लेल मूल रचनाक सम्बन्धमे हुनकर विचार, रचनाकारक उपलब्ध आत्मवक्तव्य आ अन्य प्रामाणिक साहित्येतिहासक प्रमाणकेँ अलग-अलग पहिचान देल गेल अछि। एहन भेद साहित्यिक अर्थक सघनता घटबैत नहि; उलटे विवादास्पद तथ्य आ व्याख्यात्मक प्रस्तावक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

पुस्तकक चयनित निबन्ध सभसँ एकटा प्रश्न निरन्तर उभरैत अछि : जनकविक राजनीतिक प्रतिरोध, कथाकारक ग्रामीण जनजीवन आ उपन्यासकारक नैतिक आदर्श —की ई तीनू समान प्रकारक जनपक्षधरता अछि? कविता आ उपन्यासक विधागत भिन्नता, भाषा आ पाठक-समाजक अन्तर तथा पात्रक सामाजिक सक्रियताकेँ स्पष्ट कएने बिना एकर उत्तर सम्भव नहि। 'क्षितिज'क प्रमुख उपलब्धि एहि प्रश्नकेँ

साहित्येतिहासक भीतर उपस्थित करब अछि; एकर सर्वाधिक फलदायी पुनर्पाठ एहि प्रश्नक गाम्भीर्य बढ़बैत अछि। ... 81

२. 'नागार्जुन का काव्य संसार' : जनप्रतिबद्धता आ काव्यात्मक बहुलता

२.१ प्रतिबद्ध, सम्बद्ध आ आबद्ध : तीन पद, तीन अन्तराल

पहिल निबन्ध नागार्जुनक 'प्रतिबद्ध हूँ' कविताक तीन अर्थ-सूत्र—प्रतिबद्धता, सम्बद्धता आ आबद्धता—कँ आधार बनबैत अछि। प्रसादक व्याख्यामे प्रतिबद्धता शोषित जनक संघर्षक पक्षधरता थिक; सम्बद्धता प्रकृति, समाज आ बदलैत जीवन-स्थितिसँ कविक सक्रिय सम्बन्ध; आबद्धता आत्मीय जनसँ भावनात्मक लगावक परिचायक अछि। एहि त्रिसूत्री रचनासँ नागार्जुनक काव्य-व्यक्तित्व केवल राजनीतिक उद्घोषणा धरि सीमित नहि रहैत। जनप्रतिरोधक संग वात्सल्य, प्रेम, प्रकृति आ स्मृतिक सह-अस्तित्व हुनकर कविताक व्यापक संवेदनशीलता प्रकट करैत अछि।

त्रिसूत्री विभाजनक उपयोगिता होइतो ओकरा कठोर श्रेणी बुझब उचित नहि। राजनीतिक प्रतिबद्धतामे व्यक्तिगत अनुभवक ताप निहित रहि सकैत अछि; प्रकृतिक संग सम्बद्धता कृषि, श्रम, ऋतु आ भूखसँ सम्बन्धित सामाजिक अर्थ ग्रहण करैत अछि; आ स्वजनक आबद्धता अपन सीमा तोड़ि सामूहिक मानवीय निकटताक रूप लऽ सकैत अछि। प्रसादक मूल प्रस्ताव एहि अन्तरसम्बन्धपर आरो बल देलासँ अधिक प्रभावशाली बनि सकैत अछि। प्रतिबद्धता काव्यक नैतिक दिशा थिक, सम्बद्धता ओकर अनुभव-क्षेत्र, आ आबद्धता संवेदनाक ठोस मानवीय धरातल—एहि रूपमे तीनू एक-दोसरकँ समृद्ध करैत अछि।

२.२ व्यंग्य, सत्ता आ कविताक वक्तृता

सत्ता-विरोधी कविताक प्रसंगमे प्रसाद 'आओ रानी हम ढोयेंगे पालकी', 'शासन की बन्दूक', 'इन्दु जी' आ बाल ठाकरे-विषयक व्यंग्यकेँ एक जनवादी काव्यधारामे रखैत छथि। ई चयन देखबैत अछि जे नागार्जुनक व्यंग्य सामान्य नीतिकथा नहि, तत्कालीन सार्वजनिक जीवनमे हस्तक्षेपक प्रभावी भाषा अछि। 'शासन की बन्दूक'मे हथियारक प्रभुत्व आ कोकिलाक मुक्त स्वरसँ बनल विरोध सत्ता-प्रदर्शनक दम्भक बीच जीवनक स्वतन्त्र लयकेँ प्रतिष्ठित करैत अछि। व्यंग्य एतए राजनीतिक असहमति मात्र नहि, शासकीय भाषाक विडम्बनाक उद्घाटन सेहो अछि।

व्यंग्यक सामाजिक प्रभाव आ ओकर काव्यगत गठनकेँ एक संग पढ़ब आवश्यक अछि। 'आओ रानी हम ढोयेंगे पालकी'क दोहराव, सार्वजनिक सम्बोधन आ श्रम-संकेत औपनिवेशिक शानक परम्पराकेँ स्वाधीन भारतक राजकीय प्रदर्शनसँ जोड़ि आलोचनात्मक अर्थ बनबैत अछि। नागार्जुनक नामोल्लेखी कविता सामूहिक श्रोताक स्मृतिमे उतरबाक सामर्थ्य रखैत अछि; मुदा ओकर हास्य, लय, तंज आ वाक्यरचनाक विश्लेषण राजनीतिक साहसक वर्णनसँ आगाँ जाएत। प्रसादक निबन्ध एहि विषयक उपयुक्त उदाहरण चुनैत अछि, तथापि शिल्पगत उपकरणक विस्तारसँ विवेचन एकरा आरो सघन बनबितैक।

२.३ पारिवारिक लगाव, निम्न प्राणी आ वस्तुजगत

एकटा महत्त्वपूर्ण उपलब्धि ई अछि जे आलोचक शासनक विरोध करनिहार कविक संग बाल-मुस्कान, पुत्र-स्नेह, भाभीक स्मृति आ ग्रामीण वातावरणक कविकेँ एक्के साँचे पढ़बाक प्रयास करैत छथि। 'वह दन्तुरित मुस्कान'पर हुनकर ध्यान ई बतबैत अछि जे जनकविक संवेदना निजी वात्सल्यक विरोधमे नहि। एहि संग 'पैने दाँतों वाली'मे मादा सूअर, 'अकाल और उसके बाद'मे कानी कुतिया, चूल्हा, चक्की आ कौआ उपस्थित होइत अछि। भूखक सामाजिक इतिहास एतए मनुष्यक शरीर धरि सीमित

नहि; घरेलू श्रमक उपकरण, पशु आ आँगन सभ मिलि अभावक साझा परिवेश बनबैत अछि।

एहि ठाम एकटा आलोचनात्मक सूक्ष्मता जोड़ब उचित अछि। 'चूल्हा रोया'क मानवीकरण केवल अलंकार नहि : ई घरक उत्पादन आ पुनरुत्पादनक साधनक असमर्थता चित्रित करैत अछि। 'कानी कुतिया'क उपस्थिति अन्नाभावक अवस्थामे मनुष्य आ पशुक साझी पराधीनता देखबैत अछि। मादा सूअरक वर्णन सामाजिक रूपसँ अवमूल्यित जीवकेँ राष्ट्रीय मातृत्वक प्रतिष्ठामे भागीदार बनबैत अछि; ई काव्यगत 'अप्रिय'क सौन्दर्यात्मक पुनर्मूल्यांकन थिक। मुदा एहन बिम्बकेँ केवल करुणा-विस्तार कहब पर्याप्त नहि; जातीय शुद्धि-अशुद्धि, 'माँ'क राष्ट्रवादी रूपक आ जीवजगतक गरिमाक अन्तर्विरोध सेहो जँचबाक विषय अछि।

२.४ नाद-सौन्दर्य आ काव्यरूपक बहुलता

'मेघ बजे'क नादमूलक आवृत्ति आ 'अमल धवल गिरि'क संस्कृतनिष्ठ, दृश्यप्रधान शब्द-योजना प्रसादक समक्ष नागार्जुनक काव्यभाषाक दू अलग सम्भावना खोलैत अछि। सहज लोकवाणी आ शास्त्रीय शब्दसम्पदाक बीच हुनकर संचरण केवल शब्दक विविधता नहि; विषयानुसार लय आ बिम्बक रूपान्तरण सेहो अछि। लोकजीवनक तीक्ष्ण संघर्ष लिखनिहार कवि जखन प्रकृतिक दृश्य आ ध्वनिक संगठन करैत छथि, तखन अर्थक उद्भव संवेदना आ कलारूपक संयुक्त प्रक्रियासँ होइत अछि। नागार्जुनक छन्दबद्ध आ छन्दमुक्त प्रयोगक सह-अस्तित्व एहि बहुविध अभिव्यक्तिकेँ पुष्ट करैत अछि।

निबन्धक एतए एक सीमा ई अछि जे उदाहरणक बाद 'अनुपम' वा 'अद्भुत' जेकाँ मूल्यवाचक पद अपेक्षाकृत बेसी अबैत अछि। किन्तु काव्यगत उत्कृष्टता देखाबय लेल बिम्बक क्रम, ध्वनिक पुनरावृत्ति, लोकसम्बोधनक सामाजिक प्रयोजन आ संस्कृतनिष्ठ शब्दावलीक अन्तर्लय खोलब आवश्यक अछि। काव्यक सामाजिक महत्त्व आ ओकर सौन्दर्य-गठनमे भेद नहि, पारस्परिक सम्बन्ध देखेबाक आवश्यकता अछि।

२.५ बहुभाषिकता : कविता-संसारक अनिवार्य, मुदा अल्पविस्तृत हिस्सा

प्रसाद मैथिली, हिन्दी, संस्कृत आ बंगला रचनाक बहुलता स्वीकारैत छथि, मुदा काव्यगत उदाहरणक केन्द्रमे हिन्दी अपेक्षाकृत अधिक अछि। फलतः 'यात्री'क मैथिली सृजन 'नागार्जुन'क हिन्दी कविता-संसारक परिशिष्ट बनि जेबाक सम्भावना उत्पन्न होइत अछि। 'चित्रा' आ 'पत्रहीन नग्न गाछ'क पृथक भाषिक रूप, लोकानुभव, बिम्ब आ सम्बोधन-प्रणाली पर विस्तृत चर्चा एहि समग्र काव्य-दृष्टिकेँ सन्तुलित करितैक। 'पत्रहीन नग्न गाछ'क साहित्य अकादेमी पुरस्कार-वर्ष सम्बन्धी संस्थागत विवरण सेहो एहि काव्यपरम्पराक साहित्येतिहासक एक उपयोगी सन्दर्भ अछि।

एहि प्रकार पहिल निबन्धक विशेष महत्त्व नागार्जुनक भीतर प्रतिरोध, आत्मीयता आ प्रकृति-सम्बन्धक सह-उपस्थितिकेँ देखबामे अछि। एहि समग्र छविक भितर कविताक विशेष स्वर, शिल्प आ ऐतिहासिक प्रसंगकेँ पृथक व्याख्यायित कएल जाए तखन प्रसादक 'प्रतिबद्ध–सम्बद्ध–आबद्ध' प्रस्ताव आलोचनात्मक पद्धतिक रूपमे आरो विकसित भऽ सकैत अछि।

३. 'नागार्जुन का हिन्दी और मैथिली उपन्यास साहित्य में योगदान' : समाज, भाषा आ कथाशिल्प

३.१ प्रेमचन्द-साम्यक अर्थ आ सीमा

दोसर निबन्ध नागार्जुनक द्विभाषिक कथा-यात्राकेँ प्रेमचन्दक उर्दू–हिन्दी साहित्यिक यात्राक समानान्तर रखैत अछि। एहि उपमाक केन्द्र भाषाबदल, ग्रामीण समाजक यथार्थ आ शोषित जीवनक कथात्मक प्रतिष्ठा अछि। मुदा प्रेमचन्द आ नागार्जुनक कथा-समाज ऐतिहासिक रूपसँ एक नहि : मिथिलाक कृषक-संघर्ष, जातिगत अनुशासन, स्त्री-जीवन आ स्थानीय बोलीक स्थिति नागार्जुनक उपन्यासमे विशिष्ट रूपेँ उपस्थित अछि। एतए तुलना साहित्यकारक प्रगतिशीलताक साधारण

क्रम-सूची नहि, वरन् भिन्न जीवन-सामग्री आ वर्णन-प्रक्रियाक विवेचना होएबाक चाही।

द्विभाषिक सृजनक कठिनाई पर प्रसाद नागार्जुनक आत्मवक्तव्यक सहारा लैत छथि। मैथिलीमे रचना करितो प्रकाशनक सीमित अवसर, साहित्यिक गोष्ठीमे हिन्दीभाषी श्रोताक लेल अनुवादक आवश्यकता आ व्यापक पाठकवर्ग धरि पहुँचबाक व्यावहारिक दबाव—ई सभ नागार्जुनक भाषिक अनुभवक भाग छल। 'मैथिली और हिन्दी' निबन्धमे हुनकर कथन मैथिलीकेँ स्वतन्त्र साहित्यिक भाषाक प्रतिष्ठा देबाक आग्रहसँ जुड़ल अछि। प्रसादक विवेचन एहि ठाम भाषा-चयनकेँ रचनात्मक स्वभावक प्रश्नसँ उठाकऽ संस्थागत असमानता आ साहित्यिक प्रसारक प्रश्न बनबैत अछि।

३.२ पाँच विषय-खण्डक उपयोगिता आ आलोचनात्मक सीमा

प्रसाद उपन्यास-संसारक विवेचन युगीन सन्दर्भ, सामाजिक जीवन, नारी-जीवन, आर्थिक जीवन आ राजनीतिक जीवन—एहि पाँच पक्षमे व्यवस्थित करैत छथि। एहि रूपरेखासँ 'रतिनाथ की चाची'क गौरी, 'बलचनमा'क कृषक-श्रम, 'वरुण के बेटे'क मछुआ-समाज, 'नई पौध'क विवाह-समस्या, 'दुखमोचन'क सामाजिक सुधार आ 'बाबा बटेसरनाथ'क सामुदायिक चेतनाकेँ परस्पर जोड़बाक सुविधा भेटैत अछि। वर्गीकरणक मूल्य एहि बातमे अछि जे ओ अनेक पात्र आ परिस्थितिकेँ एकटा व्यापक सामाजिक प्रश्नक भीतर पढ़बाक अवसर दैत अछि।

तथापि सामाजिक, आर्थिक आ राजनीतिक जीवन कथाक भीतर अलग-अलग खण्ड नहि होइत अछि। जमींदारीक दमन भूमि आ श्रमक सम्बन्धसँ चलैत अछि, मुदा जातीय पदानुक्रम आ राजकीय संरक्षण ओकरा टिकबैत अछि। स्त्रीक विवाहगत विवशता नैतिक रूढ़िक संग सम्पत्ति-अधिकार आ घरेलू श्रमक असमानतासँ सेहो जुड़ल अछि। एहि कारणेँ प्रसादक पाँच-खण्डीय योजना उपन्यासक विषयक मानचित्र तऽ दैत अछि, मुदा पात्र, कथानक आ शक्तिसम्बन्धक गतिशील गठनकेँ समझबाक लेल एकर खण्ड-सीमाकेँ लाँघब आवश्यक अछि।

३.३ वर्ग, जाति, श्रम आ स्थानिकता

'बलचनमा'मे जमींदारी अधिकार आ कृषकक दण्डभोगक प्रसंग, 'वरुण के बेटे'मे मछुआ-समुदायक सामूहिक संघर्ष आ 'बाबा बटेसरनाथ'मे ग्रामस्मृति तथा बरगदक रूपक—ई तीनू उदाहरण प्रसादक सामाजिक दृष्टिक सघनता स्पष्ट करैत अछि। मिथिलाक नदी, पोखरि, खेत, बाग आ ग्राम-समुदाय एतए केवल दृश्य-सज्जा नहि; जीविका, अधिकार, स्मृति आ प्रतिरोधक धरातल अछि। एहि आधारपर नागार्जुनक आञ्चलिकता केवल स्थानीय शब्द-प्रयोग नहि, वरन् संसाधन आ सामाजिक शक्तिक जीवन्त भूगोलक रूपमे उभरैत अछि।

एहि प्रसंगमे आलोचकक दृष्टि विशेष महत्त्व रखैत अछि जे ओ सामाजिक आ धार्मिक आडम्बरकेँ कथानकक मार्मिक प्रसंगसँ जोड़ैत छथि। तथापि उपन्यासक आन्तरिक वक्ता, कथाक काल-व्यवस्था, वर्गीय शब्दावलीक निर्माण, कथोपकथनक बोलीभेद आ पात्रक राजनीतिक चेतनाक क्रमिक विकासपर विचार अपेक्षाकृत अल्प अछि। 'समाजक चित्रण' आ 'उपन्यासक औपन्यासिक गठन' एक्के बात नहि : कोन अनुभव कथामे केकर दृष्टिसँ कहल जाइत अछि, एहि प्रश्नक उत्तर सामाजिक अर्थक गुणात्मकता तय करैत अछि।

३.४ स्त्री-पात्र : करुणा सँ कर्तृत्वधरि

गौरी, पार्वती, मधुरी, उगनी आ चम्पा जेकाँ स्त्री-पात्रक उल्लेख करैत प्रसाद नारी-जीवनक दुःख, सामाजिक असुरक्षा आ असमान विवाहक प्रश्न सोझाँ अनैत छथि। 'रतिनाथ की चाची'क गौरीपर सामुदायिक नैतिक अभियोग आ 'पारो'क वैवाहिक विषमता स्त्री-देहपर समाजक अनुशासनकेँ प्रकट करैत अछि। लेखकक सहानुभूति शोषित स्त्रीक पक्षमे अछि; तथापि हुनकर व्याख्यामे 'करुणा' आ 'नारी-उद्धार'क पद अधिक प्रमुख अछि। कथा-विश्लेषणक अगिला चरणमे स्त्रीक अपन निर्णय, श्रम, इच्छा, प्रतिवाद आ कथात्मक स्वरकेँ सेहो केन्द्रमे रखबाक आवश्यकता अछि।

कथाकार स्त्रीक अनुभूतिकेँ केकर आवाजमे व्यक्त करैत छथि, ओकर मौनकेँ कथामे कोना अर्थ भेटैत अछि, आ पुरुष पात्रक नैतिक निर्णय ओहि आवाजकेँ कोन सीमा दैत अछि—एहि प्रश्नसँ नारी-पात्रक अध्ययन अधिक सूक्ष्म होइत। सुधारवादी सहानुभूति आ स्त्रीक वास्तविक कर्तृत्वक बीच अन्तर पहिचानब प्रसादक चयनित उदाहरणक सामाजिक अर्थकेँ कमजोर नहि, वरन् अधिक गहन बनबैत अछि।

३.५ मैथिली पाठ, मूल-भाषा आ 'बलचनमा'क विवाद

मैथिली कथा-साहित्यक चर्चा दोसर निबन्धक विशेष आलोचनात्मक आकर्षण अछि। प्रसाद 'पारो', 'नवतुरिया' आ 'बलचनमा'क उल्लेख करैत, मैथिली भाषा-शिल्पक उदाहरण दैत आ दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क आलोचनात्मक मतसँ असहमति प्रकट करैत छथि। 'नवतुरिया'क सामाजिक प्रासंगिकता आ 'बलचनमा'क स्थानीय भाषिकता पर हुनकर प्रतिवाद मैथिली आलोचनामे चलैत बहसक एक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि। मुदा कृतिक मूल लेखन-भाषा, मुद्रित संस्करण आ अनुवादक क्रम अलग-अलग ऐतिहासिक प्रश्न थिक, जकर समाधान एक्के अनुमानसँ नहि होइत।

कीर्त्तिनारायण मिश्र 'बलचनमा'क हिन्दी आ मैथिली मुद्रणक अलग-अलग वर्षक उल्लेख करैत छथि; दोसर दिस नागार्जुन अपन 'मैथिली और हिन्दी' निबन्धमे एकरा मूलतः मैथिलीमे लिखल बतबैत छथि। लेखकक आत्मवक्तव्य आ प्रकाशित संस्करणक क्रम, दूनू महत्त्वपूर्ण साक्ष्य अछि। पहिल मुद्रणक भाषा अपने-आप पहिल रचनाक भाषा नहि होइत; तहिना लेखकक वक्तव्यसँ प्रत्येक संस्करणक सम्पूर्ण पाठान्तर सिद्ध नहि भऽ जाइत। प्रसादक उठाओल प्रश्नक समुचित आलोचनात्मक विस्तार मूल संस्करण सभक तुलनात्मक पाठसँ सम्भव अछि।

प्रसादक अनुसार 'नवतुरिया'क उठाओल सामाजिक प्रश्न एकटा बीतल समय धरि सीमित नहि। एतए हुनकर तर्कक शक्ति सामाजिक व्यवस्था आ स्त्री-जीवनमे निरन्तरताक पहिचान अछि। मुदा कोनो समस्याक दीर्घजीविताकेँ ओकर रूपक अपरिवर्तित रहब नहि बुझबाक चाही। विवाह, पितृसत्ता आ स्त्री-असमानताक

परिवर्तित संरचनाकेँ ध्यानमे रखि कृति पढ़ल जाए तऽ ओकर ऐतिहासिकता आ वर्तमान प्रासंगिकता दूनू बचल रहैत अछि।

मैथिली आ हिन्दी संस्करणक आपसी सम्बन्धकेँ बुझबाक लेल स्थानीय शब्द-रूप, लोकवाचिक वाक्य-लय, कथावाचकक बोली, पात्रक संवाद आ भिन्न पाठकवर्गमे कथाक ग्रहणपर विचार आवश्यक अछि। एहि आधारपर कोनो संस्करणमे आञ्चलिक स्वर घटल कि बदलल, रचना अनुवाद भेल कि लेखकीय पुनर्लेखन—एहि प्रश्नक ठोस उत्तर भेटि सकैत अछि। प्रसादक भाषिक सचेतना एहि तुलनात्मक आलोचनाक दिशा सुझबैत अछि।

३.६ यथार्थ, विचारधारा आ उपन्यास-रूप

सामाजिक न्यायक चिन्ता उपन्यासक मूल तत्त्व होइतो प्रत्येक रचना अपन अलग कथन-विधान बनबैत अछि। 'बाबा बटेसरनाथ'क बोलैत बरगद, 'बलचनमा'क आत्मकथात्मक निकटता, 'नई पौध'मे विवाहक सामाजिक संरचना आ 'वरुण के बेटे'मे सामूहिक संघर्षक प्रस्तुति—ई सभ अलग-अलग औपन्यासिक युक्ति अछि। पात्रक दृष्टिस्थान, कथनक समय, स्मृति आ संवादक लय पर ध्यान देलासँ सामाजिक यथार्थक कलात्मक संगठन अधिक सुस्पष्ट होएत।

दोसर निबन्धक मूल उपलब्धि हिन्दी उपन्यासक समीक्षामे मैथिली अनुभवक केन्द्रीयता स्थापित करब अछि। मिथिलाक ग्राम-जीवन, सामाजिक दमन आ लोकभाषिक चेतना एतए हिन्दी आ मैथिली—दूनू साहित्यक अन्तःसम्बन्ध बनबैत अछि। काव्य आ उपन्यासक समान सामाजिक प्रतिबद्धताक बावजूद कथा-विधाक स्वतन्त्र शिल्प-पद्धति पहिचानब एहि मूल्यांकनक आवश्यक विस्तार होएत।

४. 'व्यष्टि से समष्टि के रचनाकार अनूप लाल मण्डल' : उपन्यास, आदर्श आ त्रासद संवेदना

४.१ जीवनवृत्त सँ मूल्य-निर्णयधरि

अनूप लाल मण्डल-विषयक निबन्ध साहित्यकारक जन्मभूमि-प्रेम, नैतिक दृढ़ता आ स्वतन्त्रता-आन्दोलनमे सहभागितासँ आरम्भ होइत अछि। चन्द्रनारायण सिंहक साक्षात्कार-सन्दर्भक माध्यमसँ प्रसाद मण्डलक कोसी-भूमिक प्रति आत्मीय लगाव रेखांकित करैत छथि। स्वतन्त्रता-सेनानी पेंशन लेल आवेदन नहि देबाक प्रसंग व्यक्तित्वक निस्वार्थ आदर्शक उदाहरण बनैत अछि। एहि जीवनीगत परिचयक महत्त्व लेखकक मूल्य-संसार समझबामे अछि; मुदा उपन्यासक कलात्मकता पर निर्णय लेल कथानक, पात्र आ कथन-प्रणालीक स्वतन्त्र विवेचन सेहो चाही।

'व्यष्टि सँ समष्टि'क गति निज नैतिक निष्ठासँ व्यापक लोकमंगल धरि विस्तारक संकेत दैत अछि। किन्तु सुधारवादी उपन्यासक एक गम्भीर प्रश्न ई अछि जे कथा-संसारमे त्यागक महिमा व्यक्ति-इच्छाक स्वतन्त्रता बढ़बैत अछि वा ओकरा नियन्त्रित करैत अछि। मण्डलक आदर्शवादी पात्रक सामाजिक प्रतिबद्धता, स्त्री-पात्रक कर्तृत्व आ अन्ततः पीड़ा अथवा मृत्यु द्वारा कथा-समापनक प्रवृत्ति एहि द्वन्द्वकेँ खोलैत अछि।

४.२ कृतिसंसारक परास आ साहित्येतिहासक महत्त्व

प्रसाद मण्डलक उपन्यासक विस्तृत सूची देइत छथि, जाहिमे मौलिक हिन्दी उपन्यास, अनूदित रचना, अंगिका उपन्यास आ अप्रकाशित कृतिक उल्लेख अछि। 'निर्वासिता', 'समाज की वेदी पर', 'साकी', 'ज्योतिर्मयी', 'रूप-रेखा', 'सविता', 'मीमांसा', 'वे अभागे', 'दस बीघा जमीन', 'ज्वाला', 'आवारों की दुनिया', 'दर्द की तस्वीरें', 'बुझने न पाय', 'रक्त और रंग', 'अभियान का पथ', 'केन्द्र और परिधि', 'तूफान और तिनके' आ 'उत्तर-पुरुष'क संग ओ विस्तृत रचनायात्राकेँ सामने अनैत

छथि। विस्मृतप्राय लेखकक कृतिसंसारकेँ एक ठाम उपलब्ध करेनाइ निबन्धक साहित्येतिहासिक महत्त्व अछि।

एहि सूचीसँ सम्बन्धित किछु प्रकाशन-वर्ष अन्य स्रोतसँ भिन्न भेटैत अछि। 'निर्वासिता'क प्रथम संस्करण आ अंगिका कृति 'नया सूरज–नया चान'क प्रकाशन-समयक उल्लेखमे एहन अन्तर स्पष्ट अछि। ई मतभेद मण्डलक साहित्यिक योगदानकेँ छोट नहि करैत, वरन् प्रारम्भिक संस्करण, प्रकाशन-परम्परा आ आञ्चलिक भाषा-साहित्यक अभिलेखीकरणक महत्त्व रेखांकित करैत अछि। निश्चित वर्षक निर्णय लेल प्रकाशकीय प्रमाण आवश्यक अछि; ताधरि प्रसादक विवरणकेँ हुनकर प्रस्तुत कृतिसूचीक रूपमे ग्रहण करब समीचीन होएत।

कृतिसूचीक महत्त्व केवल शीर्षक-गणनामे नहि, वरन् एहन रचनासँ समाजक भिन्न स्तर पर पहुँचबाक इतिहासमे अछि। मौलिक उपन्यास, अनुवाद, अंगिका रचना आ अप्रकाशित कृतिकेँ पृथक साहित्यिक परम्पराक अंश मानल जाए तखन मण्डलक सृजनमे भाषा-परिवर्तन आ पाठकवर्गक प्रसारक अलग अर्थ उभरैत अछि। प्रसादक सूची एहि व्यापक अनुसन्धानक आधार उपस्थित करैत अछि।

४.३ विषयक वर्गीकरण आ कथाशिल्पक प्रश्न

मण्डलक उपन्यासकेँ प्रसाद सामाजिक, यथार्थवादी, राष्ट्रीय आन्दोलन-सम्बद्ध आ मनोवैज्ञानिक—चारि कोटिमे वर्गीकृत करैत छथि। 'साकी'क सामाजिक आ मनोवैज्ञानिक दुनू क्रममे उपस्थित रहब बतबैत अछि जे उपन्यासक जीवन-विषय प्रायः परस्पर व्याप्त होइत अछि। मनोवैज्ञानिक संघर्ष सामाजिक अनुशासनसँ अलग नहि; राष्ट्रीय चेतना सेहो पात्रक निजी आकांक्षासँ टकराइत रहैत अछि। कठोर कोटिक अपेक्षा मुख्य प्रवृत्ति आ सहप्रवृत्तिक अध्ययन कथाक रूपात्मक विविधता बेहतर खोलैत अछि।

शिल्प सम्बन्धी प्रसादक विवेचनमे 'समाज की वेदी पर' आ 'दर्द की तस्वीरें'क पत्रात्मक विन्यास, 'ज्योतिर्मयी'क डायरी-रूप तथा 'सविता', 'मीमांसा', 'रक्त और

रंग' आ 'केन्द्र और परिधि'क मनोवैज्ञानिक आयाम चिह्नित अछि। चिट्ठीक मार्फत कथा कहल गेलापर पात्र अपन अनुभव चुनि कऽ प्रस्तुत करैत अछि; पत्रक बीचक अन्तराल पाठककेँ अनकहल स्थितिक अनुमान करबाक अवसर दैत अछि। डायरीमे तत्काल अनुभूति आ बादक आत्ममूल्यांकनक भेद महत्त्वपूर्ण होइत अछि। प्रसाद शिल्पक एहि सम्भावनाकेँ पहिचानैत छथि, मुदा विशिष्ट कथा-दृश्यक सूक्ष्म विश्लेषण निबन्धकेँ आरो प्रभावी बनबितैक।

४.४ स्त्री-पात्र, प्रेम आ नैतिक आदर्शवाद

अनूप लाल मण्डलक कथा-जगतक मूल्यांकनमे प्रसादक एक उल्लेखनीय आत्मालोचनात्मक क्षण भेटैत अछि। प्रेम, कर्तव्य, समाजसेवा आ त्यागक आदर्शक संग हुनकर अनेक पात्रक जीवन दुःखान्त दिशामे बढ़ैत अछि। कोनो पात्र विवाहक अभिलाषा त्यागैत अछि, कोनो हिंसक दमनक शिकार होइत अछि, आ कोनो पात्रक प्रेम पूर्णता नहि पबैत अछि। प्रसाद एहि आवृत्तिकेँ उदात्त आदर्शवादक संकेत मानितो उपन्यासक एक कलात्मक दुर्बलताक रूपमे देखैत छथि। विशेषतः अप्रत्याशित त्रासद अन्त जखन पात्रक स्वाभाविक विकासकेँ दबा दैत अछि, तखन करुणा कथानकक स्वतन्त्रता पर हावी भऽ सकैत अछि।

एहि बिन्दुपर स्त्री-पात्रक दृष्टिसँ प्रश्न आरो तीक्ष्ण होइत अछि। उपन्यासमे स्त्रीक प्रेम, विवाह आ सार्वजनिक कर्मक निर्णय केतबा ओकर अपन अछि आ केतबा पुरुष पात्रक नैतिक आदर्शक अधीन? गीताश्री 'समाज की वेदी पर'क चर्चा करैत पत्रात्मक विन्यास आ सामाजिक बहिष्कारसँ जूझैत स्त्री-पात्रक गरिमा पर बल दैत छथि। प्रसादक दयामय दृष्टि आ एहि स्त्रीकेन्द्रित पठनकेँ साथ रखलासँ सुधारवादी भावुकता, सामाजिक प्रतिरोध आ स्त्रीक स्वायत्तताक बीच महत्त्वपूर्ण अन्तर देखल जा सकैत अछि।

मण्डलक पात्रक दुःखान्त-गति पर प्रश्न उठेबाक अर्थ हुनकर सामाजिक आदर्शकेँ खारिज करब नहि। प्रश्न ई अछि जे त्रासद अन्त कथानकमे अनिवार्य रूपसँ विकसित

होइत अछि कि आदर्शक महिमा बढ़ेबाक लेल बाहरसँ आरोपित लगैत अछि। नैतिकता जखन पात्रक जीवनानुभवसँ उपजैत अछि तखन काव्यात्मक सत्य ग्रहण करैत अछि; जखन ओ कथानकक विकल्प बन्द करैत अछि तखन उपदेशक रूप लऽ सकैत अछि। प्रसादक आलोचना एहि सूक्ष्म भेदक दिशा खोलैत अछि।

४.५ कोसीक सामाजिक धरातल आ व्यापक मानवीयता

प्रसाद मण्डलक साहित्यिक संवेदनाकेँ कोसी-अंचलक अनुभवसँ उठि व्यापक मानवीय प्रश्न धरि पहुँचैत देखैत छथि। हुनकर प्रस्तुत कथा-विषयमे जमींदारी शोषण, स्त्रीक सामाजिक असुरक्षा, प्रेमक बाधा आ राष्ट्रीय आन्दोलनक टकराव एक-दोसरासँ जुड़ैत अछि। तथापि 'सार्वदेशिक' मानवीयताक मूल्य तखने विशिष्ट बनैत अछि जखन कोसीक भूमि-सम्बन्ध, ग्रामीण श्रम, नदीक भौगोलिक परिवेश आ सामाजिक अनुशासनक ठोस स्थानीयता निस्तेज नहि कएल जाए। मण्डलक कथासंसारक व्यापकता ओकर अंचलनिष्ठ अनुभवकेँ बचबिते सम्भव अछि।

'तूफान और तिनके'क सम्बन्धमे प्रकाशित अन्य आलोचनामे किसान-संघर्षक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आ नक्षत्र मालाकारक प्रसंग चर्चामे अबैत अछि। एहि उल्लेखसँ मण्डलक उपन्यासकेँ करुणा वा वैयक्तिक बलिदानक कथा मात्र नहि, कृषक आ सामाजिक आन्दोलनक सन्दर्भमे सेहो पढ़बाक सम्भावना देखाइत अछि। मण्डलक व्यापक साहित्यक पुनर्मूल्यांकनमे एहि तरहक राजनीतिक इतिहास आ कथात्मक संरचनाक सम्बन्ध विशेष महत्त्व रखत।

प्रसाद निबन्धक अन्तमे मण्डलक दुर्लभ रचनाक पुनर्प्रकाशनक आवश्यकता व्यक्त करैत छथि। ई आग्रह श्रद्धांजलि भरि नहि, साहित्यिक विवेचनक ठोस शर्त अछि : कृति उपलब्ध भेलापर कथावाचक, पात्र, भाषिक रूप, संस्करणान्तर आ समकालीन ग्रहणक जाँच सम्भव होइत अछि। मण्डलक रचनाक नब पाठकवर्ग तैयार करबाक लेल प्रामाणिक सम्पादन आ आलोचनात्मक पुनर्पाठ एक-दोसराक पूरक होएत।

५. तीनू आलोचनात्मक निबन्ध : साझा सरोकार आ विधागत अन्तर

५.१ जनवादी प्रतिरोध आ सुधारवादी आदर्श

नागार्जुनक कविता सम्बन्धी निबन्ध मुखर सार्वजनिक प्रतिरोधक स्वर पहिचानैत अछि; हुनकर उपन्यास सम्बन्धी निबन्ध ओहि जनचिन्ताकेँ ग्रामीण जीवनक संघर्ष आ पात्रक सामाजिक यथार्थमे खोजैत अछि; मण्डल सम्बन्धी निबन्ध व्यक्ति-आदर्शसँ समाजहित धरि नीतिमूलक विस्तार देखैत अछि। तीनू निबन्धमे 'जन'क प्रतिष्ठा साझा अछि, मुदा जनक भूमिका बदलैत अछि : कवितामे जन प्रतिरोधी श्रोता-सहभागी अछि, नागार्जुनक उपन्यासमे संघर्षरत कृषक, स्त्री आ ग्रामसमुदाय, आ मण्डलक कृतिमे नैतिक-सामाजिक सुधारक लक्ष्य आ कखनो सक्रिय सहभागी। एहि अन्तरक बोधक बिना 'जनपक्षधरता' शब्द अपन आलोचनात्मक धार खो दैत अछि।

नागार्जुनक कृतिमे सामूहिक प्रतिरोधक प्रवृत्ति आ मण्डलक उपन्यासमे त्यागप्रधान नायकक नैतिक ऊँचाईक तुलना साहित्यिक विचारधाराक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठबैत अछि। एक दिशामे शोषणकारी संरचनाकेँ बदलबाक आग्रह, दोसर दिशामे व्यक्तिक आदर्शसँ समाजक चेतना बदलबाक विश्वास। दुनूकेँ कठोर विरोधी ध्रुव मानब अनुचित होएत, मुदा प्रसादक निबन्ध सभक चयनित उदाहरण एहि दोहरी प्रवृत्तिक आलोचनात्मक मानचित्र अवश्य दैत अछि।

५.२ आलोचनात्मक स्वर : सहानुभूति आ विवेकक सन्तुलन

तीनू निबन्धमे प्रसादक भाषा साहित्यकारक सामाजिक निष्ठाक प्रति गहिर आदरसँ भरल अछि। ई नैतिक संलग्नता आलोचनाक कमजोरी अपने-आप नहि; ओ लेखककेँ उपेक्षित जन, स्त्री आ अंचलीय जीवनक प्रश्न देखबाक दृष्टि दैत अछि। मुदा 'अपूर्व' आ 'अनुपम' जेकाँ मूल्यनिर्णायक विशेषणक प्रभाव तखने प्रामाणिक होइत अछि जखन ओकर संग बिम्ब, कथानक, चरित्र, कथावाचक अथवा भाषा-संरचनाक

विशिष्ट कारण स्पष्ट हो। प्रशंसाक ताप आ विवेचनक सूक्ष्मताक सन्तुलन एहि संग्रहक सबसँ महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक कसौटी अछि।

मण्डल सम्बन्धी निबन्धमे दुःखान्त-प्रधान रचनाविधानक सीमा स्वीकरैत प्रसाद अपन नैतिक सहानुभूति पर आलोचनात्मक नियन्त्रण देखबैत छथि। एहने संयम नागार्जुनक राजनीतिक कविताक तत्कालीनता, द्विभाषिक रचनाक संस्करणान्तर आ उपन्यासक कथनगत विषमताक विवेचनमे विस्तार पबैत तखन तीनू आलोचनात्मक लेख अधिक समान गम्भीरता प्राप्त करैत।

५.३ मैथिली, हिन्दी आ अंगिका : एकरूपता नहि, संवाद

मैथिली–हिन्दी सृजनकेँ केवल दू भाषामे लिखबाक लेखकीय क्षमता मानब अपर्याप्त अछि। भाषा-कथा पाठकवर्ग, प्रकाशित संस्करण, अनुवाद, प्रतिष्ठा, पुरस्कार आ साहित्यिक संस्थाक आपसी सम्बन्धसँ बनैत अछि। नागार्जुनक 'यात्री' रूपक स्वतन्त्र मैथिली काव्यपरम्परा अछि, जे हिन्दी आलोचनामे विलीन भऽ जएबाक नहि चाही। मण्डलक अंगिका रचनाक उल्लेख सेहो सिद्ध करैत अछि जे एहि क्षेत्रक बहुभाषिक साहित्यिक भूगोल हिन्दी आ मैथिली धरि सीमित नहि। 'क्षितिज' एहि संवादकेँ खोलैत अछि, यद्यपि प्रत्येक भाषाक अलग साहित्यिक संरचनापर आरो ध्यान अपेक्षित अछि। ... 81

५.४ आलोचनाक प्रमाण आ साहित्येतिहासक विवेक

साहित्यिक व्याख्याक स्वतन्त्रता आ तथ्यक शुद्धताक बीच विरोध नहि अछि। प्रसादक उद्धृत कविता, उपन्यासक उदाहरण आ जीवनी-वृत्त अपन-अपन आलोचनात्मक उपयोगिता रखैत अछि; मुदा साहित्यकारक आत्मवक्तव्य, पुरस्कार-संस्थाक विवरण, पुस्तकक प्रकाशकीय परिचय आ बादक आलोचकक मत एकहि प्रकारक प्रमाण नहि। एहि भेदक बोधसँ नागार्जुनक साहित्यिक द्विभाषिकता आ

मण्डलक विस्तृत कृतिसूची पर उठल विवादकँ अधिक सन्तुलित ढंगसँ बुझल जा सकैत अछि।

६. काव्य-इतिहास आ कृतिसूचीक प्रसंग : विवेचनक आवश्यक सावधानी

'पत्रहीन नग्न गाछ'क साहित्य अकादेमी पुरस्कार सम्बन्धमे संस्थागत सूची वर्ष १९६८ अंकित करैत अछि, जखन कि किछु परिचयात्मक सामग्रीमे १९६९ भेटैत अछि। एहि मतभेदक महत्त्व काव्य-मूल्य निर्धारणमे नहि, साहित्येतिहासक यथार्थ लेखनमे अछि। पुरस्कार-वर्ष निश्चित करबाक समय सम्बन्धित संस्थाक सूची प्राथमिक आधार होएबाक चाही; बादक परिचयक अलग विवरणकेँ बिना व्याख्या जोड़ि देब भ्रम पैदा करैत अछि।

'बलचनमा'क सम्बन्धमे मूल रचनाभाषा आ उपलब्ध संस्करणक कालक्रम अलग मुद्दा अछि। प्रसाद मैथिली उपन्यास-संसारक चर्चा करैत छथि; कीर्त्तिनारायण मिश्र मुद्रणक क्रम देइत छथि; नागार्जुन अपन वक्तव्यमे मैथिलीमे मूल लेखनक उल्लेख करैत छथि। आलोचनाक हित एहि साक्ष्यक अन्तर स्वीकार करबमे अछि। ई विवाद रचनाक सामाजिक महत्त्व नहि घटबैत; वरन् मैथिली–हिन्दी साहित्यिक आवागमनक जटिल इतिहास देखबैत अछि।

अनूप लाल मण्डलक 'निर्वासिता' आ अंगिका उपन्यासक प्रकाशन-वर्ष सम्बन्धी विवरणमे सेहो भिन्न सूचना उपलब्ध अछि। एहि मतभेदकँ निश्चित निर्णयक रूप देबाक सट्टा प्रसादक कृतिसूचीकेँ एक महत्त्वपूर्ण आरम्भिक साहित्येतिहासिक साक्ष्य मानब अधिक न्यायसंगत अछि। लेखकक पहिल संस्करण आ विश्वसनीय ग्रन्थालय-सूचीपर आधारित अनुसन्धानसँ ई अभिलेखीय प्रश्न स्पष्ट होएत।

७. निष्कर्ष : जनचिन्तासँ काव्यशास्त्रीय विवेचनधरि

'क्षितिज'क चयनित तीन निबन्धक समग्र समीक्षासँ स्पष्ट होइत अछि जे डॉ. शिव कुमार प्रसाद साहित्यक सामाजिक प्रतिबद्धताकेँ आलोचनाक नैतिक आधार मानैत छथि। नागार्जुनक कवितामे ओ सत्ताविरोध आ आत्मीय मानवीयताक संयुक्त रूप देखैत छथि; हिन्दी–मैथिली उपन्यासमे ग्रामीण संघर्ष, स्त्री-पीड़ा आ सामाजिक परिवर्तनक प्रश्न खोजैत छथि; अनूप लाल मण्डलमे आदर्शवादी व्यक्ति आ व्यापक समाजक सम्बन्धक व्याख्या करैत छथि। ई तीनू निबन्ध जनसम्बद्ध साहित्यक विविध अभिव्यक्तिकेँ एकहि संग्रहमे समीक्षात्मक संवादक अवसर दैत अछि। ... 81

पहिल निबन्धक 'प्रतिबद्ध–सम्बद्ध–आबद्ध' सूत्र समग्र काव्य-पठनक सार्थक प्रवेशद्वार अछि; ओकर विस्तार ध्वनि, बिम्ब, समय-सन्दर्भ आ मैथिली काव्यभाषाक अधिक सूक्ष्म विवेचनमे अछि। दोसर निबन्ध मिथिलाक ग्रामीण जीवनक अनुभवकेँ हिन्दी आ मैथिली कथासाहित्यक अन्तःसम्बन्धमे राखैत अछि, मुदा कथावाचकक गठन, जाति–वर्ग–लिंगक परस्परता आ रचनाभाषाक ऐतिहासिक जटिलता पर आरो गहिर विचार चाही। छठम निबन्धक महत्त्व मण्डलक विस्मृतप्राय कृतिसंसारक परिचय आ आदर्शवादी दुःखान्तक कलात्मक सीमा पहिचानबमे अछि।

एहि कारणेँ तीनू निबन्धक मूल्य केवल निर्णयक अन्तिमतामे नहि, वरन् बहसकेँ जन्म देबाक सामर्थ्यमे अछि। प्रसादक जनपक्षधर आ सहानुभूतिशील आलोचना मैथिली, हिन्दी आ अंगिका साहित्यक साझा सामाजिक भूमिकेँ दृश्य करैत अछि। एकर आन्तरिक सम्भावना तखन अधिक विकसित होएत जखन पुस्तकक प्रस्तुत दृष्टि स्वयं पाठ, शिल्प आ भाषिक इतिहासक सघन विश्लेषणसँ जोड़ल जाए। आलोचनाक ई यात्रा प्रशंसाक निषेध नहि, प्रशंसाकेँ ठोस साहित्यिक प्रमाण आ कलात्मक विवेकसँ समृद्ध करबाक यात्रा थिक।

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

प्राथमिक अध्ययन-पाठ

प्रसाद, शिव कुमार। 'क्षितिज' : हिन्दी आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह। द्वितीय संस्करण। निर्मली, सुपौल : पल्लवी प्रकाशन, २०२१। ISBN 978-81-951070-0-1। ... 81

लेखक-पाठ आ संस्थागत ग्रन्थसूची

नागार्जुन। 'मैथिली और हिन्दी'। गद्य कोश (उपलब्ध मूल लेखक-निबन्ध)। https://gadyakosh.org/gk/मैथिली_और_हिन्दी_/_नागार्जुन । अवलोकन : १७ नवम्बर २०२६।

साहित्य अकादेमी। 'Akademi Awards' : मैथिली पुरस्कार-सूची (१९६८ : Patrahin Nagna Gachh, Yatri)। https://www.sahitya-akademi.gov.in/awards/akademi%20samman_suchi.jsp । अवलोकन : १७ नवम्बर २०२६।

National Institute of Informatics, Japan। 'पत्रहीन नग्न गाछ' : CiNii Books bibliographic record, NCID BA42595214; सम्भावना प्रकाशन, १९८१ संस्करणक विवरण। https://ci.nii.ac.jp/ncid/BA42595214?l=en । अवलोकन : १७ नवम्बर २०२६।

आलोचनात्मक आ जीवनपरक सामग्री

मिश्र, कीर्त्तिनारायण। 'नागार्जुन का मैथिली कथा-साहित्य'। गद्य कोश। https://gadyakosh.org/gk/नागार्जुन_का_मैथिली_कथा-साहित्य_(कीर्त्तिनारायण_मिश्र)_/_नागार्जुन । अवलोकन : १७ नवम्बर २०२६।

'नागार्जुन की कविताओं का पाठ-विश्लेषण'। INFLIBNET, e-PG Pathshala, आधुनिक काव्य–२, ऑनलाइन पाठ। https://ebooks.inflibnet.ac.in/hinp03/chapter/नागार्जुन-की-कविताओं-का-पाठ-विश्लेषण/ । अवलोकन : १७ नवम्बर २०२६।

‘नागार्जुन : बादल को घिरते देखा है’। NCERT हिन्दी पाठकक ऑनलाइन पुनर्प्रस्तुति, Philoid। https://philoid.com/index.php/ncert/chapter/khat117 । अवलोकन : १७ नवम्बर २०२६।

गीताश्री। ‘स्त्री का मन के चितेरे थे अनूपलाल मंडल : “समाज की वेदी पर” उपन्यास के बहाने’। नुक्कड़ (ऑनलाइन आलोचनात्मक लेख)। https://hamaranukkad.blogspot.com/ । अवलोकन : १७ नवम्बर २०२६।

पॉल, सदानन्द। ‘हिंदी उपन्यासकार अनूपलाल मंडल और उनकी औपन्यासिक यात्रा’। साहित्य कुंज, अंक १८८, सितम्बर प्रथम, २०२१। https://sahityakunj.net/entries/view/hindi-upnyaskar-anuplal-mandal-aur-unki-aupnyasik-yatra । अवलोकन : १७ नवम्बर २०२६।

‘अनूप लाल मंडल’। अंगिका साहित्यकार कोश, १० दिसम्बर २०१४। https://sahityakar.angika.com/2020/07/angika-sahityakar-Anup%20Lal%20Mandal.html । अवलोकन : १७ नवम्बर २०२६।

‘अनूप लाल मंडल’। अंगदेश, साहित्यकार-परिचय। https://angdesh.com/anup-lal-mandal/ । अवलोकन : १७ नवम्बर २०२६।

नित नवल

शिव कुमार प्रसाद

१ २ ३ ४ ५

डॉ. शिव कुमार प्रसादक तीन कविता-संग्रह ‘मनक हाट’, ‘सोंहाँत-अनसोंहाँत’ आ ‘राग-विराग’, मैथिली काव्यानुवाद ‘पघलैत हिमखंड’ आ आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह ‘क्षितिज’क विस्तृत साहित्यिक समीक्षा। एहि पोथीमे अन्हार–इजोत, गाम–नगर, बाढ़ि, श्रम, मातृभाषा, स्त्री-चेतना आ लोकजीवनक स्वर पढ़ल गेल अछि; संगहि प्रत्येक कृतिक उपलब्धि आ सीमा दुनूकेँ पाठक-केन्द्रित, सन्तुलित दृष्टिएँ परखल गेल अछि।

पाँच समीक्षा-निबन्ध

१ मनक हाट
आत्मानुभूति, लोकचेतना आ समकालीन मैथिली कविता

२ सोंहाँत-अनसोंहाँत
जीवनक काव्य-संसार

३ राग-विराग
लोकस्मृति, भाषिक अस्मिता आ सामाजिक नैतिकता

४ पघलैत हिमखंड
हिन्दी-मैथिली काव्यानुवाद आ स्त्री-चेतना

५ क्षितिज
जनकाव्य, द्विभाषिक उपन्यास आ समष्टिक आदर्श

विदेह वेबसाइट
www.videha.co.in

विदेह ई-जर्नल
videha-ejournal.github.io/videha

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | २०२७